ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक
गुरमति ज्ञान

सावन-भादों, संवत् नानकशाही ५४४
वर्ष ५ अंक १२ अगस्त 2012

संपादक : सिमरजीत सिंघ *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60, फैक्स: 0183-2553919

एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

तिसु गुर कउ सिमरउ सासि सासि ॥ गुरु मेरे प्राण सतिगुरु मेरी रासि ॥१॥रहाउ॥
गुर का दरसनु देखि देखि जीवा ॥ गुर के चरण धोइ धोइ पीवा ॥१॥
गुर की रेणु नित मजनु करउ ॥ जनम जनम की हउमै मलु हरउ ॥२॥
तिसु गुर कउ झूलावउ पाखा ॥ महा अगनि ते हाथु दे राखा ॥३॥
तिसु गुर कै ग्रिहि ढोवउ पाणी ॥ जिसु गुर ते अकल गति जाणी ॥४॥
तिसु गुर कै ग्रिहि पीसउ नीत ॥ जिसु परसादि वैरी सभ मीत ॥५॥
जिनि गुरि मो कउ दीना जीउ ॥ आपुना दासरा आपे मुलि लीउ ॥६॥
आपे लाइओ अपना पिआरु ॥ सदा सदा तिसु गुर कउ करी नमसकारु ॥७॥
कलि कलेस भै भ्रम दुख लाथा ॥ कहु नानक मेरा गुरु समराथा ॥८॥ *(पन्ना २३९)*

श्री गुरु अरजन देव जी गउड़ी राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में गुरु की महिमा का बखान करते हुए फरमान करते हैं कि जो गुरु मेरे जीवन का सहारा है, मेरे आत्मिक जीवन की पूंजी है, उस गुरु का मैं श्वास-श्वास सिमरन करता हूं। मैं गुरु का दर्शन करके ही (आत्मिक रूप से) जिंदा हूं। ऐसे गुरु के चरण धोने से मुझे आत्मिक जीवन देने वाला नाम-जल मिलता है। गुरु के चरणों की धूल से मैं स्नान करता हूं अर्थात् गुरु-चरणों की धूल मैं अपने तन पर लगाता हूं, जिससे मैं अनेक जन्मों से मन में जमी हउमै की मैल को धोता हूं। ऐसे गुरु को मैं पंखा झुलाता हूं जिसने मुझे विकारों की अग्नि से बचाकर रखा है। ऐसे गुरु के गृह में मैं पानी ढोता हूं जिस गुरु से मैंने परमात्मा की सूझ-बूझ प्राप्त की है।

गुरु जी आगे कथन करते हैं कि उस गुरु के गृह में मैं सदा चक्की पीसता हूं जिस गुरु की कृपा से वैरी भी मित्र लगने लग गए हैं। जिस गुरु ने मुझे (आत्मिक) जीवन दिया है; जिस गुरु ने मुझे अपना दास जानकर मोल ले लिया है अर्थात् जो मुझ पर अपना मालिकाना हक जता रहा है; जिस गुरु ने मेरे अंदर खुद ही अपना प्यार जगाया है, ऐसे गुरु को मैं सदा-सदा नमस्कार करता हूं। शबद की अंतिम पंक्ति में गुरु जी का फरमान है कि मेरा गुरु सर्वशक्तिमान है, जिसकी शरण में जाने से मेरे झगड़े, कलेश, भय, भ्रम, दुख खत्म हो गए हैं।

उपरोक्त शबद में पंचम पातशाह द्वारा सच्चे गुरु के गुणों का बखान करके जीव को समझाया गया है कि ऐसे उच्च गुणों-आदर्शों वाले गुरु की ही शरण लेनी चाहिए। ऐसा सर्वगुण-सम्पन्न गुरु ही जीव को परमात्मा से मिलाकर उसका कल्याण करने के सक्षम होता है।

देश की आज़ादी में सिक्खों का योगदान

भारतवासियों ने हज़ारों वर्ष सामाजिक, आर्थिक, सभ्याचारक तथा धार्मिक गुलामी अपने तन पर झेली। गुलामी का आरंभ उस समय हो गया था जब समाज को चार वर्णों में बांटा गया था। बंटा हुआ समाज कभी भी खुशियों का आनंद नहीं उठा सकता। वर्ण-विभाजन के समर्थक चाहे आज भी इसको 'आदर्श कर्म-व्यवसाय-विभाजन' कहकर इसकी प्रौढ़ता करते हैं किंतु गहनता से देखने से यह भली-भांति नज़र आ जाता है कि इसके अधीन चौथे वर्ग (तथाकथित) शूद्र की हालत इतनी बुरी थी कि वह अन्य तीन वर्गों का गुलाम-मात्र ही था। भारतवासियों की इसी अंदरूनी गुलामी ने विदेशी हमलावरों को भारत पर कब्ज़ा करने में कोई कठिनाई न आने दी। एक-दूसरे को गुलाम बनाते सभी भारतवासी ही विदेशी गुलामी के अंधेरे कूप में जा गिरे। विदेशी हाकिमों ने हमलावर बनकर भारतवासियों को बड़ी बेरहमी से मारा, उजाड़ा, लूटा व पीटा। वे यहां से अथाह दौलत लूटकर अपने देश में ले जाते; भारत की बहू-बेटियों को अपने देश में मंडी लगाकर बेचते। भारतवासियों ने इन विदेशी हाकिमों की गुलामी को अपनी तकदीर ही मान लिया। धीरे-धीरे गुलामी की जंजीरों में जकड़े भारतवासियों की हालत बद से बद्तर होती चली गई। सख़्तियों का दौर और तेज होता गया। इनको अपने मानवीय मौलिक अधिकारों से लगभग वंचित ही कर दिया गया। इनको इज्जत से जीने के सभी अधिकार छीन लिए गए। भारतवासियों के सिरों पर पगड़ी बांधने, पालकी में तथा घोड़े पर बैठने आदि पर भी पाबंदी लगा दी गई। यहां तक कि इनको अपना धर्म निभाने के लिए भी कई तरह के टैक्स (ज़जिया) अदा करने पड़ते। ये पाबंदियां दिन-ब-दिन इतनी सख़्त होती जा रही थीं कि लोग अपना मत छोड़कर इसलाम धर्म धारण करने के लिए मज़बूर हो रहे थे।

लगभग डेढ़ हज़ार वर्ष की गुलामी के बाद इस देश के लोगों को आज़ादी का सुख प्राप्त हुआ। असल में आज़ादी की लड़ाई श्री गुरु नानक देव जी ने आरंभ की थी। प्रसिद्ध शायर इकबाल ने इस हकीकी सच को अपनी रचना में बयान करते हुए बड़े भावपूर्ण शब्दों में कहा है कि *"फिर उठी आखिर सदाअ, तौहीद की पंजाब से। हिंद को इक मर्द-ए-कामिल ने जगाया ख्वाब से।"* श्री गुरु नानक देव जी ने उस समय के रज़वाड़ों के विरुद्ध ज़ोरदार आवाज़ बुलंद करते हुए कहा था कि *"राजे सीह मुकदम कुते ॥ जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥"* श्री गुरु नानक देव जी ने भक्त रविदास जी, भक्त कबीर जी, भक्त नामदेव जी, शेख फरीद जी की आवाज़ को भी बुलंद किया तथा उनके द्वारा रचित समाज का मार्गदर्शन करने वाली बाणी को एकत्र करके द्वितीय गुरु साहिब को विरासत के तौर पर सौंप दिया। श्री गुरु अरजन देव जी ने शांतमयी ढंग से आज़ादी की लड़ाई लड़ते हुए लोगों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया। उन्होंने पूर्व गुरु साहिबान द्वारा रचित एवं एकत्रित बाणी को श्री आदि ग्रंथ साहिब के रूप में संपादित करके प्रत्येक मनुष्य-मात्र को इससे ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। ज़ालिम हकूमत ने उनको हद दर्जे की यातनायें देकर शहीद कर दिया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने आज़ादी की लड़ाई को आगे बढ़ाते हुए आध्यात्मिकता के साथ-साथ जनता में राजनीतिक शक्ति पैदा करने के लिए 'मीरी-पीरी' का सिद्धांत कायम किया; समय की सरकार के साथ टक्कर लेते हुए अनेकों युद्ध किए। इन सभी युद्धों का उद्देश्य जनसाधारण को अपनी आज़ाद हस्ती के अस्तित्व का एहसास कराना भी था। नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब के समय तक

हालात ऐसे हो गए थे कि हर किसी को धर्म परिवर्तित किये जाने को विवश किया जाने लगा। अपने-अपने धर्म में जीने की आज़ादी की लड़ाई लड़ते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब को दिल्ली के चांदनी चौक में अपने प्रमुख सिक्खों सहित शहादत देनी पड़ी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की सृजना करके आज़ादी की लड़ाई को और मज़बूत किया। खालसे ने हर जुल्म का डटकर मुकाबला किया।

बाबा बंदा सिंघ बहादर को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने आशीर्वाद देकर अपने प्रमुख सिक्खों के साथ पंजाब की धरती को ज़ालिम राज्य से आज़ाद करवाने के लिए भेजा था। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने ज़ालिमों को सोधकर पंजाब की धरती पर पहली बार आज़ाद राज्य कायम किया। हमलावर चाहे फिर भी भारतवासियों को लूटने की मंशा से आते रहे किंतु पंजाब के शूरवीरों से मुंह की खाकर वापिस मुड़ते रहे। १२ मिसलों के खालसाई राज्य तथा राखी सिस्टम ने आज़ादी की चिंगारी छेड़ दी थी, जिसकी बदौलत देशवासियों का अपना राज्य 'सिक्ख राज्य' कायम हुआ था। इस सब कुछ का आधार श्री गुरु नानक देव जी तथा अन्य गुरु साहिबान द्वारा बख़्शा हुआ गुरमति फ़लसफ़ा ही था।

तत्पश्चात अंग्रेजों की आमद हुई और उन्होंने भारत पर अपना शासन जमाना शुरू कर दिया था। यहां यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि पंजाबवासियों ने दूसरों के मुकाबले बहुत कम समय गुलामी को सहन किया। मुगलों के बाद देश-कौम की आज़ादी छीनने वाली दुनिया की सबसे चालाक मानी जाती कौम अंग्रेज ही थे। अंग्रेजों से भारत को आज़ाद करवाने के लिए जिन देशवासियों ने संघर्ष की नींव रखी उनकी दासतान पंजाबियों, खासकर नानक-नाम-लेवा सिक्खों के ज़िक्र के बिना अधूरी है। सरदार शाम सिंघ अटारी, महारानी ज़िंदां, बाबा बीर सिंघ नौरंगाबादी, भाई महिराज सिंघ का योगदान एवं कुर्बानी वर्णनयोग्य है। अंग्रेजों के विरुद्ध असहयोग लहर सबसे पहले बाबा राम सिंघ जी की अगुआई में सिक्खों ने ही चलायी। जनरल मोहन सिंघ आज़ाद हिंद फौज के बुनियादी संस्थापकों में से एक वर्णनयोग्य सिक्ख शख़्सियत हैं। बहुत ही कम संख्या में होने के बावजूद भी सिक्खों की कुर्बानियों की प्रतिशतता को देखकर इतिहासकार वाह-वाह कर उठते हैं। अंग्रेज साम्राज्यवादियों द्वारा छीने गए सर्वकल्याणकारी खालसा राज्य को पुन: कायम करने के लिए यथासंभव प्रयास किए गए। चाहे इन प्रयासों का तत्काल कोई फल प्राप्त नहीं हुआ था मगर इन प्रयासों के लिए जो इतिहास सृजित किया गया वो आने वाले स्वतंत्रता संग्रामियों के लिए अवश्य प्रेरणा-स्रोत सिद्ध हुआ। इन पंजाब-निवासी नानक-नाम-लेवा सिक्खों ने देश को आज़ाद करवाकर ही दम लिया और इसका इनको आज़ादी वाले दिन ही भारी हर्जाना भरना पड़ा। जब १५ अगस्त, १९४७ ई को सारा देश आज़ादी का जश्न मना रहा था, उस समय पंजाब-निवासी अपने जान से प्यारे पंजाब के हुए टुकड़ों का दुख अपने नग्न तन पर झेल रहे थे। उनको उनके जान से प्यारे गुरुद्वारा साहिबान से बिछोड़ा जा रहा था। वे कत्लोगारत का शिकार होकर अपने परिवारों से बिछुड़ रहे थे; घर से बेघर होकर अपने परिवारों के लिए सुरक्षित जगह ढूंढ रहे थे।

आज़ादी के बाद कुछ समय व्यतीत होने पर सिक्खों द्वारा दी कुर्बानियों को भुलाकर इनको दूसरे दर्जे के शहरी होने का एहसास करवाने के लिए कृतघ्नताई वाली प्रक्रिया शुरू कर दी गई। हक-सच की लड़ाई आज भी सिक्खों द्वारा जारी है और ये शांतमयी ढंग से देश की मुख्य धारा से जुड़े रहकर अपना रोष प्रकट करते आ रहे हैं। राज्य-गद्दी का सुख भोग रहे सियासतदानों को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि वे सिक्खों द्वारा अपनी जानें वारकर महंगे मूल्य ली आज़ादी के कारण ही आज राज्य-सत्ता का सुख ले रहे हैं। आओ! अपने शहीदों के प्रति अपनी श्रद्धा का इज़हार करते हुए उनका पूर्ण सत्कार करें, उनके द्वारा छोड़े पद-चिन्हों पर चलते हुए हमेशा हक-सच की आवाज़ बुलंद करें, ताकि वे हमारे लिए सदैव प्रेरणा-स्रोत बने रहें, तभी हम हमेशा के लिए आज़ादी का आनंद तथा राज्य-सत्ता का सुख प्राप्त करते रह सकते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब : पोथी साहिब से गुरु-पदवी तक

-*डॉ. नवरत्न कपूर**

महिमा : सिक्ख धर्म का सर्वमान्य प्रमाणिक ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब को माना जाता है। सिक्ख समुदाय के सभी धार्मिक एवं सामाजिक कार्य इसी पावन ग्रंथ के समक्ष (हजूरी में) संपन्न होते हैं।

इतिहासकारों का मत : श्री गुरु अगंद देव जी का परिचय देते हुए डॉ. हरी राम गुप्ता ने लिखा है : "सबसे पहले उन्होंने श्री गुरु नानक देव जी की पदावलि का संग्रह करने की ओर ध्यान दिया, जो कि लंडे या महाजनी में लिखी हुई थी अथवा उनके शिष्यों, विशेषत: भाई बाला जी को स्मरण थी। इसके अतिरिक्त उनकी (श्री गुरु अंगद देव जी) भक्तिपूर्ण परख पर आधारित थीं।"[१]

उनका यह मत कनिंघम के कथन पर आधारित है। कनिंघम के कथन की पुष्टि में उन्होंने फिर लिखा है कि श्री गुरु अंगद देव जी ने लंडे की वर्णमाला को संस्कृत की लिपि देवनागरी की भांति उत्तम रूप दिया। यही नहीं, उन्होंने लंडे की वर्णमाला को सुधारा और यह नई लिपि 'गुरमुखी' कहलाने लगी, जिसका अर्थ है : "गुरु के मुख से निकली हुई।" इसी लिपि में श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी की पदावलि को लिखा, ग्रामीण बालकों को यह लिपि सिखाई और अपनी बाणी भी इसी में उच्चारण की।"[२] किंतु 'महिमा प्रकाश' एवं सरदार तेजा सिंघ[३] के उद्धरण देकर उन्होंने फिर लिखा है कि श्री गुरु नानक देव के जीवन काल में उनके सुझाव पर ही श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरमुखी लिपि का आविष्कार किया था।

आगे चलकर डॉ. हरी राम गुप्ता ने लिखा है कि श्री गुरु अरजन देव जी की सबसे बड़ी प्राप्ति श्री आदि ग्रंथ साहिब का संकलन था, जो कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के लोकप्रिय नाम से विख़्यात है। यही नहीं, उसने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित सारी बाणी का ब्यौरा देकर लिखा है : "आदि ग्रंथ क्षेत्रीय दृष्टि से समूचे भारत और इसकी सभी जातियों और वर्णों को भी समाहित करता है।. . . आदि ग्रंथ वास्तव में पंजाबी साहित्य का महान ग्रंथ है।"[४]

डॉ. गुप्ता ने इस मौलिक हस्तलिखित प्रति को बड़ी शान-ओ-शौक़त के साथ और भारी जनसमूह की उपस्थिति में श्री अमृतसर के श्री हरिमंदर साहिब में १७ भादों, संवत् १६६१ को स्थापित करने और बाबा बुड्ढा जी को मुख्य ग्रंथी नियुक्त करने की चर्चा भी की है।[५]

इतिहासकार जे. डी. कनिंघम ने तो अपनी पुस्तक के परिशिष्ट १७ में क्रमवार गुरु साहिबान, भक्तजन और भट्टों की बाणी का पूरा विवरण देकर परिशिष्ट १९ में परमात्मा, भोजन, ब्राह्मण, संत, भ्रूण-हत्या, सती-प्रथा आदि सोलह विषयों के उद्धरण अंग्रेजी में अनुवाद करके दिए हैं। इनमें से कुछेक श्री गुरु ग्रंथ साहिब से सम्बद्ध हैं तथा कुछेक दशम पातशाह के ग्रंथ (दसम ग्रंथ) से चुने गए हैं।[६] किंतु वस्तुस्थिति यह है कि सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी (सन् १४६९-१५३९) ने अपने जीवन काल में कई धार्मिक यात्राएं कीं, जिन्हें गुरमति की परिभाषिक शब्दावली में 'उदासीआं' कहा जाता है।

*** B-1801, Plot No. 106, Tulsi Sagar Housing Society, Sector 28, Nerul, Navi Mumbai-400706***

श्री गुरु नानक देव जी जिस धार्मिक स्थल पर टिककर वहां की स्थिति, लोक-रुचियों अथवा धार्मिक खींचतान का साक्षात दर्शन करते, उसको बाणी-रूप देकर अपने साथी सेवकों में से किसी एक को लिखवा देते। इस प्रकार गुरु साहिब की पहली उदासी के दौरान ही काशी (उत्तर प्रदेश) निवासी भक्त कबीर जी के ५३७ पदों तथा भक्त रविदास जी के ४० पदों को लिपिबद्ध कर लिया गया। गुरु साहिब को महाराष्ट्र में भक्त नामदेव जी के ६१ पद, भक्त त्रिलोचन जी के चार पद, भक्त सैण जी का एक पद तथा भक्त परमानंद जी का एक पद मिला। इन सभी को श्री गुरु नानक देव जी ने अपने साथी सेवक से लिपिबद्ध करवा लिया। हिंदी और संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध कवि भक्त रामानंद जी, भक्त सूरदास जी तथा भक्त भीखण जी उत्तर प्रदेश के थे। भक्त भीखण जी के दो पद तथा भक्त रामानंद जी और भक्त सूरदास जी का एक-एक पद उपलब्ध होने पर उन्हें लिखित रूप में संभाल लिया गया। बिहार के पूर्व निवासी भक्त बेणी जी के ३ पद, बंगाल के भक्त जैदेव जी के दो पद, राजस्थान के भक्त धंना जी के ३ पद एवं भक्त पीपा जी का एक पद, सभी लिखित रूप में सुरक्षित रख लिए गए। इसी प्रकार श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी अन्य उदासियों के दौरान शेख फ़रीद जी के ११६ पद पाकपटन में प्राप्त किए। भक्त सधना जी का एक पद उन्हें सिंध प्रांत में एवं गुरु-घर के अनन्य सिक्ख बाबा सुंदर जी के ६ पद पंजाब के पश्चिमी भाग में प्राप्त होने पर सुरक्षित रख लिए गए।

श्री गुरु नानक देव जी के स्वरचित ९७३ पदों के साथ संग्रहित उपर्युक्त महापुरुषों के पदों के संग्रह को 'पोथी साहिब' पुकारा जाने लगा। श्री गुरु नानक देव जी इस पवित्र संग्रह को इतना सम्मान देते थे कि तीसरी उदासी के समय मक्का-मदीना की यात्रा से लौटने के अवसर पर उन्होंने 'पोथी साहिब' को बगल में दबा रखा था। उसमें चर्चित बाणी को एक सिक्ख विद्वान भाई गुरदास जी ने मिश्री के कूजे की उपमा दी है, यथा :

आसा हथि किताब कछि कूजा बांग मुसल्ला धारी।

(वार १:३२)

भक्त-बाणी और गुरबाणी का हस्तांतरण एवं संपादन :

सिक्ख गुरु-परंपरा में सभी महानुभावों को 'इको जोत' (एक समान ज्ञान-युक्त) माना जाता है। श्री गुरु नानक देव जी ने अपने आध्यात्मिक सिद्धांतों पर खरे उतरने वाले अपने परम शिष्य भाई लहिणा जी को गुरु-पदवी प्रदान करते समय जहां 'अंगद देव' नामकरण प्रदान किया, वहीं 'पोथी साहिब' को भी सौंपा। श्री गुरु अंगद देव जी सिक्ख धर्म के द्वितीय गुरु के नाम से विख्यात हुए। उनके रचे हुए ६३ पदों को तीसरे सिक्ख गुरु श्री गुरु अमरदास जी ने स्वरचित ८९१ पदों के साथ भक्त संसाराम से 'पोथी साहिब' में दर्ज करवाया। बाणी दर्ज करने वाले ये महानुभाव श्री गुरु अमरदास जी के पौत्र तथा बाबा मोहन जी के पुत्र थे। बाबा मोहन जी की देखरेख में अक्तूबर, सन् १५७० (संवत् १६२७ के आश्विन मास) में आरंभ हुआ यह कार्य अगस्त, १५७२ ई (भाद्रपद, संवत् १६२९) में संपन्न हुआ। फलत: इन्हें 'बाबा मोहन वालीआं पोथीआं' अथवा 'गोइंदवाल वालीआं पोथीआं' पुकारा जाने लगा। तद्नंतर चौथे गुरु साहिब श्री गुरु रामदास जी ने ६४४ पद रचे और पांचवें गुरु साहिब श्री गुरु अरजन देव जी ने ३० रागों में निबद्ध २३१३ पद।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरु-पदवी के साथ आध्यात्मिक बपौती के रूप में प्राप्त पूर्ववर्ती गुरु साहिबान, भक्तजन की बाणी समेत अपनी पदावलि और अपनी 'दसतारबंदी

रस्म' (गुरगद्दी-प्राप्ति) के समय पधारने वाले ग्यारह भट्ट कवियों (भट्ट कल सहार, भट्ट जालप, भट्ट कीरत, भट्ट भिखा, भट्ट सल, भट्ट भल, भट्ट नल, भट्ट गयंद, भट्ट मथरा, भट्ट बल तथा भट्ट हरिबंस) की स्तुतिपरक बाणी के संपादन का बीड़ा उठाया। इन भट्ट कवियों की बाणी के 'सवैयों' की संख्या भाई कान्ह सिंघ नाभा नामक विश्वविख्यात सिक्ख विद्वान ने 'महान कोश' में १२३ बताई है। श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरु-घर के रबाबी भाई सत्ता व भाई बलवंड की एक वार को भी 'रामकली' राग के अंतर्गत संकलित करवाकर उन्हें गौरवान्वित किया।

गुरु साहिब के समय इसलाम धर्म का पावन 'कुरान शरीफ़' तथा ईसाई धर्म की 'बाइबिल' बहुचर्चित थे। लगभग एक शताब्दी से विद्यमान सिक्ख धर्म का कोई निजी आध्यात्मिक ग्रंथ धार्मिक जगत् के सामने नहीं आया था। श्री सरूप दास (भल्ला) नामक एक विद्वान ने अपने (महिमा प्रकाश, भाग-२) में सिक्ख पंथ के स्वतंत्र (निराकार भक्तिपरक) ग्रंथ का संपादन श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा किए जाने की चर्चा इन शब्दों में की है :

एक दिवस प्रभ प्रातहकाल।
दइआ भरे प्रभ दीन दिआल ।
यह मन उपजी प्रगटिओ जग पंथ।
तित कारन कीजे अब ग्रंथ।

(साखी श्री ग्रंथ जी की मिसल की)

संपादन काल के दौरान श्री गुरु अरजन देव जी जिस क्रम से 'पोथी साहिब' के अंश को बोलते, उसकी प्रतिलिपि भाई गुरदास जी अपनी लेखनी से तैयार करके गुरु साहिब को दिखाते रहते। सन् १६०४ में सारी बाणी लिपिबद्ध हो जाने पर 'आदि ग्रंथ साहिब' की संज्ञा प्रदान करके श्री अमृतसर में स्थित गुरुधाम 'श्री हरिमंदर साहिब' में स्थापित कर दिया गया और बाबा बुड्ढा जी नामक एक विद्वान सिक्ख को इस पावन ग्रंथ के मुख्य ग्रंथी के पद पर नियुक्त कर दिया गया।

पुनर्संपादन एवं गुरु-पदवी :

छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब, सातवें गुरु श्री गुरु हरिराय साहिब तथा आठवें गुरु श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने कोई बाणी-रचना नहीं की। दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भक्ति और शक्ति के समन्वयात्मक रूप के आधार पर सिक्ख समुदाय को पांच ककारों (केश, कंघा, कड़ा, कृपाण तथा कछहिरा) से सजाकर 'खालसा' बना दिया। यह कार्य १३ अप्रैल, सन् १६९९ में वैसाखी लोकपर्व के अवसर पर श्री अनंदपुर साहिब (ज़िला रोपड़, पंजाब) में सम्पन्न होने के लगभग सात वर्ष बाद तक वे विदेशी शक्तियों से दो हाथ करते हुए सन् १७०६ में 'दमदमा साहिब' (तलवंडी साबो, ज़िला बठिंडा) पहुंचे। यहीं पर उन्होंने अपने पूज्य पिता, नौंवे सिक्ख गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब के १५ रागों में रचित ११६ पदों को यथोचित स्थान पर सुसज्जित करने के लिए 'आदि ग्रंथ साहिब' का पुनर्लेखन भाई मनी सिंघ जी से करवाया। तभी से 'आदि ग्रंथ साहिब' का यह पुनर्लिखित रूप 'श्री दमदमा साहिब वाली बीड़' (प्रतिलिपि) कहलाने लगा और दशमेश पिता की उपमा से विभूषित दसवें सिक्ख गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की चरणरज से पवित्र उस धरती को 'गुरु की काशी' पुकारा जाने लगा। इस प्रकार इस पावन ग्रंथ का यह स्वरूप श्री गुरु अरजन देव जी की संपादन प्रति के अनुरूप उचित वृद्धियों के साथ उभरकर संसार में आया।

पहला भाग : इसमें सिक्खों के नित्तनेम (नित्य नियम) की बाणियां-- 'जपु जी', 'सो दरु' (रहरासि), तथा 'सोहिला' संकलित हैं।

दूसरा भाग : यह रागबद्ध बाणी है, जिसे राग विशेष की प्रकृति, स्वरूप तथा प्रभाव के अनुसार दर्ज किया गया है। ये ३१ राग क्रमानुसार इस प्रकार हैं : सिरीरागु, माझ, गउड़ी, आसा, गूजरी,

देवगंधारी, बिहागड़ा, वडहंसु, सोरठि, धनासरी, जैतसरी, टोडी, बैराड़ी, तिलंग, सूही, बिलावलु, गोंड, रामकली, नट नाराइन, माली गउड़ा, मारू, तुखारी, केदारा, भैरउ, बसंतु, सारग, मलार, कानड़ा, कलिआन, प्रभाती तथा जैजावंती।

तीसरा भाग : इस भाग के ७८ पन्नों में फुटकर बाणियां हैं, जो कि रागबद्ध नहीं हैं। ये बारह बाणियां क्रमानुसार इस प्रकार संकलित हैं : १) सलोक सहसक्रिती, २) गाथा, ३) फुनहे, ४) चउबोले, ५) सलोक भगत कबीर जीउ के, ६) सलोक शेख फ़रीद के, ७) सवये स्री मुखबाक्य, ८) सलोक वारां ते वधीक, ९) सलोक महला ९, १०) मुंदावणी महला ५, ११) राग माला। इन सभी बाणियों में काव्यगत छंद प्रणाली का प्रयोग हुआ है।

श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा तैयार करवाई गई प्रति में दर्ज भक्तों, भट्टों और गुरसिक्खों की बाणी में उनके नाम तथा भाषा का मूल स्वरूप पूर्ण सुरक्षित रखा गया था। गुरु साहिबान ने, जिनकी बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विद्यमान है, उसमें उन्होंने अपने आदि पूर्वज श्री गुरु नानक देव जी की संज्ञा 'नानक' का प्रयोग अपने संपादन काल में किया था। सिक्ख धर्म में सभी गुरु साहिबान को 'इको जोत' मानकर 'नानक-पंथी' कहलाने का सौभाग्य तभी से प्राप्त हुआ। संपादनकर्ता श्री गुरु अरजन देव जी ने बाणी के नाम की स्पष्टता का संकेत 'महला' शब्द के साथ १, २, ३, ४, ५ लगाकर किया। इसी प्रकार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने पूज्य पिता नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी पर 'महला ९' अंकित करवाया। वस्तुत: सिक्ख धर्म में निराकार ईश्वर को 'अकाल पुरख' या 'करता पुरख' कहा जाता है।

'आदि ग्रंथ' की दमदमा साहिब वाली बीड़ को संपूर्ण करने के कुछ ही दिनों पश्चात् श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जन-जागरण हेतु 'गुरु की काशी' (दमदमा साहिब, ज़िला बठिंडा, पंजाब) से राजपूताना (आधुनिक राजस्थान) के मार्ग से महाराष्ट्र स्थित 'नांदेड़' नामक नगर में पहुंचे। 'पटना' (बिहार) में जन्मे और पंजाब में भक्ति-शक्ति के समन्वय-भाव की सूचक अपनी विशाल बाणी (दसम ग्रंथ) के उच्चारणकर्ता होने के कारण ख्याति-प्राप्त दशमेश पिता के दर्शन के लिए सभी धर्मों के श्रद्धालुओं का तांता लग गया। उनमें ही एक पठान ढोंगी श्रद्धालु बनकर आया और उसने मौका ताककर गुरु साहिब पर ज़ोर से खंजर द्वारा वार कर दिया। घाव इतना गहरा था कि सभी तरह के उपचार निरर्थक सिद्ध हुए। गुरु साहिब ने सिक्ख संगत को बुलाया और अपना अंतिम समय निकट आया बताकर सिक्ख संगत को कहा कि "अब से कोई देहधारी गुरु नहीं होगा। आज से श्री आदि ग्रंथ साहिब ही आपके गुरु होंगे। अब इन्हें 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' पुकारा जाए।"

संदर्भ-सूची :

1. J. D. Cunningham, A History of the Sikhs, P. 44; S. Chand & Co. (Pvt.) Ltd., New Delhi.
2. H. R. Gupta, History of the Sikhs, Vol. I, Page 114, Munshi Ram Manohar Lal Publishers, Delhi (1984)
3. Teja Singh, The Editing of the Holy Granth by Guru Arjan, The Sikh Review, June-1978, Page 16-19.
4. H. R. Gupta, History of the Sikhs, Vol. I, Page 143.
5. Ibid, Page 140 (1972)
6. J. D. Cunningham, A History of Sikhs, Page 321-336.

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में धार्मिक स्वतंत्रता तथा सांप्रदायिक एकता का स्वर

*-डॉ. आशा अनेजा**

भारत सभ्यता और संस्कृति का आदि स्रोत है। धर्म की जन्म-भूमि होने के कारण भारत आध्यात्मिक देश है। सर्वप्रथम यहीं पर प्रकृति और परमात्मा के रहस्यों की जिज्ञासाएं मानव के मन में आईं तथा यहीं परमात्मा की अमरता, ईश्वर की सत्ता तथा प्रकृति और मनुष्य के भीतर परमात्मा के दर्शन किए गए। यहीं धर्म तथा दर्शन के उच्चतम सिद्धांतों ने अपने चरम शिखर स्पर्श किए तथा समस्त संसार को धर्म रूपी सरिता की मधुर धारा से स्नात कर दिया। भारतवर्ष में अनेक महापुरुषों और धर्म-संस्थापकों ने जन्म लिया, जिन्होंने दिव्य, ओजस्वी तथा मानव में आत्म-बल पैदा करने वाली बाणी की रचना की। ऐसी बाणी तथा उनके द्वारा रचित धार्मिक ग्रंथों में विवेक, ज्ञान, भक्ति, सदाचार, संयम, मानव-एकता आदि के भाव पिरोये हुए मिलते हैं जो मानव के लिए शाश्वत संदेश हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब भारत का एक ऐसा ही पवित्र ग्रंथ है जो धार्मिक संकीर्णताओं से ऊपर उठकर सर्वमानव-कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। गुरबाणी का कथन है :

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥
(पन्ना १)

भाव यह है कि परमात्मा एक है, उसका नाम सत्य है, वह सृष्टि का रचयिता है, उसे किसी का भय नहीं, उसका किसी से वैर नहीं, वह समय से परे है, अजन्मा तथा स्वयंभू है और उसे (सच्चे) गुरु की कृपा द्वारा पाया जा सकता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब किसी एक धर्म तथा वर्ग तक सीमित नहीं है। यह सभी धर्मों को एकता का संदेश देकर एक सूत्र में बांधना चाहते हैं।

धारणार्थक 'धृ' धातु से धर्म की निष्पत्ति होती है, अत: जो धारण करने योग्य है, वही धर्म है। लैकिक और पारलौकिक कल्याण करने के लिए जिस साधन को धारण किया जाता है उस महान धारक शक्ति को ही धर्म कहा गया है। इस धारक शक्ति की धारणा सबके हित और कल्याण से जुड़ी हुई है। 'कुशल' अर्थात् 'कल्याणकारक' ही धर्म है और जो कुशल नहीं है, जो कल्याणकारी नहीं है, वह अधर्म है। वास्तव में धर्म मनुष्य की आत्मा को विकास की ओर ले जाने वाला कल्याणकारी कर्म है। इसमें अवगुणों का त्याग और गुणों का संकलन मुख्य वस्तु है।

अलग-अलग धर्मों ने समय-समय पर जीवन को विकसित करने के लिए कुछ नियम बनाए, जैसे चोरी, ईर्ष्या, हिंसा न करना, नम्रता व प्रेम से रहना। इन गुणों को हर धर्म ने अपनाया है। धर्म एक प्रकार की शक्ति है, ओज है, बल है, शोभा है,. सरमाया है। जहां धर्म होगा वहां जितेंद्रियता अवश्य होगी।

आधुनिक हिंदी समीक्षक आचार्य रामचंद्र

***३०६/१, खुड्ड मुहल्ला, ओल्ड सिविल अस्पताल रोड, लुधियाना-१४१००८, मो. ९४१७९-७७२००*

शुक्ल इस विषय में लिखते हैं कि "वह व्यवस्था या वृत्ति जिससे लोक में मंगल का विधान होता है, अभ्युदय की सिद्धि होती है, धर्म है।"[१] इस प्रकार जीवन को चलाने वाले श्रेष्ठ सिद्धांतों का समूह धर्म कहलाता है। धर्म मनुष्य के व्यवहारिक कार्य-कलापों को एक संगति में ढालता है इसलिए धर्म का क्षेत्र विस्तृत है।

किसी धर्म के अंतर्गत किसी विशिष्ट मत या सिद्धांत को मानने वालों का वर्ग या समूह संप्रदाय कहलाता है, जैसे हिंदू धर्म में वैष्णव, शैव आदि संप्रदाय हैं; मुसलमानों में शिया और सुन्नी संप्रदाय हैं तथा ईसाई धर्म में कैथोलिक और प्रोटस्टेंट संप्रदाय हैं। संप्रदाय से संबंधित होने के कारण कट्टरता का भाव धारण करना सांप्रदायिकता है। जब व्यक्ति अपने हित के लिए, अपनी निजी धार्मिक मान्यताएं दूसरों पर थोपना चाहता है तो वहां सांप्रदायिकता अनुचित रूप में सामने आती है।

"अपने धर्म के प्रति आस्था, विश्वास तथा श्रद्धा रखना सांप्रदायिकता नहीं। सांप्रदायिकता तब आती है जब हम अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता नहीं दिखाते। धर्म क्या है? सत्य की पहचान और सत्य पर सब धर्मों का अधिकार है। सभी धर्म सत्य के अनुगामी हैं। जब सत्य पर एक ही धर्म अपना अधिकार मानता है तो सांप्रदायिकता है।"[२]

धार्मिक कट्टरता सांप्रदायिकता का मूल है। धर्म को 'जीओ और जीने दो' के सिद्धांत पर ही आधारित होना चाहिए। इस सिद्धांत पर आधारित होने वाले धर्म-सहिष्णु, उदार तथा श्रेष्ठ होते हैं। ऐसा ही धर्म सबको जातिगत, व्यक्तिगत, धर्मगत भेदभाव के बिना एकता के सूत्र में पिरोता है।

भारतीय चिंतन परंपरा में श्री गुरु ग्रंथ साहिब ऐसा ही अद्भुत ग्रंथ है, जिसने किसी तरह के भेदभाव को नहीं माना। इसमें छ: गुरु साहिबान, पंद्रह भक्त साहिबान, ग्यारह दिव्य जीवनशाली भट्टों की बाणी के अलावा गुरु-घर के निकटवर्ती गुरसिक्खों की बाणी संकलित है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के उपदेश सभी धर्मों, संप्रदायों, जातियों तथा व्यक्तियों के लिए हैं। जब गुरबाणी की रचना हुई उस समय समाज मुख्यत: दो वर्गों में विभाजित था-- हिंदू समाज और मुसलिम समाज। ये दोनों ही समाज ह्रासोन्मुख हो रहे थे। इनमें किसी प्रकार की सामाजिक मर्यादा नहीं रह गई थी। ये दोनों संप्रदाय एक दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखते थे। इस संदर्भ में अलबेरुनी का कथन है : "हिंदुओं और मुसलमानों में इतना अधिक अंतर था कि दोनों में संपर्क की संभावना नहीं थी। यह अंतर केवल भाषा और वेशभूषा में ही नहीं था बल्कि मुसलिम आस्थाएं हिंदू विश्वासों से नितांत भिन्न थीं और उसी प्रकार हिंदू धारणाएं मुसलिम विचारों से। हिंदुओं का विरोध सभी विधर्मियों से था और वे अहिंदुओं को मलेच्छ कहते थे तथा किसी प्रकार का संपर्क नहीं रखना चाहते थे।"[३]

हिंदू मतों में शूद्रों को वेद-शास्त्र पढ़ने की आज्ञा नहीं थी। तथाकथित निम्न जाति के लोगों को मंदिरों में प्रवेश भी नहीं करने दिया जाता था। उस युग के मुसलमानों का काज़ी वर्ग भी रिश्वतखोर बन गया था। बौद्ध तथा जैन धर्म भी बहुत-से संप्रदायों तथा उप-संप्रदायों में बंट गए थे। धर्म के नाम पर खुले रूप में विलासता और अनैतिकता इन धर्मों में प्रवेश कर गई थी। अनेक प्रकार की विकृतियां और त्रुटियां दिखाई देने लगी थीं। निष्कर्ष रूप में अंधविश्वास, रूढ़ियों का अनुसरण और बाहरी आडंबरों का

पालन ही धर्म की परिभाषा रह गई थी। ऐसे अशांत, संघर्षमय और पतनोन्मुख धार्मिक परिवेश में श्री गुरु नानक देव जी का आविर्भाव हुआ। उन्होंने अपने मानवतावादी विचारों से विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के वैमनस्य को दूर करने का सफल प्रयत्न किया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जिन-जिन महापुरुषों की बाणी संकलित की गई है उन सभी का यही प्रयास रहा है कि वे धार्मिक भेदभावों को दूर करके लोगों में मनुष्यता के प्रति विश्वास जागृत कर सकें। गुरबाणी ने धर्म को मानव-धर्म की संज्ञा से अभिहित किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु नानक देव जी का कथन है :

धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥

(पन्ना ३)

अर्थात् धर्म पृथ्वी को धारण करने वाला कल्पित श्वेत बैल है, जो दया का पुत्र है, जिसे प्रभु ने संतोष के धागे से (समस्त सृष्टि-रचना को) बांध रखा है। वस्तुतः धर्म, दया और संतोष पर धरती टिकी हुई है। गुरबाणी में 'धर्म' शब्द चाहे पुण्य कर्म या पवित्र कर्त्तव्य के लिए प्रयुक्त हुआ है परंतु इसके अंतर्गत 'नाम-सिमरन' और 'सेवा' को प्रमुखता दी गयी है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्पष्ट दर्ज है कि सच में विश्वास ही एक मात्र धर्म है :

एको धरमु द्रिड़ै सचु कोई ॥
गुरमति पूरा जुगि जुगि सोई ॥

(पन्ना ११८८)

भक्त साहिबान ने अपने सिद्धांत को किसी खास धर्म अथवा जाति विशेष के लिए सीमित नहीं किया। वे न हिंदू थे न मुसलमान। इसके बारे में भक्त जी का कथन है :

ना हम हिंदू न मुसलमान ॥
अलह राम के पिंडु परान ॥

(पन्ना ११३६)

यदि कोई व्यक्ति परमात्मा से प्रेम करता है तो वह अन्य सब दुविधाओं से मुक्त हो जाता है, चाहे वह किसी भी धर्म से सम्बंधित क्यों न हो :

कबीर प्रीति इक सिउ कीए आन दुबिधा जाइ ॥
भावै लांबे केस करु भावै घररि मुडाइ ॥

(पन्ना १३६५)

एकता का पाठ पढ़ाती हुई बाणी सबको अमृत संदेश देती है कि सच्चे मन से भगवान का भजन करो, संयम से जीवन बिताओ, परिश्रम से सच्ची कमाई करो, झूठ मत बोलो, पराई निंदा और क्रोध मत करो; उस एक ईश्वर को याद करो जो जल, थल में समा रहा है; सब व्यक्तियों तथा अन्य जीवों से प्रेम करो, क्योंकि ईश्वर सब में है। गुरबाणी कहती है कि संगत में बैठकर हरि-यश किया जाए। इसी लिए श्री गुरु नानक देव जी ने संगत की प्रथा चलाई ताकि सभी लोग सामूहिक रूप से प्रभु-गायन कर सकें।

"इस 'संगत' ने सिक्खों में जहां भ्रातृ-भाव व आपसी प्यार को दृढ़ किया, वहां 'संगत' इस बात की भी प्रतीक थी कि सिक्ख धर्म व्यक्तिगत धर्म नहीं बल्कि सामाजिक या सामूहिक धर्म है।"[४]

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संगत की विशिष्टता को इस प्रकार व्यक्त किया गया है :

विचि संगति हरि प्रभु वरतदा बुझहु सबद वीचारि ॥ *(पन्ना १३१४)*

संसार के इतिहास में इस पावन ग्रंथ के द्वारा पहली बार धार्मिक उदारता की मिसाल कायम की गई। कुल, जाति, लिंग तथा क्षेत्रीय भेदभाव को दूर कर आपसी प्रेम-भाव को बढ़ावा दिया गया। शेख फरीद जी धार्मिक सांप्रदायिकता

में अंधे हुए लोगों को जागृत करते हुए कहते हैं कि संसार की रचना करने वाला खालिक (ईश्वर) है तथा वह हर व्यक्ति में व्याप्त है। फिर जिसमें स्वयं ईश्वर का निवास हो उसे बुरा क्यों कहा जाए? हर मनुष्य का हृदय अनमोल मोती है, क्योंकि वह खुदा का घर है, उसको तोड़ना अल्लाह की नाराज़गी का पात्र बनना है :

फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै रब माहि ॥
मंदा किस नो आखीऐ जां तिसु बिनु कोई नाहि ॥
(पन्ना १३८१)

ठीक इसी प्रकार भक्त कबीर जी का कथन है :

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥ *(पन्ना १३४९)*

भाव यह है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित बाणी स्पष्ट बताती है कि धर्म का सम्बंध रूह (आत्मा) के साथ है जो सबमें विद्यमान है। सब रूहें एक ही ईश्वरीय नूर से दीप्त हैं, फिर अच्छे और बुरे में भेदभाव क्यों? श्री गुरु नानक देव जी बार-बार कहते हैं कि *"साहिबु मेरा एको है एको है भाई एको है ॥"* भाव यह कि सब मनुष्य उस एक ईश्वर की रचना हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज़ बाणी मनुष्य को जागृत करती हुई कहती है कि परमात्मा के दर पर जाति नहीं पूछी जाती। सब मनुष्य उस एक पिता की संतान हैं, इसलिए धार्मिक तथा सांप्रदायिक बंधनों को त्यागकर ईश्वर पर विश्वास करें। अलग-अलग धार्मिक विश्वासों पर आधारित मनुष्य आपस में वैर-भावना, ईर्ष्या को छोड़कर भक्ति-भावना धारण करें :

राह दोवै खसमु एको जाणु ॥
गुर कै सबदि हुकमु पछाणु ॥
सगल रूप वरन मन माही ॥
कहु नानक एको सालाही ॥
(पन्ना २२३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित श्री गुरु रामदास जी की बाणी सरल शब्दों में मनुष्य-मात्र को एकता का संदेश देती हुई कहती है :

एको पवणु माटी सभ एका
सभ एका जोति सबाईआ ॥
सभ इका जोति वरतै भिनि भिनि
न रलई किसै दी रलाईआ ॥
(पन्ना ९६)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी अमृत सरोवर के समान है जिसमें सब जातियों तथा धर्मों के व्यक्ति स्नान कर सकते हैं। गुरबाणी कहती है कि जो व्यक्ति किसी से ईर्ष्या करता है, नफ़रत करता है, उसका कल्याण कभी नहीं हो सकता, वह ईश्वरीय प्रेम का पात्र कभी नहीं बन सकता :

जिसु अंदरि ताति पराई होवै
तिस दा कदे न होवी भला ॥
(पन्ना ३०८)

गुरबाणी उपदेश देती हुई कहती है कि हर धर्म को एक दूसरे के प्रति आदर की भावना रखनी चाहिए। किसी को भी भयभीत करना या डराना उचित नहीं। दूसरे धर्म को जुल्म से बचाना ही असली धर्म है। हिंदू धर्म की रक्षा के लिए श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपने शीश का बलिदान देकर धार्मिक एकता की मिसाल कायम की। वास्तव में वह ज्योति एक है जो सब में समाई है :

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
(पन्ना १३)

गुरबाणी के उच्चरित होने के समय

समाज चार वर्णों या जातियों में बंटा हुआ था। तथाकथित ऊंची श्रेणी के लोग अभिमान से ग्रस्त थे। ब्राह्मण श्रेणी के अपने कर्मकांड थे। इन्ही कर्मकांडों में इन्होंने लोगों को उलझाया हुआ था। खत्री (क्षत्रिय) लोग भी 'ऊंचे' वर्ग के माने जाते थे। 'नीची' जाति के लोगों को, जो हज़ारों वर्षों से दबे और कुचले थे, 'ऊंची' जाति के लोगों द्वारा और भी अधिक दबाया जा रहा था। कमज़ोरों के धार्मिक अधिकारों को समाप्त किया जा रहा था। गुरबाणी ने धार्मिक भेदभावों की निंदा की तथा ईश्वर के नाम पर सबका समान अधिकार बताया। झूठे अभिमान से ग्रस्त व्यक्तियों को मूर्ख और गंवार कहते हुए गुरबाणी कहती है :

जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ॥
इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ॥

(पन्ना ११२७)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब सबको सत्य का मार्ग दिखाते हुए कहते हैं कि धर्म में सत्य का महत्वपूर्ण स्थान है। धर्म एक ही है यदि कोई सत्य को समझे अथवा दृढ़ कर ले :

एका धरमु द्रिड़ै सचु कोई ॥
गुरमति पूरा जुगि जुगि सोई ॥

(पन्ना ११८८)

"धार्मिक संकीर्णताओं का त्याग करते हुए मनुष्य को हृदय में संतोष धारण करना चाहिए तथा मानवता की सेवा करनी चाहिए, सच्चे परमात्मा में ध्यान केंद्रित करना चाहिए। बुरे कामों को छोड़कर ही व्यक्ति सच्चे धर्म का अनुगामी बन सकता है।"[५]

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वहमों, भ्रमों, पाखंडों आदि का बड़ी दृढ़ता से खंडन करके ईश्वर के निर्गुण रूप में ही विश्वास करने का मत दिया है। सब मनुष्य उसी निर्गुण ईश्वर की रचना हैं; फिर धर्म के नाम पर आपसी भेदभाव या दंगे-फसाद मनुष्य क्यों करता है? ईश्वर सबका एक है, अलग-अलग धर्मों का अलग-अलग नहीं :

एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई ॥ *(पन्ना ६११)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार धर्म कोई भी बुरा नहीं, भावना सच्ची होनी चाहिए। तथाकथित उच्च जाति का व्यक्ति यदि कोई घृणित कार्य करता है तो वह उत्तम कैसे हो सकता है? परमात्मा के घर में व्यक्ति की जाति या संप्रदाय नहीं पूछा जाता :

जाति जनमु न पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥
सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥

(पन्ना १३३०)

धार्मिक संकीर्णताओं तथा जातिगत भेदभावों का सम्बंध तो शरीर से है, जो मृत्यु पश्चात् खाक हो जाता है। आत्मा, जो इन सब बंधनों से रहित है, वही ईश्वर में जाकर समाती है :

आगै जाति रूपु न जाइ ॥
तेहा होवै जेहे करम कमाइ ॥

(पन्ना ३६३)

इस प्रकार सभी बाणीकारों, जिनकी बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है, ने भारतीय समाज को समता और एकता के सूत्र में बांधना चाहा। सभी ने पारस्परिक जातीय भेदभाव की आलोचना की। अपने मानवतावादी विचारों से हिंदुओं, मुसलमानों, नाथों-सिद्धों तथा दलितों का पर्याप्त मार्गदर्शन किया। इस कारण प्रत्येक धर्म के व्यक्ति ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को आलौकिक दिव्य शक्ति समझकर पूजनीय माना। वास्तव में गुरबाणी ऐसी शक्ति है जो मनुष्य के भीतर आत्म बल पैदा करती है, धैर्य, साहस को जन्म देती है, व्यक्ति में व्यक्तिगत कल्याण या लाभ के स्थान पर सम्पूर्ण संसार का भला मांगने की

भावना को जागृत करने का प्रयास करती है। महापुरुषों के सच्चे हृदय से निकली यह बाणी सबके मनों से धार्मिक भेदभाव दूर कर उन्हें पवित्र कर देने की सामर्थ्य रखती है। सभी धर्मों को एकता का संदेश देती हुई यह बाणी मंदाकिनी की धारा की तरह कल-कल बहती है।

संदर्भ-संकेत :

१. तनसुख राम गुप्त, निबंध सौरभ, नई दिल्ली, सूर्य भारती प्रकाशन, २०००, पृष्ठ ५३२
२. वही, पृष्ठ ५३९-५४०
३. उद्धृत, डॉ. पद्म गुरचरन सिंघ, युग प्रवर्तक गुरु नानक और उनकी बाणी, श्री अमृतसर, नव चिंतन प्रकाशन, १९९०, पृष्ठ ८९
४. सिख जीवन पद्धती (पत्रिका), लुधियाना, सिख मिशनरी कॉलेज (रजि.), जून, १९९१, पृष्ठ ४
५. डॉ. पद्म गुरचरन सिंघ, युग प्रवर्तक गुरु नानक और उनकी बाणी, पृष्ठ ९१

('आगमित-२००४, से धन्यवाद सहित)

कविताएं

प्रार्थना

जगती का कण कण, जीवन का हर क्षण।
हर कर्म, हर शब्द, हर एक चिंतन।
अत्यंत शुभ हो, अत्यंत पावन।
सबके लिए हो, कल्याण-साधन।
निर्दोष तन हो, निर्मल बने मन।
निश्छल हृदय हो, करुणा-निकेतन।
बुद्धि करे नित्य, सत्यान्वेषण।
मन से हो सद्भावनाओं का प्रेषण।
दृष्टि हो व्यापक, लक्ष्य सनातन।
आगे बढ़ें हम, सत्यपथी बन।
काटें-मिटाएं, भव-जाल-बंधन।
ज्ञानाग्नि में तप, बन जाएं कुंदन।
होवे प्रकाशित, यह चित्त-दर्पण।
अहंभाव हो ईश-चरणों में अर्पण।
जानें स्वयं को, करें ईश-दर्शन।
हो लक्ष्य-सिद्धि, सार्थक हो जीवन।

मासूम का भरोसा

जब से उस मासूम बच्चे ने
भीड़ से डरकर, कई लोगों के बीच में
मुझ अनजान को कसकर पकड़ा है,
पता नहीं किस कारण मुझे खुद में
पवित्रता, आत्मविश्वास, गर्व, जिम्मेदारी, रक्षक
की मिश्रित अनुभूति होने लगी है।

हीरे जैसा जनमु है . . .

लाखों जन्मों में भटक, पाया मानुष तन।
सोचो कितना कीमती, जीवन का हर क्षण!
यह जीवन अनमोल है, इसे गंवाओ मत!
भोगों के भ्रमजाल में, इसे फंसाओ मत!
नश्वर चीज़ों के लिए, जो करते रहते पाप।
स्थिर सुख उन्हें न मिले, मिलता है संताप।
दुनियादारी में जो रमे, नहीं चित्त पर ध्यान।
पर्तें चढ़ती मैल की, हृदय होता म्लान।
ऐसे में कैसे दिखे, अपना सच्चा रूप?
धीरे-धीरे मर रही, आत्म-खोज की भूख।
जग की माया-चाल पर, क्यों देते हो ताल?
अपने बुद्धि-विवेक से, काटो माया-जाल!
अब भी यदि भटके रहे, तो न बचे उपाय।
"हीरे जैसा जनमु है कउडी बदले जाइ ॥"

चाह

भले निराशा के भंवरों में
तिनका-तिनका बिखर जाऊं मैं
लेकिन इतनी चाह है मेरी
तिनके ये बन जायें सहारा
उनका, जो-जो डूब रहे हों
ताकि यह जीवन व्यर्थ न जाये।

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.)। मो : ०९४११६०७६७२

गुरबाणी में गुरु का संकल्प

*-श्री अविनाश शर्मा**

पंजाब सदा से भारत का प्रवेश द्वार रहा है। प्रत्येक आक्रमणकारी को यहां के निवासियों से लोहा लेना पड़ा था परंतु आपसी फूट और प्राकृतिक कोप के कारण पंजाब के वीर लोग आक्रमणकारियों का प्रवाह रोक नहीं पाए। मुगलों ने अपने प्रतिशोध के लिए पंजाबियों पर खूब जुल्म किए। सामाजिक स्थिति भी प्रदेशवासियों की वैसी ही थी जैसी उत्तर भारत के अन्य प्रदेशों की थी। धर्म के क्षेत्र में नाथों-सिद्धों और सूफियों के करामाती द्वंद्व जनता को मुगलों के प्रति सभय बनाए हुए थे। गोरखनाथ ने योग की जो धारा प्रवाहित की थी उससे सर्व साधारण लोग तो प्रभावित थे ही, ब्राह्मण श्रेणी भी अपने शास्त्राध्यान में मग्न थी। योग में नारी को स्थान न मिलने के कारण नारी न केवल उपेक्षित थी बल्कि आचार-पतन का कारण भी बताई जा रही थी। लोग नाथों की ओर आकृष्ट तो होते थे किंतु योग के कठिन मार्ग पर चलने में असमर्थ थे, इसलिए निराश होकर वे इसलाम को अपनाने लगे थे। सूफी हिंदू धर्म की पुरातन प्रेम-कथाओं के द्वारा आध्यात्मिक पाठ पढ़ा रहे थे और हिंदुओं को अपने प्रेम-मार्ग से आकर्षित कर रहे थे। दूसरी ओर शासक तलवार के बल पर लोगों का धर्म-परिवर्तन करवा रहे थे। इस स्थिति का वर्णन करते हुए श्री गुरु नानक देव जी ने फरमाया कि बादशाह अत्याचारी था, राज्य-कर्मचारी कुत्तों की तरह जनता का खून चूस रहे थे, नारी की रक्षा करने वाला कोई नहीं था, धर्म का नाश हो चुका था और लोग निराशा के सागर में डूब रहे थे। श्री गुरु नानक देव जी ने इन अत्याचारों के लिए ईश्वर को भी उलाहना दिया है। पंजाब में अनेक देवी-देवताओं के नाम पर अनेक संप्रदाय पनप चुके थे किंतु मुगलों के अत्याचार से कोई भी अपने संप्रदाय की रक्षा नहीं कर पाया। परिणामस्वरूप लोग एकेश्वखादी इसलाम की ओर झुकने लगे।

इससे पूर्व कि सारे संप्रदाय इसलाम में विलीन हो जाते श्री गुरु नानक देव जी जैसे महापुरुषों ने उन्हें सहारा दिया। श्री गुरु नानक देव जी ने पंजाब में भक्ति आंदोलन चलाया जिसमें पाखंड, वहम् और वाह्य आडंबर बह गए और एक निर्मल एवं सात्विक धर्म 'सिक्ख धर्म' सामने आया। इस धर्म के अनुयायियों ने कौम की आन-बान-शान के लिए अपने सिर कटवा दिए और अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया, आवश्यकता पड़ने पर स्वयं भी दल बांध युद्ध-क्षेत्र में उतरे और धर्म-शत्रुओं के छक्के छुड़ा दिए।

पंजाब का यह भक्ति आंदोलन अपने आप में अनुपम एवं अद्वितीय था। इसकी सरसता तथा आत्मरक्षा की भावना ने सर्वसाधारण का मन मोह लिया। समय-समय पर भारत में अनेक धर्मों का उदय हुआ लेकिन कुछ समय

*१२०५, अर्बन अस्टेट, फेज़-१, जलंधर-१४४०२२

के पश्चात उनका अंत हो गया। विरोधी का सामना कोई भी धर्म इतने धैर्य व साहस से नहीं कर सका जितना श्री गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित धर्म ने किया। अन्य धर्म एवं संप्रदाय चले गए और मिट गए किंतु सिक्ख धर्म आज भी गुरु-शबद (गुरबाणी) के सहारे जीवित है और सदा जीवित रहेगा।

'गुरु' शब्द भारतीय धर्म-साधना में बहुत पुराना है, परंतु सिक्ख गुरु साहिबान ने गुरु को प्राचीन शास्त्रीय अर्थों में नहीं अपनाया। सिक्ख गुरु साहिबान के अनुसार गुरु केवल अध्यापक अथवा मार्गदर्शक ही नहीं होता बल्कि वो तो अकाल पुरख के उस अंश से निर्मित होता है जिसे अकाल पुरख स्वयं अपने जीवों की रक्षा के लिए उसमें स्थापित करता है। गुरु उसी अंश (शबद) का रहस्योद्घाटन कर त्रस्त जनता का उद्धार करता है। 'शबद' परम सत्य का प्रतीक है जिसे अकाल पुरख ने श्री गुरु नानक देव जी में स्थापित किया और यही 'शबद' एक के बाद दूसरे सभी गुरु साहिबान की आत्मा का प्रकाश बना, इसीलिए वे सब अपने आप को श्री गुरु नानक देव जी' की ज्योति मानते हैं और एक ही 'शबद' का रूप लिए सत्योद्घाटन करते हैं। कहने का भाव यह है कि इस धार्मिक विचारधारा के अनुसार गुरु का वास्तविक रूप शबद-रूप है और वह स्वयं अकाल पुरख का तत्त्व है।

कोई भी कार्य सीखने के लिए हमें एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो उस क्षेत्र में पारंगत हो। इसी प्रकार आध्यात्मिक पथ पर चलने के लिए हमें गुरु की आवश्यकता होती है। बिना गुरु के निर्देशन से इस भवसागर को पार करना कठिन ही नहीं, असंभव भी है।

समय-समय पर अनेक महान आत्माएं विश्व में अवतरित होती रहती हैं। पृथ्वी पर आने पर भी उनका सम्बंध ईश्वर से अटूट रहता है। ये आत्माएं ईश्वर की प्रतिनिधि होती हैं। ऐसी आत्माएं ही संसार में व्याप्त तमाम तरह की अग्नि में जलने वाले जीवों को त्राण देकर उस परमात्मा को प्राप्त करने का मार्ग बताती हैं। ऐसी आत्माओं को खोज निकालने की आवश्यकता है। जिज्ञासु इसके लिए आकाश-पाताल छान मारता है और अंत में वह सच्चा गुरु प्राप्त करने में सफल होता है। खोज, जिज्ञासा, कुतूहल, उत्सुकता आदि की उग्र स्थिति गुरु की प्राप्ति की पहली और अंतिम सीढ़ी है। गुरु-प्राप्ति का अधिकारी कौन है? इसका निर्णय करते हुए श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि गुरु को वही प्राप्त कर सकता है जिसके प्रारब्ध उच्च कोटि के हों और जो संसार में सद्गुणों की खान बनकर जीवन के परम सत्य की खोज करता हो। ईश्वर की परम कृपा ही जिज्ञासु को गुरु से मिलाती है।

भारतीय चिंतनधारा जन्म-मरण तथा पुनर्जन्म की प्रक्रिया में विश्वास रखती है। सिक्ख गुरुओं का विश्वास भी इस विचारधारा में है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार, गुरु की जिस साधक पर विशेष कृपा होती है उसी को मुक्तार्थ शब्द की प्राप्ति होती है। एक बार जो उस महत् अनुभव को पा लेता है वह दूसरों का पथ-प्रदर्शन भी कर सकता है। सच तो यह है कि तीन लोकों में गुरु के अतिरिक्त अन्य कोई मुक्ति-साधन नहीं है। उसी की प्रेरणा और निर्देश से जीव प्रभु-भक्ति पाता है और अपनी आध्यात्मिक भूख को शांत करता है। गुरु एक तीर्थ है जिसके चरणों में बैठने-मात्र से जीव के पाप धुल जाते हैं। वह संतोष का भंडार है। यदि वह गुरु पूर्ण होगा तभी वह पशु सरीखे पतित तथा कुटिल मनुष्य को भी देवत्व पद तक

पहुंचाने में समर्थ होगा। सच्चा गुरु दोनों हाथों से कृपा लुटाने वाला दाता होता है। उसके दान-कक्ष के द्वार कभी बंद नहीं होते, बस, उसे खोजकर मांगने भर की देर होती है। इसी प्रसंग में श्री गुरु नानक देव जी का कथन है कि सच्चा गुरु गृहस्थ, समाज तथा संसार से अलग होने का उपदेश नहीं देता। मानव शरीर स्वयं खंडों-ब्रह्मांडों तथा आकाशी मंडलों का समूह है। उन्हीं में से सर्वोच्च खंड में अकाल पुरख विराजमान है। अपनी ज्ञानेंद्रियों, कर्मेंद्रियों, तर्क-शक्तियों तथा इच्छाओं में बंधा मनुष्य वहिर्मुखी हो गया है। इसी से वह बाहरी स्वरूपों में अकाल पुरख को ढूंढता फिरता है। सतिगुरु ऐसे भूले-भटके मनुष्य को विवेक नेत्र प्रदान कर वाह्य जगत से उसकी चेतना का प्रवाह उलट कर उसे अंतर्मुखी बना देता है और ज्ञान-दीप को प्रज्वलित कर देता है। गुरु ही वो साधन है जो सभी क्षेत्रों में मनुष्य की खोज को संभव बनाता है। जिस प्रकार बिना अग्नि उत्पन्न किए दीप नहीं जलता, ताप नहीं मिलता, वैसे ही गुरु के बिना ज्ञान भी नहीं मिलता, मुक्ति और प्रभु-मिलन की बातें तो दूर की हैं।

गुरबाणी के अनुसार गुरु वह शक्ति है जिसकी अनुपस्थिति में मनुष्य सब कुछ होता हुआ भी शून्य है। मनुष्य के अंदर साक्षात प्रभु विद्यमान है। उसकी सुगंधि चारों दिशाओं में फैली हुई है। मनुष्य वाह्य जगत की चकाचौंध से प्रभावित होकर उसी में अपना अस्तित्व खोजने लगता है। भीतर का दर्शन अंतर्मुखी हुए बिना असंभव है और मनुष्य बिना सतिगुरु की मर्जी के अंतर्मुखी बने तो बने कैसे?

श्री गुरु नानक देव जी ऐसे महापुरुष, जो प्रभु का नाम सिखाता है और उससे मिलाता है, पर लाख बार बलिहार जाते हैं।

सतिगुरु का हुक्म मानने वाला, उसके आदेशों का पालन करने वाला ईश्वर का केवल साक्षात्कार ही नहीं करता बल्कि उसमें लीन हो जाता है। गुरु के शब्दों की सहायता से काल का भय भी नष्ट हो जाता है। श्री गुरु नानक देव जी 'गुरु' को 'अलख अभेवा' मानते हैं। उसकी सेवा-मात्र से ही त्रिलोक के रहस्यों का ज्ञान हो जाता है। जब वह किसी पर कृपा करता है और उसे नाम-दान देता है तो वह दूसरों को भी 'अलख अभेवा' बना देता है। सचमुच, जिन्होंने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए अपने मन पर संयम की लगाम डाल ली है, इस भवसागर से उनका निस्तार अवश्यंभावी है।

अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें।

-संपादक।

भक्त शिरोमणि : महात्मा कबीर जी

*-डॉ. जगजीत कौर**

मध्ययुगीन रूढ़िग्रस्त, कर्मकांडी वाह्याडंबरों, अंधविश्वासों एवं संकीर्ण विचार चेतना से ग्रस्त तत्कालीन समाज को अज्ञान के अंध कूप से बाहर निकालकर एकाग्रचित्त, निच्छल, निष्कपट, प्रबुद्ध, शुद्ध हृदय से प्रभु-नाम-सिमरन, सत्य पवित्र आचरण, आडंबर रहित शुद्ध पवित्र जीवन-यापन द्वारा प्रभु-चरणों में लीन होने का महत संदेश देने वाले महात्मा भक्त कबीर जी का योगदान अति महत्त्वपूर्ण है, इसीलिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जिन पंद्रह भक्तों की बाणी को महान गुरु साहिबान के तुल्य आदरणीय स्थान दिया गया है उनमें राग एवं विचार अनुसार बाणी का संकलन-संपादन करते समय पंचम गुरुदेव श्री गुरु अरजन देव जी महाराज ने भक्त कबीर जी की बाणी को शिरोमणि स्थान दिया है। बाणी-रचना की दृष्टि से भी अन्य भक्त महापुरुषों की तुलना में भक्त शिरोमणि संत कबीर जी की बाणी सबसे अधिक है। आदि श्री गुरु नानक देव जी के विचारानुकूल ही भक्त कबीर जी मूर्ति-पूजा का खंडन, बाहरी कर्मकांड का विरोध कर सतसंगति में, सद्गुरु से ज्ञान प्राप्त कर, गुरु-कृपा से मन के विकारों पर नियंत्रण कर, सहज साधना विधि द्वारा मन के पूर्ण योग, शुद्ध पवित्र मन से प्रेमा-भक्ति द्वारा उस घट-घट व्यापी, निराकार, सर्वशक्तिमान, एकमात्र सत्य को प्राप्त करने का मार्ग उद्दिष्ट करते हैं।

यद्यपि भक्त कबीर जी के जन्म, जीवन और मृत्यु सम्बंधी अनेक प्रकार की लोक-कथाएं प्रचलित हैं किंतु फिर भी इतिहासकारों, विचारकों और विद्वानों ने उनकी बाणी-साक्ष्य के आधार पर कुछ निर्णय लिए हैं, जिनके अनुसार इनका जन्म सन् १३९८ ई में हुआ माना गया है। मौकालिफ़ इनका देहांत नवंबर १५१८ ई और कुल आयु लगभग १२० वर्ष मानते हैं। प्रो. साहिब सिंघ इनका देहांत सन् १५१८ से कहीं पहले मानते है। श्री गुरु नानक पातशाह जी ने अपनी उदासियों के दौरान जिन भक्तों की बाणी एकत्रित कर पोथी रूप में सुरक्षित रखी उसमें भक्त कबीर जी की बाणी भी संभालकर रखी।

भक्त कबीर जी के जीवन के सम्बंध में बताया जाता है कि इनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से वाराणसी (बनारस, काशी) में हुआ और लोक-लाज के भय से वो अपने बाल (भक्त कबीर जी) को बनारस के लहरतारा तालाब के पास छोड़ आई, जहां से नीरू-नीमा नामक मुसलमान जुलाहे ने इन्हें उठा लिया, पालन-पोषण किया और पुनः जुलाहा कर्म में लगा दिया। प्रो. साहिब सिंघ इस तथ्य को भी निर्मूल बताते हैं। उनका मानना है कि भक्त कबीर जी की जन्मदात्री माता ब्राह्मणी नहीं थी और न ही इनका पालन-पोषण मुसलमानी माहौल में हुआ। भक्त कबीर जी की विद्वता,

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊंड, सेंट मेरीज़ अकादमी सहारनपुर-२४७००१-(यू. पी.), मो. ९४१२४-८०२२६*

भक्ति-भावना को देख जाति-अभिमानी श्रेष्ठता जताने और अपना पक्ष सबल करने हेतु इन्हें ब्राह्मण बताते हैं। प्रो. साहिब सिंघ ने भक्त कबीर जी की बाणी, बाणी की शब्दावली, जिसमें ब्राह्मणों की गर्वपूर्ण अहंकार वृत्ति एवं ब्राह्मणत्व पर घमंड को फटकारा गया है और दार्शनिक विचार पक्ष में हिंदू मत से सम्बंधित विचार शैली का जिस प्रकार प्रयोग हुआ है, इससे इन्हें स्पष्ट ही, जिन्हें तत्कालीन समाज 'निम्न-शूद्र' कहकर फटकारता था, 'निम्न' हिंदू जाति का जुलाहा माना है। भक्त कबीर जी का कथन है :

तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥
हम कत लोहू तुम कत दूध ॥

(पन्ना ३२४)

तात्पर्य : जाति-अभिमानी ब्राह्मण तुम स्वयं को ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न ब्रह्म-विद्या-विद् ब्राह्मण कहते हो और हमें शूद्र। क्या तुम्हारी रगों में दुग्धवत शुद्धता है और हमारी रगों में साधारण रक्त? तुम हमसे श्रेष्ठ कैसे हो? भक्त कबीर जी ने समझाया कि तुम ब्राह्मण हो, मैं काशी का जुलाहा हूं, पर मानवीय स्तर पर हम सब एक हैं :

जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥

(पन्ना ३२४)

भक्त कबीर जी जिस युग में हुए वह युग अत्यंत व्यापक रूप से संघर्ष का युग था। इस समय विभिन्न संस्कृतियों का टकराव, धर्म, दर्शन, सामाजिक मान्यताओं, रीति-रिवाज, मर्यादा का टकराव था। दो मुख्य धर्मों-- हिंदू और मुसलमान की संस्कृति का टकराव तो था ही, स्वयं हिंदू समाज में ही अनेक धार्मिक विचारधाराओं, दार्शनिक सिद्धांतों, सामाजिक मान्यताओं का भी विरोध था। वैदिक धर्म का विरोध स्वयं जैन और बौद्ध धर्म कर रहे थे। प्राचीन चले आते वैदिक चिंतन का, जिसमें हिंसापूर्ण यज्ञ, हवन, मंत्रोच्चारण आदि और कट्टर वर्ण-व्यवस्था थी, का विरोध जैन और बौद्ध मत ने किया। यद्यपि प्रारंभ में वर्ण-व्यवस्था का आधार कर्म था, किंतु बाद में जन्म से जाति निर्णय होने लगा। इससे अत्यंत भ्रष्ट, आचरणहीन 'ब्राह्मण' का भी समाज में सर्वोपरि स्थान रहा और अत्यंत निष्ठापूर्ण सेवा-कर्म करने वाला 'शूद्र' उपेक्षा और घृणा का पात्र रहा। निम्न वर्ग व स्त्री जाति की दुर्गति संघर्ष का कारण बनी। देश जातियों, उप-जातियों में बंटा और प्रत्येक जाति में गर्व की भावना प्रबल रही। इधर तांत्रिक शिव-शक्ति की पूजा करते; मांस-भक्षण, सुरापान व्यभिचार को ही साधना मानते। हिंदुओं में मूर्ति-पूजा भी प्रचलित थी, जिसमें अपने-अपने देवताओं और पूजन-विधि को श्रेष्ठ मानना शामिल था। सिद्धों और नाथ योगियों ने अलग आडंबर फैला रखा था। मुसलमान एकेश्वरवाद को मानते, किंतु नवदीक्षित हिंदुओं को वे कई प्रकार के गंडा, ताबीज, धागा आदि फकीर-पीर-पूजन, मढ़ी-पूजा, क़ब्रों की पूजा आदि में उलझाकर पथ-भ्रष्ट कर रहे थे। पंडित, मुल्ला और योगी तीनों ही अशिक्षित जनसमूह को भ्रमित कर रहे थे, इसीलिए तो श्री गुरु नानक साहिब ने कहा-- *"तीने ओजाड़े का बंधु ॥"* ऐसे में श्री गुरु नानक पातशाह ने जो निर्मल ज्ञान का मार्ग दिखाया उसी के अनुसार भक्त कबीर जी की बाणी भी सुंदर मार्गदर्शन करती है। भक्त कबीर जी ने भी धर्म में प्रवेश कर चुकी गलत मान्यताओं, कुरीतियों, बाहरी आडंबरों और पाखंडों का विरोध किया तथा फैल रहे दार्शनिक, सामाजिक, धार्मिक संघर्ष के मध्य से

मानवता को पाखंडहीन, साफ-सुधरे ज्ञान वाला और प्रभु-भक्ति का प्रेममय मार्ग दर्शाया। सर्वप्रथम तो भक्त कबीर जी ने किसी की भी निंदा करने से पूर्व आत्मविश्लेषण करने पर बल दिया। दूसरों को बुरा कहने से पूर्व आत्मचिंतन करो :

कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ ॥
जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ ॥
(पन्ना १३६४)

धर्म-ग्रंथों को लेकर आपसी विवाद करने के बजाय आत्मचिंतन करें तो पाएंगे कि ब्रह्म, अकाल पुरख, परमात्मा तो एक ही सत्य है, जो संपूर्ण सृष्टि में, प्रत्येक जीव में, कुदरत के ज़र्रे-ज़र्रे में विद्यमान है। भक्त कबीर जी का कथन है :

बेद कतेब इफतरा भाई दिल का फिकरु न जाइ ॥
टुकु दमु करारी जउ करहु हाजिर हजूरि खुदाइ ॥
बंदे खोजु दिल हर रोज न फिरु परेसानी माहि ॥ . . .
अलाह पाकं पाक है सक करउ जे दूसर होइ ॥
कबीर करमु करीम का उहु करै जानै सोइ ॥
(पन्ना ७२७)

इसलिए सच्चे मन से प्रभु का नाम-सिमरन करें; प्रभु-नाम-सिमरन का ही धन-संचय करें। इस धन से जो परम सुख प्राप्त होता है वह अन्य मायावी धन-पदार्थों में नहीं है। यही सच्चा धन है :

अगनि न दहै पवनु नही मगनै तसकरु नेरि न आवै ॥
राम नाम धनु करि संचउनी सो धनु कत ही न जावै ॥
हमरा धनु माधउ गोबिंदु धरणीधरु इहै सार धनु कहीऐ ॥
जो सुखु प्रभ गोबिंद की सेवा सो सुखु राजि न लहीऐ ॥ *(पन्ना ३३६)*

गफलत की नींद में सोए प्राणी को वे बार-बार झिंझोड़ते हैं :

कबीर सूता किआ करहि उठि कि न जपहि मुरारि ॥
इक दिन सोवनु होइगो लांबे गोड पसारि ॥१२८॥
कबीर सूता किआ करहि बैठा रहु अरु जागु ॥
जा के संग ते बीछुरा ता ही के संगि लागु ॥१२९॥
(पन्ना १३७१)

प्रभु-नाम-सिमरन के बिना पशु-जन्म भोगना पड़ेगा :

चारि पाव दुइ सिंग गुंग मुख तब कैसे गुन गईहै ॥
ऊठत बैठत ठेगा परिहै तब कत मूड लुकईहै ॥
हरि बिनु बैल बिराने हुईहै ॥
फाटे नाकन टूटे काधन कोदउ को भुसु खईहै ॥ *(पन्ना ५२४)*

जीवन नाशवान है, इसलिए समय रहते प्रभु-सिमरन में जीवन सार्थक करो :

दिन ते पहर पहर ते घरीआं आव घटै तनु छीजै ॥
कालु अहेरी फिरै बधिक जिउ कहहु कवन बिधि कीजै ॥ *(पन्ना ६९२)*
कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोडहु मन के भरमा ॥
केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु एक की सरनां ॥ *(पन्ना ६९२)*

एकमात्र सत्य पारब्रह्म परमात्मा की शरण में आने के लिए बाहरी भेख, व्रत-साधना एवं फोकट की हिंदु-मुसलिम साधना-विधियों के विवाद से निर्लिप्त रहने की प्रेरणा भक्त कबीर जी देते हैं :

बुति पूजि पूजि हिंदू मुए तुरक मुए सिरु नाई ॥

ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥ . . .
बेद पड़े पड़ि पंडित मूए रूपु देखि देखि नारी ॥
राम नाम बिनु सभै बिगूते देखहु निरखि सरीरा ॥
हरि के नाम बिनु किनि गति पाई कहि उपदेसु कबीरा ॥ *(पन्ना ६५४)*

दरअसल ऐसे पाखंडी, भेखधारी, जिन्होंने *"माथै तिलकु हथि माला बानां ॥ लोगन रामु खिलउना जानां ॥* पूर्णतः भ्रमित साधक हैं। ऐसे साधकों के सम्बंध में भक्त कबीर जी का विचार है :
गज साढे तै तै धोतीआ तिहरे पाइनि तग ॥
गली जिन्हा जपमालीआ लोटे हथि निबग ॥
ओइ हरि के संत न आखीअहि बानारसि के ठग ॥
ऐसे संत न मो कउ भावहि ॥
डाला सिउ पेडा गटकावहि ॥ *(पन्ना ४७६)*

इस प्रकार भक्त कबीर जी जहां *"हिरदै कपटु मुख गिआनी"*, फोकट ज्ञान की चर्चा करने वालों से समाज को आगाह करते हैं वहीं उस वर्ग को भी बताते हैं जो भावना-शून्य है; रोज़ा, नमाज़, बांग, सिजदा करने में व्यस्त है। *"कबीर मुला मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ ॥"* द्वारा भक्त कबीर जी उन्हें हृदय से परमात्मा से प्रेम करने की सलाह देते हैं।

साधना पक्ष में जहां भक्त कबीर जी ब्रह्म, जीव, जगत, माया, मुक्ति जैसे विषयों पर विचार व्यक्त करते हैं, वहीं भक्ति-साधना के पक्ष में वे सतिगुरु की शरण में आकर, ज्ञान की प्राप्ति कर, सतसंगति में मिल-बैठकर, विकारों पर विजय प्राप्त करने की बात करते हैं, जिसमें वे केवल प्रेम सहित प्रभु-नाम-सिमरन को ही प्रभु-प्राप्ति का साधन मानते हैं। प्रभु-प्रेम के मार्ग पर चलते हुए वे इतनी भावतल्लीनता की स्थिति पर पहुंच जाते हैं कि जीव और परमात्मा की मिलन-उत्कंठा की अनेक सरस और माधुर्य रस पूर्ण अभिव्यक्तियां प्रस्तुत करते हैं। माधुर्य रस में भीगी भक्त कबीर जी की प्रभु-प्रेम के प्रति व्यक्त की गई भावभीनी व्यंजना को कतिपय विद्वानों ने रहस्यवाद का नाम दिया है। स्वयं को प्रिय की बहुरिआ और प्रभु परमेश्वर को पति मानकर भक्त कबीर जी ने ऐसी हृदय विदारक अनूठी अभिव्यंजना दी है जो उन्हें एक अत्यंत उच्च कोटि के काव्य स्रष्टा के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

अज्ञान अंधकार में भटकी जीवात्मा को सौभाग्य से जब सतिगुरु की शरण प्राप्त हो गई और जब गुरुदेव ने शब्द-बाण मारा तब :
कबीर सतिगुर सूरमे बाहिआ बानु जु एकु ॥
लागत ही भुइ गिरि परिआ परा करेजे छेकु ॥
(पन्ना १३७४)

पूर्ण काया पलट हो गई :
कबीर गूंगा हूआ बावरा बहरा हूआ कान ॥
पावहु ते पिंगुल भइआ मारिआ सतिगुर बान ॥
(पन्ना १३७४)

ज्ञानेंद्रिय-कर्मेंद्रिय सबका विषय बदल गया, मुख गूंगा हो गया, अपशब्द नहीं बोलता; कान बहरे हो गए, पर-निंदा नहीं सुनते, पैरों से उस मार्ग पर नहीं चलता जो बुरे कर्मों की ओर ले जाते थे, बस, संपूर्ण चेतना प्रभु-प्रेम में सराबोर हो गई है। अभिलाषा है तो मात्र प्रभु-मिलन की :
पंथ निहारै कामनी लोचन भरी ले उसासा ॥
उर न भीजै पगु न खिसै हरि दरसन की आसा ॥ *(पन्ना ३३७)*

दर्शन की अभिलाषा, मिलन की उत्कंठा, लोच-लालसा, असीम विरहबेधित कर देती है :
कबीर बिरहु भुयंगमु मनि बसै मंतु न मानै कोइ ॥
राम बिओगी ना जीऐ जीऐ त बउरा होइ ॥
(पन्ना १३६८)

पछतावा हो रहा है कि माया के आकर्षणों में पड़कर जीवत्मा प्रिय प्रभु को भुला बैठी :

मेरी मति बउरी मै रामु बिसारिओ ॥
किन बिधि रहनि रहउ रे ॥
सेजै रमतु नैन नही पेखउ इहु दुखु का सउ कहउ रे ॥ (पन्ना ४८२)

दुखियारी जीवात्मा की वेदना प्रभु सुन लेता है। अतीव प्रसन्नता की घड़ियां बन आई हैं। मंगलमय बेला आ बनी है। जीवात्मा और परमात्मा का रहस्यमय आध्यात्मिक विवाह सम्पन्न हो रहा है :

गाउ गाउ री दुलहनी मंगलचारा ॥
मेरे ग्रिह आए राजा राम भतारा ॥१॥रहाउ॥
नाभि कमल महि बेदी रचि ले ब्रहम गिआन उचारा ॥ . . .
सुरि नर मुनि जन कउतक आए कोटि तेतीस उजानां ॥
कहि कबीर मोहि बिआहि चले है पुरख एक भगवाना ॥३॥ (पन्ना ४८२)

इस प्रकार सतिगुरु जी के शबद-ज्ञान की कृपा से और प्रभु-परमात्मा से असीम प्रेम की दृष्टि प्राप्त कर यह सौभाग्य सुख का अवसर जीवात्मा को प्राप्त हुआ है; जब उसने अपना तन व मन प्रभु-प्रेम के रंग में रंग लिया है, दिव्य गुणों को मन में धारण कर लिया है, वाह्य पदार्थों में भटकने से मन को रोककर दया, धर्म आदि दिव्य गुणों को जीवन के संगी-साथी बना लिया है। भाग्य उद्य हुआ, परमात्मा से भांवरे पड़ रही हैं। जगत का स्वामी कृपावान हो, दूल्हा बनकर आया है। प्रभु की कृपा बनी रहे, विवाह में स्थायित्व रहे, जीवात्मा ने निरंतर यही अरदास करनी है। हे प्रभु! कृपावान हुए हो तो इसी तरह इस पूर्ण समर्पिता दीन-हीन जीव स्त्री को अपने कंठ से, अपने चरणों से लगाए रखना :

करवतु भला न करवट तेरी ॥
लागु गले सुनु बिनती मेरी ॥
हउ वारी मुखु फेरि पिआरे ॥
करवटु दे मो कउ काहे कउ मारे ॥रहाउ॥
जउ तनु चीरहि अंगु न मोरउ ॥
पिंडु परै तउ प्रीति न तोरउ ॥
हम तुम बीचु भइओ नही कोई ॥
तुमहि सु कंत नारि हम सोई ॥
कहतु कबीरु सुनहु रे लोई ॥
अब तुमरी परतीति न होई ॥ (पन्ना ४८४)

उपहार ऐसा जो जीवन भर याद रहे

यह बात हर एक आम व खास व्यक्ति के मन को कचोटती रहती है कि वो अपने मित्रों, सम्बंधियों को यदि उपहार दे तो क्या दे? किसी के जन्म-दिन आदि या किसी विशेष दिवस पर किसी को कुछ भेंट किया जाए तो ऐसा उपहार हो जिसे स्वीकार करने वाला जिंदगी भर याद रखे। इसके लिए अब ज्यादा सोचने और चिंता करने की जरूरत नहीं है। जीवन भर का उपहार है-- 'गुरमति ज्ञान'। उपहार भी ऐसा कि जब हर माह आपके मित्र आदि के घर पर जाकर डाकिया 'गुरमति ज्ञान' की प्रति थमाएगा तो आपका मित्र हर माह आपका शुक्रिया करता नहीं थकेगा। आप अपने मित्र या किसी सम्बंधी को केवल १००/- रुपये में उपहारस्वरूप 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बना दीजिए और हासिल कीजिए अपने मित्र की जीवन भर की खुशियां। यह सौदा बेहद सस्ता एवं लाभकारी रहेगा। आज ही मनीआर्डर या बैंकड्राफ्ट के जरिए चंदा भेजकर अपने मित्र या सम्बंधी को 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बनाकर उसे इस बहुमूल्य 'उपहार' से निवाजें।

-संपादक।

गुरु के बाग का मोर्चा

-सिमरजीत सिंघ*

गुरमति के स्रोत गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध के लिए खालसा पंथ समय-समय पर जरूरत के अनुसार धर्मशालिए, मसंद, महंत आदि की संस्थाएं तथा कमेटियां बनाता आया है तथा जरूरत के अनुसार परिवर्तन भी करता रहा है, किंतु खालसा पंथ ने कभी भी गुरमति-विरोधी शक्तियों या सरकारी दख़ल को बर्दाश्त नहीं किया।

गुरुद्वारों की सेवा-संभाल का कार्य गुरु साहिबान के समय से ही धर्मशालिए, मसंद, उदासी, महंत तथा निर्मले करते आ रहे थे। वे सब गुरु साहिब द्वारा बताई गई रहित मर्यादा पर ही ज़ोर देते थे। १७१६ ई से १७९९ ई तक लगभग सभी गुरुद्वारों की सेवा-संभाल इनके हाथों में आ गई थी।

दूसरी तरफ इन गुरुद्वारा साहिबान को सिक्ख शक्ति का स्रोत जानकर खालसे को इनसे वंचित करने की कोशिश भी शुरू से ही की जाती रही है। सर्वसांझीवालता के प्रतीक श्री हरिमंदर साहिब, श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर को समय-समय की सरकारें निशाना बनाती रही हैं।

शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य-काल के समय गुरुद्वारा साहिब के निर्माण की ओर विशेष ध्यान दिया गया, किंतु उस समय इनका प्रबंध महंतों, पुजारियों आदि के हाथ में ही रहा, जो कि गुरुद्वारा साहिबान के सुधार में कोई खास दिलचस्पी नहीं रखते थे। १८३९ ई में महाराजा रणजीत सिंघ के अकाल चलाने के बाद पंजाब की राजगद्दी प्राप्त करने हेतु अंधेरगर्दी मच गई, कत्ल-ओ-गारत शुरू हो गई। इन हालात के बारे में शाह मुहम्मद ने अपनी आंखों से देखकर लिखा है :

जेहड़ा बहे गद्दी उहनूं मार लैंदे,
नहीं छड्डिआ साध ते संत मीआं।

ऐसी स्थिति में सिक्खी का प्रचार कैसे हो सकता था? कुछ समय बाद अंग्रेज भी मुगल हाकिमों की तरह गुरुद्वारा साहिबान को सिक्ख-शक्ति का केंद्र मानकर उसमें दख़लंदाज़ी करने लगे। उन्होंने महंतों को अपने साथ मिलाकर उनकी तरफदारी करनी शुरू कर दी। अंग्रेज राज्य के पंजाब में स्थापित होने के बाद उठी धार्मिक, शैक्षणिक एवं राजनीतिक लहरें सिक्खों में बड़ी जागृति लाईं तथा उनके लिए यह बर्दाश्त करना मुश्किल था कि सरकार या सरकार के महंत एवं पुजारी उनके धर्म-स्थानों तथा अन्य आश्रमों पर काबिज़ रहें तथा निजी लाभ के लिए इनका प्रयोग करें।

अंग्रेजों की शह के कारण गुरुद्वारों के प्रबंधक महंतों, पुजारियों में कुरीतियां आईं तथा अंधेरगर्दी शुरू हो गई जिसके कारण रहित में पक्के तथा सूझवान सिंघों ने जरूरत महसूस की कि गुरुद्वारों को अपमान से बचाया जाए। सभी गुरुद्वारा साहिबान महंतों के कब्ज़े में आ गए थे

*संपादक, गुरमति ज्ञान/गुरमति प्रकाश

तथा उन्होंने अपनी मनमानियां करनी शुरू कर दी थीं। श्री दरबार साहिब पर अंग्रेजों के पिट्ठुओं का कब्ज़ा हो गया था, जिनके द्वारा कामागाटामारू के शहीदों के विरुद्ध पतित होने का फरमान जारी किया गया। जलियां वाले बाग के खूनी साके के दोषियों को श्री अकाल तख़्त साहिब से पुजारियों ने सिरोपा दिया। प्रबंधकों ने गुरुद्वारा साहिब को अपनी निजी जायदाद के तौर पर प्रयोग करना और इन पवित्र स्थानों की पवित्रता को भंग करना शुरू कर दिया। सूझवान सिक्खों के लिए यह एक चिंताजनक विषय था। उन्होंने जगह-जगह जाकर सिक्खों को जागृत करना शुरू कर दिया। गुरुद्वारों के प्रबंध में सुधार करने सम्बंधी एक दीवान गांव धारोवाली में भी किया गया।

गुरुद्वारों के प्रबंध में सुधार के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर ३० अप्रैल, १९२१ ई को पंजीकृत करवाई गई तथा नियम बनने के बाद इसका नया चुनाव जुलाई, १९२१ ई में किया गया। चुने हुए सदस्यों की कुल संख्या का पांचवा हिस्सा १४ अगस्त को नामज़द किया गया तथा सम्पूर्ण नई कमेटी की एकत्रता २७ अगस्त, १९२१ ई को हुई।

गुरुद्वारा सुधार कमेटी ने बड़े उत्साह तथा धर्म-भाव से गुरुद्वारों के सुधार का कार्य प्रारंभ किया। इस सुधार के काम में अनेकों विघ्न पड़े जिसके कारण सिक्ख पंथ को बहुत कुर्बानियां देनी पड़ीं।

श्री दरबार साहिब, श्री तरनतारन साहिब को सिंघों ने भ्रष्ट महंतों से आज़ाद करवा लिया था, चाहे इसके लिए उनको बहुत संघर्ष करना पड़ा तथा घोर यातनायें सहन करनी पड़ीं। महंतों से हुए इस संघर्ष में भाई हज़ारा सिंघ शहीदी पा गए थे। इस घटना को सुनकर संगत दूर-दूर से आ रही थी। घुक्केवाली के गांव तेड़े के सिंघ भी जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर के पास पहुंचे।

श्री अमृतसर से अजनाला को जाती सड़क पर श्री अमृतसर से १३-१४ किलोमीटर की दूरी पर से उत्तर-पूर्व दिशा में तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित गांव घुक्केवाली (ज़िला श्री अमृतसर) में गुरुद्वारा साहिब 'गुरु का बाग' है। इस स्थान पर पहले पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने तथा बाद में नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने चरण रखे। गुरुद्वारा साहिब के पास ही गुरुद्वारा साहिब की मलकियत वाली ज़मीन है जो किसी समय में बाग था, जिसको 'गुरु का बाग' कहा जाता है।

गांव घुक्केवाली से आई संगत ने गुरु के बाग पर काबिज़ महंत सुंदर दास की करतूतें बताईं कि वह शराब पीने का आदी है तथा उसने एक विधवा स्त्री, जो शराब पीने की आदी है, को बिना अनंद कारज किए अपने घर में रखा हुआ है। उसकी इन नीच हरकतों से संगत बहुत परेशान थी। संगत ने जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर को विनती की कि वो महंत सुंदर दास से गुरुद्वारा साहिब को आज़ाद करवाने में उनकी मदद करें। महंत अपने दुराचरण के कारण इलाके में बदनाम हो चुका था।

संगत की मांग पर जत्थेदार करतार सिंघ की अगुआई तले ५० सिंघों का एक जत्था ३१ जनवरी, १९२१ ई को श्री अमृतसर से तांगे पर सवार होकर राजासांसी पहुंच गया तथा वहां से पैदल ही घुक्केवाली गांव की तरफ चल पड़ा। इलाके के सिक्खों को जत्थे के आने की पहले से ही ख़बर थी, इसलिए वे एक दिन पहले ही पहुंच गए थे। रास्ते में जत्थे के साथ और भी सिंघ मिलते गए। सिंघों का यह जत्था शाम को

चार बजे के लगभग घुक्केवाली गांव पहुंच गया। चार-पांच सौ के लगभग संगत गुरुद्वारा साहिब में इकट्ठी हो गई थी।

महंत ने भागदौड़ शुरू कर दी। उसने रात को ही अपने आदमी भेजकर स. अमर सिंघ झबाल को बुला लिया। स. अमर सिंघ झबाल ने जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर से मिलकर महंत द्वारा की हुई कुरीतियों की उससे माफी मंगवा दी तथा आगे से सारा काम गुरु-मर्यादा में रहकर करने का पक्का वादा लिखवाकर दे दिया। महंत ने लिखकर दे दिया कि मैं गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के हुक्म अनुसार ही गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध करूंगा। महंत को संगत ने निम्नलिखित शर्तें मानने पर महंत बने रहने की आज्ञा दे दी :

१. महंत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा सिक्खों की नामज़द कमेटी के अधीन काम करेगा।

२. वह अमृतधारी सिंघ सजेगा।

३. वह किसी एक स्त्री से शादी कर सकता है, परंतु वह किसी स्त्री से नाजायज सम्बंध नहीं रखेगा।

संगत में से एक प्रबंधकीय कमेटी बनायी गयी तथा सारा प्रबंध उस कमेटी के सुपुर्द कर दिया गया। उस कमेटी में भाई दान सिंघ वछोआ, स. अमर सिंघ झबाल, भाई इंदर सिंघ राजीआं, स. नरैण सिंघ घुक्केवाली, स. गंडा सिंघ जगदेव, स. अमर सिंघ खतराए कलां, भाई आतमा सिंघ सहिंसरा, स. अरजन सिंघ भोइवाल, भाई भगवान सिंघ जस्सड़ां तथा महंत सुंदर दास को शामिल किया गया। भाई दान सिंघ वछोआ को कमेटी का अध्यक्ष तथा भाई इंदर सिंघ को सचिव नियुक्त किया गया। महंत द्वारा लिखी गई चिट्ठी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सुपुर्द कर दी गई। महंत ने श्री अमृतसर साहिब जाकर खंडे की पाहुल प्राप्त कर ली। इसके बाद उसका नाम जोगिंदर सिंघ रखा गया। उसने रक्खे गांव की जन्मी-पली ईशरी से अनंद कारज करवा लिया, जिसका खंडे की पाहुल लेने के बाद नाम गिआन कौर रखा गया।

महंत ने फरवरी, १९२२ ई. में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से दोबारा समझौते की बात चलाई। उसने स. तेजा सिंघ समुंदरी, स. बाल सिंघ एवं स. गुरचरन सिंघ द्वारा सालसी करने तथा गुरुद्वारा गुरु के बाग का सारा कब्ज़ा देने के बदले १२० रुपये मासिक पेंशन तथा रिहायश के लिए श्री अमृतसर शहर में मकान लेना प्रवान करके सारा प्रबंध कमेटी को देना प्रवान कर लिया।

महंत बहुत चालाक था। उसने अपनी लिखी चिट्ठी किसी के माध्यम से एक लिपिक को ५०० रुपये देकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कार्यालय में से चोरी करवा ली तथा गुरुद्वारा साहिब में सेवा करते सेवादारों के साथ दुर्व्यवहार करना शुरू कर दिया।

८-९ अगस्त, १९२२ ई. को लंगर के लिए गुरु के बाग में से लकड़ियां लेने गए सिंघों से झगड़ा बढ़ गया। पुलिस ने इन पांच सिंघों का चलान कर दिया और इसके साथ ही गुरु का बाग का मोर्चा शुरू हो गया। मोर्चे के लिए सिंघों की भर्ती शुरू हो गई। १०० सिंघों का एक जत्था तैयार हो गया जो गुरुद्वारा साहिब की ओर चल पड़ा। यह जत्था रात को खन्ने लुबाणियां बिताकर जब पास से गुजरती डेक से गुजरा तो वहां के काले गांव के एक बच्चे बंता सिंघ को अचानक सांप ने डस लिया। जत्थे के सदस्यों ने उसको वापिस भेजने की बहुत कोशिश की किंतु वह नहीं माना। मुहम्मदपुर गांव के पास

पहुंचकर वह बेहोश हो गया। संगत ने उसको इसी गांव में छोड़ दिया। गांव की संगत ने उसकी बहुत सेवा की जिससे वह जल्दी ठीक हो गया।

चूहड़काणा से सिंघों का एक जत्था श्री अमृतसर पहुंच गया जिसने रात्रि को गुरुद्वारा बाबा अटल राय साहिब में अपना पड़ाव किया। अगली सुबह यह जत्था भाई मान सिंघ हंभो वाला की जत्थेदारी तले गुरु का बाग को रवाना हो गया, जिसको रास्ते में ही गिरफ्तार कर लिया गया। २२ अगस्त से रोज़ाना लगभग १०० सिंघों का जत्था श्री अकाल तख़्त साहिब से गुरु का बाग को जाना शुरू हो गया। श्री अमृतसर पुलिस का डिप्टी सुप्रिंटेंडेंट मिस्टर बी. टी. था। उसने अपने साथ कुछ अफसर तैनात किए हुए थे। वे सभी गुरु का बाग पहुंचकर गुरुद्वारा साहिब को घेरा डालकर खड़े हो गए। भादों की अमावस का दिन होने के कारण बेशुमार संगत गुरुद्वारा साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के दर्शन को आ रही थी जिसको रास्ते में रोककर लाठियों से बुरी तरह से पीटा गया तथा इनमें से जो बेहोश हो गए उनको केशों से पकड़कर, घसीटकर पास लगते गंदे पानी के पोखर में फेंक दिया गया।

सरकार ने महंत से मिलकर लंगर के लिए लकड़ियां लेने गए सिंघों पर चोरी का केस दर्ज कर दिया। सिंघ इसके विरोध के लिए हर रोज़ लकड़ियां काटने जाते तो पुलिस उनको गिरफ्तार कर लेती। २५ अगस्त, १९२२ ई तक सिंघों की गिनती २१० हो गई थी। सिंघों की गिनती दिन-ब-दिन बढ़ती जाती थी। सिंघों के इकट्ठ को देखकर सरकार ने और सख़्ती करने का मन बना लिया। पुलिस आपे से बाहर हो गई। बी. टी. ने अजनाला के तहसीलदार ज़हूर-उद-दीन तथा डिप्टी सुप्रिंटेंडेंट पुलिस लाला शाम सिंघ को अपने साथ ले लिया। पुलिस ने शांति से बैठी संगत को लाठियों से पीटना शुरू कर दिया। पुलिस के रवैये को देखते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने जख़्मियों के इलाज के लिए चार डॉक्टर-- डॉ. भगवान सिंघ, डॉ. प्रताप सिंघ, डॉ. संत राम तथा डॉ. किरपा राम को भेजा।

२६ अगस्त को पट्टी वाले बाबा केहर सिंघ का जत्था ३६ सिंघों सहित लकड़ियां काटने के लिए गया। उसकी पुलिस ने बुरी तरह मार-पीट की। मिस्टर बी. टी. को इनके आने का पता चला तो उसने बाबा जी को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा महंत के बीच समझौता करवाने की विनती की। बाबा जी के सहमति देने पर उसने बाबा जी को तहसीलदार तथा महंत के साथ श्री अमृतसर जाने के लिए अपनी कार दे दी। बाबा जी ने शर्त रख दी कि वे घर से अरदास करके निकले थे कि लंगर के लिए लकड़ियां काटकर ही वापिस आएंगे, इसलिए वे पहले अपना प्रण पूरा करेंगे, फिर कहीं और जाएंगे। पुलिस अफसर मि. बी. टी. ने उनको लकड़ियां काटने की आज्ञा दे दी। बाबा केहर सिंघ अपना प्रण निभाकर उनके साथ चल पड़े। श्री अमृतसर पहुंचकर इन मुखियों की मीटिंग हुई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा पुलिस की ज्यादतियों के विरुद्ध श्री अकाल तख़्त साहिब पर मीटिंग की गई। इस मीटिंग के बारे में पुलिस को पता चल गया। इसी दिन बाबा केहर सिंघ सहित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के ८ मुख्य सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया।

गुरु के बाग के मोर्चे में फौजी पेंशनियों का भी एक जत्था गिरफ्तार हुआ, जिसके

मुखिया सूबेदार अमर सिंघ गांव धालीवाल, रियासत कपूरथला तथा उप-जत्थेदार मास्टर चतर सिंघ हवलदार, पलटन नंबर १९ था। इस जत्थे को नवाब असलम हयात ख़ान मजिस्ट्रेट श्री अमृतसर द्वारा ढाई-ढाई वर्ष की सख़्त कैद तथा एक-एक सौ रुपये जुर्माने की सज़ा दे दी गई।

२९ अक्तूबर, १९२२ ई को श्री अमृतसर से रात की गाड़ी द्वारा फौजी जत्थे को अटक जेल में भेजने का प्रबंध किया गया। यह गाड़ी गुज्जरांवाला पहुंची। वहां की संगत को किसी तरह जत्थे के जाने की सूचना मिल गई थी। गुज्जरांवाला स्टेशन पर भाई अमरीक सिंघ, डॉ. महां सिंघ, स. नरायण सिंघ वकील, मास्टर छहिबर सिंघ सहित भारी गिनती में संगत ने जत्थे का स्वागत किया; फल, मिठाई तथा अन्य कई वस्तुएं भेंट कीं।

जिस गाड़ी में फौजी सिंघ अटक को जा रहे थे। वो स्पेशल थी। यह गाड़ी ३० अक्तूबर दोपहर के वक्त रावलपिंडी पहुंच गई। गुज्जरांवाला से ही इसकी ख़बर श्री पंजा साहिब भी पहुंच गई थी। वहां संगत ने गाड़ी में जा रहे वीरों को लंगर छकाने की योजना बनाई तथा तैयारी शुरू कर दी। जब कुछ मुखिया सिंघों ने स्टेशन मास्टर से पूछा तो उसने कहा, "गाड़ी यहां नहीं रुकेगी, सीधी अटक जाएगी।" यह सुनकर श्री पंजा साहिब की संगत को बहुत निराशा हुई। उस वक्त भाई प्रताप सिंघ एवं भाई करम सिंघ ने संगत को कहा, "गाड़ी जरूर खड़ी होगी। हम अपने वीरों (भाई) को लंगर छकाकर ही आगे जाने देंगे।" दोनों ने जान वारकर वीरों की सेवा करने का मन बना लिया। प्रतिज्ञा बड़ी कठिन थी। उन्होंने परमेश्वर के चरणों में अरदास की कि वे उनकी प्रतिज्ञा को पूरा करें। वे संगत समेत रेलवे स्टेशन श्री पंजा साहिब (हसन अब्दाल) पहुंच गए।

रावलपिंडी से गाड़ी चलकर श्री पंजा साहिब स्टेशन के पास पहुंच चुकी थी। स्टेशन मास्टर ने लाईन क्लीयर का इशारा दिया हुआ था। गाड़ी रुकने की कोई आशा नहीं थी। यह देखकर भाई प्रताप सिंघ तथा भाई करम सिंघ दोनों रेलवे लाईन पर लेट गए, और भी कई सिंघों ने यत्न किया, परंतु इन दोनों ने उनको रोका। गाड़ी के ड्राइवर ने रेलवे लाईन पर लेटे सिंघों को देखकर बहुत विसिल दी, परंतु दोनों ने कोई परवाह न की। वे मृत्यु से निर्भय तथा देह अध्यास से ऊंचे हो चुके थे। वे *"मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु"* की अवस्था को प्राप्त कर चुके थे।

विक्टर ह्यूगो का कथन है : "ज़िंदगी चाहे कितनी शानदार क्यों न हो परंतु वह तवारीखी फैसले के लिए सदैव मृत्यु का इंतजार करती है।"

भाई प्रताप सिंघ तथा भाई करम सिंघ ने शहीदी प्राप्त करने का तवारीखी फैसला कर लिया था। रेलगाड़ी तेजी से आ रही थी। दोनों सच्चे तथा संकल्पी गुरसिक्ख रेलवे लाईन पर लेटे हुए थे। आखिर इंजन उनकी हड्डियों को चूर करता हुआ दोनों के ऊपर से गुज़र गया। दोनों के शरीर कुचले गए। वे सख़्त जख़्मी हो गए। गाड़ी खड़ी हो गई। रेलवे लाईन के दोनों तरफ खड़ी संगत इस दर्दनाक दृश्य को देखकर त्राहि-त्राहि कर रही थी। जब उन दोनों को गाड़ी के पहियों के नीचे से निकाला गया तो वे सिसक रहे थे। डिप्टी कमिश्नर को इसकी सूचना मिली। वह मौके पर पहुंच गया।

जब संगत ने दम तोड़ रहे सिंघों की संभाल करने का यत्न किया, उस वक्त भाई

प्रताप सिंघ एवं भाई करम सिंघ ने कहा, "पहले गाड़ी में बैठे वीरों की सेवा कर लो फिर हमारी संभाल कर लेना।"

उनकी इच्छा अनुसार गाड़ी में जा रहे सिंघों को लंगर बरता दिया गया। संगत भाई प्रताप सिंघ एवं भाई करम सिंघ को जख़्मी हालत में गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब में लेकर आई, जहां वे पांच भूतक शरीर त्यागकर आत्मिक तौर पर गुरु-चरणों में जा विराजे। श्री पंजा साहिब में ही हज़ारों की संख्या में संगत ने दोनों शहीदों का बड़े वैराग्य एवं प्यार-सत्कार से अंतिम संस्कार किया।

सिंघों के जत्थे १७ नवंबर तक गुरु का बाग में जाते रहे। ये पैदल जत्थे के सदस्य आम तौर पर चार-चार लाइनों में सड़क के बाएं हाथ चलते जाते थे, ताकि आने-जाने वाले को कोई मुश्किल न हो। इन जत्थों को गुरुद्वारा साहिब में पहुंचने से पहले ही पुलिस रोक लेती। पुलिस को देखते ही वे 'सतिनाम-वाहिगुरु' का जाप या कीर्तन शुरू कर देते। इसी स्थिति में ही पुलिस इन पर लाठियां बरसाने लग जाती। लाठियों की मार से नीचे गिरे सिंघों पर पुलिस अपने घुड़सवार सिपाहियों को छोड़ देती जिसके साथ उनके पालतू कुत्ते भी होते थे। थक-हारकर सरकार ने इस संकट को ख़त्म करने के लिए सर गंगाराम का सहारा लिया जिसने १७ नवंबर, १९२२ ई को महंत सुंदर दास से गुरु के बाग की सारी ज़मीन पट्टे पर लेकर सिक्खों के हवाले कर दी। इसके साथ ही मोर्चा फ़तहि हो गया। २७ अप्रैल, १९२७ ई को गिरफ्तार किए गए सारे अकाली वर्करों को रिहा कर दिया गया। इस मोर्चे में शामिल सिंघों में से १० सिंघ-- भाई भगत सिंघ तथा तारा सिंघ गांव तेड़ा पुलिस की मारपीट के कारण अपने ही गांव में क्रमश: ४ सितंबर तथा ६ सितंबर, १९२२ ई को शहीदी पा गए। पहले ही उल्लेख अधीन आ चुके भाई करम सिंघ तथा भाई प्रताप सिंघ पंजा साहिब में ३० अक्तूबर को शहीदी पा गए। भाई हरी सिंघ श्री अमृतसर जेल में बीमार होकर ९ नवंबर, १९२२ ई को शहीदी पा गए। भाई प्रकाश सिंघ बोसटल जेल, लाहौर में २५ नवंबर को बीमारी की हालत में शहीदी पा गए। भाई हरदित्त सिंघ गांव अड्डेवाल, लाहौर जेल, भाई जवाला सिंघ, गांव पंजोला, अटक जेल, भाई बिशन सिंघ, गांव सोहल, अटक जेल में शहीदी पा गए तथा भाई पिरथीपाल सिंघ जख़्मों की मार न झेलते हुए २ अप्रैल, १९२४ ई को श्री गुरु रामदास अस्पताल में इलाज अधीन शहीदी पा गए। इस दौरान ५६०५ सिंघों की गिरफ्तारियां हुईं, जिनमें से ३५ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य भी थे।

सरकार ने इस समय इतना जुल्म किया कि पादरी सी. एफ. एंड्रयूज खुद गुरु के बाग पहुंचा तथा हो रहे अत्याचार को देखकर कुरला उठा। उसने लिखा कि अरदास के लिए जुड़े हाथ तथा मुंह से 'सतिनाम' का उच्चारण कर रहे सिंघों के पेट पर जूतों समेत खड़े फौजी और मुंह पर पड़ती लाठियों को देखकर मेरा अपने आप पर काबू रखना बड़ी ही मुश्किल की बात थी। वह धर्म के रास्ते का पथिक पादरी लिखता है कि बेहोश हुए जख़्मी सिंघों को उठाकर एंबूलेंस में रखने वालों पर भी इसी तरह का अत्याचार किया गया। इन सारे जुल्मों ने किसी को नर्म-दिलिया नहीं रहने दिया। बी. टी. द्वारा की गई खुद मोर्चाबंदी के दौरान उसने अपने कुत्तों को भी सिक्खों पर छोड़ा जिसकी दुनिया भर की अख़बारों ने तसवीरों सहित रिपोर्टें प्रकाशित कीं।

मिस्टर बी. टी. कुछ समय बाद पटियाला रियासत का सुप्रिंटेंडेंट नियुक्त किया गया। उन दिनों चट्ठे सेखवां गांव की एक स्त्री परतापी अपने पति के कत्ल केस के कारण जेल में बंद थी। बी. टी. की उस स्त्री के साथ समीपता बन गई। बी. टी. ने अपने बलबूते पर परतापी को केस में से बरी करवा दिया तथा उसके साथ ही गांव चट्ठे सेखवां में कोठी बनाकर रहने लग गया। उसने अपनी बदली भी मलेरकोटला रियासत में डी. आई. जी. के तौर पर करवा ली थी तथा कुछ समय बाद वहां से सेवामुक्त हो गया। उन दिनों आज़ादी घुलाटिये बब्बरों का एक जत्था, जिसमें स. कुंढा सिंघ गाजीआणा, स. बचन सिंघ लोहाखेड़ा, स, भोला सिंघ लोहाखेड़ा, स. करतार सिंघ छीनीवाल, स. हरी सिंघ भैणी तथा फजला घुमाण कलां आदि सरगर्म सदस्य थे। चट्ठे सेखवां गांव के स. काका सिंघ को बी. टी. बहुत तंग करता था। बी. टी. के अत्याचार से तंग आया स. काका सिंघ गांव से भाग गया। उसने अपना संपर्क बब्बरों से बना लिया था। उसने बब्बरों को बी. टी. की सारी करतूतें बताकर उसको मारने की योजना बनाई। बब्बरों ने पटियाले के कबाड़ियों से पुलिस की वर्दियां खरीद लीं तथा कुछ हथियारों का भी इंतजाम कर लिया। स. कुंढा सिंघ थानेदार बन गया। स. बचन सिंघ तथा स. भोला सिंघ ने हवलदार वाली वर्दी पहन ली। स. करतार सिंघ छीनीवाल तथा फजला घुमाण कलां दोनों वर्दी पहनकर सिपाही बन गए। इन सभी ने स. काका सिंघ को झूठ-मूठ का मुज़रिम बनाकर हथकड़ी से बांध लिया। शाम के समय यह जत्था चट्ठे सेखवां गांव पहुंच गया। बी. टी. अपनी कोठी में कुर्सी पर बैठा अख़बार पढ़ रहा था। पुलिस के भेस में पहुंचे बब्बरों ने बी. टी. को कहा कि वे उनके मुज़रिम काका सिंघ को पकड़कर लाए हैं। इन्होंने स. काका सिंघ को कहा कि वह बी. टी. के पांव को छूकर माफ़ी मांगे। पैरों को हाथ लगाने के बहाने स. काका सिंघ ने बी. टी. को टांगों से पकड़कर उठा लिया। स. कुंढा सिंघ ने बी. टी. की कनपटी में गोली मारी। परतापी उर्फ़ हरनामी भागने लगी तो बब्बरों ने उसको भी पार बुला दिया।

सुनाम पुलिस ने सारे बब्बरों पर धारा ३०२ के तहत दोहरे कत्ल तथा डकैती का मुकद्दमा दर्ज कर इनको ढूंढना शुरू कर दिया। स. ईशर सिंघ के घर से चट्ठे सेखवां गांव में से स. बचन सिंघ लोहाखेड़ा को गिरफ्तार कर लिया। इसको मौत की सज़ा दी गई।

स. करतार सिंघ छीनीवाल को कुछ समय बाद गिरफ्तार कर लिया गया। मुकद्दमे के दौरान जो गवाह इसके विरुद्ध थे वे मुकर गए और इनको मुकद्दमे में से बरी कर दिया गया।

स. भोला सिंघ लोहाखेड़ा को मुकद्दमे में उम्र कैद की सज़ा दी गई। ये १३ वर्ष की सज़ा काटकर १९५२ ई में रिहा हुए। १९६२ ई में आपको पंजाब सरकार ने स्वतंत्रता संग्रामी के रूप में पेंशन देनी शुरू कर दी तथा ताम्र पत्र देकर आपका सम्मान किया। ८० वर्ष की उम्र में कैंसर की बीमारी से आपकी मृत्यु हो गई।

स. काका सिंघ, स. कुंढा सिंघ गाजीआणा तथा फजला घुमाण कलां कुछ समय अंग्रेजों की नज़रों से दूर रहे। मुखबर की इत्तला पर उपली से संगरूर के मध्य नहर की पटरी पर तीनों को इकट्ठे जाते हुए पुलिस ने घेर लिया। इन तीनों ने डटकर पुलिस का मुकाबला किया और वहीं तीनों शहीदी प्राप्त कर गए।

सिक्ख धर्म के बुनियादी विकास में प्रमुख संस्थाओं का योगदान

-डॉ. रेणु शर्मा*

राजस्थान में जन्मी-पली मैं ब्राह्मण कन्या आपके सम्मुख सिक्ख धर्म के बुनियादी-विकास की बात करने जा रही हूं और सिक्ख धर्म की जड़ें मज़बूत करने की ज़िम्मेदारी भी समझती हूं। जितनी दिलेरी, ताकत, प्यार व विश्वास मैंने इस धर्म की संस्थाओं में देखा है, उतना शायद किसी अन्य कौम या धार्मिक संस्था में मिलना मुश्किल है। मुझे तो इतने साल पंजाब से दूर रहने का अफ़सोस भी है। अब मैं इन सिक्ख संस्थाओं से जुड़कर तथा इनकी खूबियों को हर आम आदमी से चर्चित करके उद्घोषित करना चाहती हूं तथा करती भी रही हूं।

वैसे तो सभी धर्मों में से इंसानियत की ही खुशबू आती है, मगर धार्मिक संस्थाएं भी किसी धर्म का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। सिक्ख धर्म से संबंधित संस्थाएं जिस ईमानदारी तथा सच्चाई के साथ कार्य कर रही हैं उसे नकारा नहीं जा सकता। हम सभी को गैर-धर्मी लोगों के समक्ष गुरबाणी को इस ढंग से पेश करना चाहिए, जिससे अधिकाधिक लोग इसे अपना सकें, ताकि इस धर्म का सर्वोपरि विकास हो सके। जो धारणाएं पूर्वत: चली आ रही हैं, उन्हें परिपक्व करना तथा सही दिशा की ओर अग्रसर करते रहना ही हम सबका या सिक्ख संगत का प्रमुख कर्त्तव्य है।

श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अंतिम समय तक लगभग २३९ वर्षों का समय बनता है। इस समय के दौरान ही सिक्ख धर्म का उत्थान तथा विकास हुआ। इसी में से सिक्ख धर्म का बुनियादी समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना तक का या श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत तक का बनता है। इस बुनियादी समय में सिक्ख धर्म के विकास में सिक्ख धर्म से सम्बद्ध धार्मिक संस्थाओं का अत्यधिक योगदान रहा। इन संस्थाओं में प्रमुख रूप से 'शबद-गुरु' का सिद्धांत, संगत की सर्वोच्चता, मंजी-प्रथा, मसंद-प्रथा आदि संस्थाएं थीं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब एक संस्था नहीं है बल्कि यह एक दर्शन (**Philosphy**) है, एक विचारधारा है और इस विचारधारा की शक्ति है-- ये संस्थाएं, जोकि इसके विकास में सहायक हैं। अतएव 'शबद गुरु' के सिद्धांत का वास्तविक रूप है-- 'साक्षात्कार' अर्थात् श्री गुरु ग्रंथ साहिब एक निर्गुण निराकार ब्रह्म से साक्षात् मिलन। श्री गुरु ग्रंथ साहिब से मिलन या प्राप्ति का मार्ग इस धर्म की संस्थाएं ही बताती हैं।

किसी भी धर्म की जड़ें या विचारधारा की लहरों की बुनियाद यही संस्थाएं होती हैं। इन्हीं संस्थाओं द्वारा समूची कौम का विश्वास तथा भावनाएं प्रकट होती हैं। पहले संकल्प अस्तित्व में आता है, फिर सिद्धांत स्थापित किये जाते हैं।

*पंजाब इतिहास अध्ययन विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२

सिद्धांतों को वास्तविक ढंग से व्यवहार में लाने के लिए संस्था की जरूरत पड़ती है। 'शबद-गुरु' का सिद्धांत ज्ञान, अध्ययन तथा खोज को प्रकट करता है। जब यह संस्था के रूप में सामने आता है तो शैक्षणिक संस्था का रूप ले लेता है। सिक्ख धर्म में प्रारंभ से ही शैक्षणिक संस्थाएं चली आ रही हैं, बल्कि कहा जाए कि इस धर्म के संस्कारों में विद्या या पढ़ाई-लिखाई है, जो इसे ऊंचा उठाने में सहायक है, तो ग़लत नहीं होगा। संगत की सर्वोच्चता सिक्ख धर्म की प्रजातांत्रिक पहुंच तथा प्रणाली को दर्शाती है, चूंकि यह पहले संगत की सर्वोच्चता से ही प्रारंभ हुई। मंजी-प्रथा तथा मसंद-प्रथा सिक्ख धर्म के प्रचार को दर्शाने वाली संस्थाएं हैं, जिन्होंने समय-समय पर सिक्ख धर्म के विकास में अपना योगदान प्रदान किया। क्रमानुसार विवरण इस प्रकार है--

१४६९ ई में एक अच्छे रहन-सहन वाले पंजाबी परिवार में पैदा हुए श्री गुरु नानक देव जी उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त थे। शिक्षा-प्राप्ति के समय से ही श्री गुरु नानक देव जी गंभीर सोच-समझ वाले थे। उन्होंने धर्म-प्रचार आरंभ कर दिया था। उन्हें भिन्न-भिन्न देशों की भौगोलिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त था। भारतीय सामाजिक व्यवस्था को उन्होंने बहुत नज़दीक से देखा था। उन्होंने सबसे पहले पंजाब की ज़मीन को उपजाऊ बनाकर इस सामाजिक स्थिति से निपटने का फैसला किया। उन्होंने सभी धार्मिक भिन्नताओं से ऊपर उठकर नारा लगाया कि यहां न कोई हिंदू है, न कोई मुसलमान।[१] यहां सभी बराबर तथा एक ही परमात्मा की संतान हैं, एक ही धरती के पुत्र हैं, अतएव समाज में हर प्रकार से सबके साथ बराबरी होनी चाहिए।

ऊंच-नीच, जात-पात, अमीरी-गरीबी, श्रेणी-विभाजन आदि सभी बातों को गलत, अस्वाभाविक तथा गैर-धार्मिक बताते हुए श्री गुरु नानक देव जी ने इन्हें मनुष्य द्वारा बनाए गए ढकोसले बताया, अतएव इन्हें खत्म करना जरूरी है। वैसे तो मध्यकालीन संत-काव्य परंपरा के सभी संतों व भक्तों ने इस भेदभाव को मिटाने का अनथक प्रयास किया, परंतु श्री गुरु नानक देव जी ने स्वयं अपने आपको निम्न से निम्न वर्ग के साथ खड़ा करके देखा तथा ब्राह्मण व काज़ी के रूप में हो रही सामाजिक लूट-खसूट के ख़िलाफ़ लड़ाई प्रारंभ कर दी। इस प्रकार सामाजिक स्तर पर बराबरी का नारा लगाते हुए *"एकु पिता एकस के हम बारिक"* का सिद्धांत सामने लाया गया।

श्री गुरु नानक देव जी ने परमात्मा के संकल्प को भी नवीन व्याख्या के रूप में पेश किया। उनके कथनानुसार परमात्मा सदैव स्थिर रहने वाला हर स्थान पर व्याप्त है; समूचे संसार का जन्म-दाता है, पालनहारा है, सर्वोच्च है, वह जन्म-मरण से मुक्त है, रंग-रूप से मुक्त है, सृष्टिकर्ता है, अतएव उसे किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है। उसे किसी तंत्र-मंत्र से प्राप्त नहीं किया जा सकता। गुरु जी ने परमात्मा के संकल्प को परम सत्य का रूप देकर, परंपरागत रूप से चले आ रहे रूढ़िवादी विचारों को जबरदस्त चोट मारी थी। परमात्मा एक भय नहीं बल्कि सृष्टि का मालिक है। परमात्मा पत्थरों में नहीं बसता, वो हर हृदय में निवास करता है। परमात्मा निश्चित आकार वाला नहीं, वो निराकार व निर्गुण है।

समकालीन सिद्धों, नाथों तथा योगियों ने परमात्मा की प्राप्ति या मुक्ति के साधन बड़े कठिन ढंग के जप, तप, व्रत, उपवास आदि बना रखे थे। उनके अनुसार परमात्मा को केवल घर-बार त्यागकर, शरीर को भूखा-प्यासा रखकर,

अत्यधिक कष्ट देकर तथा भांति-भांति के जंत्र-मंत्र पढ़कर प्राप्त किया जा सकता है। श्री गुरु नानक देव जी ने इन साधनों की कड़ी निंदा की तथा कहा कि व्यक्ति गृहस्थी के साथ ही परमात्मा की प्राप्ति कर सकता है। मनुष्य की मुक्ति उसके द्वारा काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार पर नियंत्रण पा लेने से ही होती है। दूसरे शब्दों में, परमात्मा की प्राप्ति आत्म-ज्ञान का ही दूसरा नाम है। आत्म-ज्ञान से ही ब्रह्मांड का ज्ञान प्राप्त होता है। यही परमात्मा की प्राप्ति है।

अध्ययन, ज्ञान, परस्पर विचार-विमर्श तथा खोज करने के साथ ही संभव है। इस बात को श्री गुरु नानक देव जी ने **'शबद-गुरु'** का नाम दिया। **'शबद'** ही प्रत्येक ज्ञान का साधन है। **'शबद'** ही प्रत्येक मुसीबत का समाधान है। **'शबद'** के बिना व्यक्ति को किसी भी प्रकार की सूझबूझ संभव नहीं हो सकती। इस प्रकार श्री गुरु नानक देव जी ने **'शबद'** की सर्वोच्चता स्थापित की। **'शबद'** को आधुनिक बोली में ज्ञान, अध्ययन, पढ़ाई, खोज, कार्य आदि नामों से भी व्याख्यायित किया जा सकता है। इसके साथ-साथ अधिकाधिक विद्यार्जन तथा अध्ययन पर भी ज़ोर दिया जा सकता है। बाणी के उच्च कोटि के स्तर को देखते हुए यह भी कहा जा सकता है कि श्री गुरु नानक देव जी स्वयं उच्च कोटि की विद्या प्राप्त महापुरुष थे। उन्होंने लोगों को भी ज्ञानार्जन की तरफ प्रेरित किया। उनके अनुसार विद्या-प्राप्ति या ज्ञानार्जन ही सब दुखों का समाधान है। ज्ञानार्जन के द्वारा ही परोपकारी हुआ जा सकता है :

विदिआ वीचारी तां परउपकारी ॥
जां पंच रासी तां तीरथ वासी ॥

(पन्ना ३५६)

इस प्रकार गुरु नानक साहिब ने परमात्मा, भक्ति तथा जात-पात के संदर्भ में अत्यधिक स्पष्ट मार्ग अपना लिया। इस प्रचार में सबसे अहम बात यह थी कि उन्होंने लोगों की बात लोगों तक लोगों की बोली में पहुंचाई। संस्कृत कठिन भाषा होने के कारण साधारण लोगों की समझ से परे थी। गुरु जी ने लोगों को साधारण भाषा में उपदेशित किया। इससे लोक-भाषा की महानता उभरनी शुरू हो गयी थी जो कि साधारण लोगों की जमीर की आवाज़ को बुलंद करने का पहला कदम था। दूसरा, परमात्मा के साथ संबंधित संकल्प इतने सरल और स्पष्ट हो गए थे कि लोग पुजारी श्रेणी द्वारा फैलाए कठिन और जटिल उपायों एवं अंधविश्वासों से छुटकारा पाने लगे। इससे गुरु नानक साहिब के अनुयायियों की गिनती भी बढ़ी और धर्म-प्रचार भी भरपूर ज़ोर पकड़ने लगा। अपने अनुयायियों को उन्होंने स्थानीय स्तर पर संगत के एक मोटे रूप में संगठित कर दिया था।[२]

मानव-स्वतंत्रता के इस संदेश का श्री गुरु नानक देव जी ने अपने देश से बाहर जाकर भी प्रचार-प्रसार करने का फैसला किया। फलस्वरूप गुरु जी पंजाब व भारत से बाहर भी गये। अरब देशों जैसे उन देशों में भी गये जहां गैर-मुसलिमों को जाने की मनाही थी। बर्फ़ीली चोटियों में बैठे सिद्धों, नाथों व योगियों की गुफाओं में पहुंचकर भी उन्होंने परिचर्चा की और अपने ज्ञान की शक्ति द्वारा सभी को अपने संकल्प के बारे में सफल रूप से जानकारी मुहैया करवायी। भारत जैसे विशाल भू-खंड तथा अन्य देशों की यात्रा से यह बात भी स्पष्ट होती है कि श्री गुरु नानक देव जी का ज्ञान व दृष्टि कितनी विशाल थी। इसके साथ-साथ उनकी शारीरिक तथा मानसिक शक्ति व दिलेरी का भी

प्रमाण मिलता है क्योंकि डरपोक, शारीरिक तथा मानसिक रूप से कमज़ोर व्यक्ति न ही इतनी जटिल यात्राएं कर सकता है और न ही ऐसा दृष्टांत पेश कर सकता है। निश्चित रूप से श्री गुरु नानक देव जी एक प्रबुद्ध तथा प्रवीण पुरुष थे, इसीलिए तो भाई गुरदास जी ने उनको 'अकाल रूप' कहा है। श्री गुरु नानक देव जी इतनी प्रभावशाली शख़्सियत के मालिक थे कि जब वे ज्ञानात्मक चर्चा करते थे तो उनका कोई अंत नहीं पा सकता था। वे ज्ञान का सागर थे। एशिया के महाद्वीप में उन्होंने एक ऐसे धर्म की नींव रख दी थी जो आने वाले समय में महान प्राप्ति की ओर अग्रसर था।

श्री गुरु नानक देव जी की आज्ञा से ही श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरमुखी लिपि का विकास किया और सारी गुरबाणी को गुरमुखी लिपि में लिखा। इससे लोक-भाषा 'पंजाबी' को लिपि 'गुरमुखी' प्राप्त हुई।

श्री गुरु नानक पातशाह द्वारा श्री गुरु अंगद देव जी को अपना उत्तराधिकारी घोषित करना सिक्ख धर्म का एक अहम मोड़ था। यह ज्ञात हो कि भक्ति लहर के कई क्रांतिकारी भक्तों के संप्रदाय केवल इसी कारण खत्म हो गए थे, क्योंकि उन्होंने अपना कोई उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं किया था। श्री गुरु नानक देव जी का मत इसलिए कायम रहा क्योंकि इसमें बाकायदा उत्तराधिकारी नियुक्त किए जाते रहे। इससे 'गुरु' का संकल्प एक संस्था बन गया था। श्री गुरु नानक देव जी के अंतिम समय तक सिक्ख धर्म के सिद्धांत, संकल्प तथा कई संस्थाएं स्थापित हो चुकी थीं। अगली जरूरत केवल एक उत्तराधिकारी नियुक्त करने की थी, जो श्री गुरु अंगद देव जी के रूप में पूरी हुई। श्री गुरु अंगद देव जी ने सिक्ख संगत को सही दिशा-निर्देश दिए तथा श्री गुरु नानक देव जी द्वारा मान्यता प्राप्त सिद्धांतों व संकल्पों को और अधिक स्पष्टता दी। गुरमुखी लिपि को और अधिक विकसित करने के लिए विविध प्रयास किए गए। श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी की बाणी को ही नहीं संभाला बल्कि स्वयं भी बाणी की रचना की। लंगर की प्रथा को बाकायदा एक रीति के रूप में विकसित किया गया। चाहे श्री गुरु अंगद देव जी बाहर लंबी प्रचार-यात्राओं पर नहीं गये थे लेकिन उन्होंने प्रचार-केंद्र खडूर साहिब स्थापित करके वहीं से ही सिक्ख संगत को सैद्धांतिक दिशा दी। उन्होंने १५३९ ई से लेकर १५५२ ई तक गुरु-पद को संभाला।

श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने पक्के सेवक बाबा अमरदास जी को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। इनका समय १५५२ ई से लेकर १५७४ ई तक रहा। इन्होंने सिक्ख संगत को संभालते हुए उदासियों और दूसरे समकालीन मतों से दूर रहने का आदेश देते हुए सही व स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए। वे हिंदू-तीर्थों पर भी गए ताकि उन्हें वाह्य आडंबरों से हटाकर सही मार्ग का निर्देश दे सकें। उन्होंने पहले दो गुरु साहिबान की बाणी को भी संभाला और खुद बाणी भी रची।[३] सिक्ख संगत के लिए बाकायदा एक केंद्र 'गोइंदवाल साहिब' स्थापित किया। अपने दामाद भाई जेठा जी को हर प्रकार से योग्य जानकर श्री गुरु रामदास जी के रूप में गुरु घोषित करके श्री गुरु अमरदास जी ज्योति-जोत समा गए।

श्री गुरु रामदास जी का गुरु-काल १५७४ ई से लेकर १५८१ ई तक था। इन्हें उच्च कोटि की बौधिकता का मालिक कहा जाये तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। ये अपने ससुर श्री गुरु अमरदास

जी के साथ हर समय रहते थे। श्री गुरु रामदास जी ने 'अमृतसर' नामक सरोवर की खुदवाई करवाई। इस सरोवर के आसपास नगर स्थापित करने का कार्य सम्पन्न किया गया, जो श्री अमृतसर के नाम से विख्यात हुआ। श्री अमृतसर नगर गुरु आशा के अनुसार तथा पूरी योजनाओं के तहत स्थापित नगर था। यह नगर सिक्ख सभ्याचार को ध्यान में रखकर स्थापित किया गया।

श्री गुरु अरजन देव जी ने सन् १५८१ ई से लेकर १६०६ ई तक गुरु-पद संभाला। इनके समय में सिक्ख धर्म ने सर्वतोमुखी विकास किया था। आप जी महान योजनाकार थे। श्री अमृतसर के पवित्र सरोवर में श्री हरिमंदर साहिब की तैयारी करवाई। यह स्थान एक महान धार्मिक केंद्र के रूप में स्थापित हुआ। यह सिक्खों का सर्वप्रथम 'गुरुद्वारा साहिब' था। १५९३ ई में करतापुर साहिब की स्थापना की गयी। १५९६ ई में तरनतारन नगर की स्थापना की गई। १५९७ ई में ब्यास दरिया के किनारे श्री हरिगोबिंदपुर नामक नगर बसाया।

इसके साथ-साथ ही उन्होंने सिक्ख समाज को अत्यधिक रूप से संगठित करने के लिए पूर्ववत चले आ रहे मंजी-प्रबंध को परिवर्तित करके मसंद-प्रणाली वाला प्रबंध स्थापित किया। इसके तहत मसंद गुरु-घर के प्रचारक के रूप में और गुरु व संगत के बीच एक कड़ी का काम करते थे। श्री अमृतसर का व्यापार, यहां की योजनाबंदी तथा यहां का प्रबंध लाहौर शहर से कहीं ज़्यादा अच्छा था।

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की आदि बीड़ की संपादना करके समूचे सिक्ख समाज को आदर्श अगुआई प्रदान की। बौद्धिक तथा वैचारिक तौर पर यह गुरु जी की एक बहुत बड़ी देन थी। सिक्खों का अपनी भाषा तथा अपनी लिपि में लिखा गया यह सबसे पहला धार्मिक ग्रंथ था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सिक्ख धर्म के बुनियादी विकास में प्रथम पांच गुरु साहिबान का तथा उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं का अति उत्तम योगदान है। यह समय सिक्ख धर्म के लिए शांति वाला भी था और इसे विकसित करने वाला भी। इस समय तक सिक्ख धर्म के पास अपने सिद्धांत, अपने संकल्प और अपनी संस्थाएं स्थापित हो गयी थीं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना से सिक्ख धर्म के विकास का प्रथम चरण पूरा हो गया था।

यह धर्म विकासशील संभावनाओं की गुंजाइश रखते हुए सभी संबद्ध संस्थाओं के प्रति एक ईमानदार पहुंच तथा स्वस्थ मानसिकता रखने वाला प्रतीत होता है। इसमें अभी विकास की बहुत गुंजाइश है तथा मेरा विश्वास है कि इसकी संस्थाओं का स्वस्थ एवं मेहनतकश होना इसमें शामिल है, ताकि इसकी स्थिति उतनी ही अच्छी व स्पष्ट बन सके जितनी कि किसी नैतिक मूल्यों व स्वस्थ मानसिकता वाले संस्कार लेकर चलने वाले किसी धर्म की होनी चाहिए।

संदर्भ-सूची:

१. देखें मिहरबान वाली जनम-साखी और विलायत वाली जनम-साखी, पृष्ठ ८९; डॉ. किरपाल सिंघ (संपादक), 'जनम-साखी परंपरा: ऐतिहासिक दृष्टिकोण से'; पटियाला, १९९०, पृष्ठ १०

२. तेजा सिंघ, 'सिक्खिज़म इट्स आइडियल एंड इंस्टीट्यूशंस, बम्बई, १९३७, पृष्ठ ४०

३. प्रो. साहिब सिंघ, अबाउट कम्पाइलेशंस ऑफ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, श्री अमृतसर, १९९६, पृष्ठ ५० तथा ८१

गृहस्थ धर्म के अनुसार गुरमति में स्त्री का स्थान

*-बीबी असप्रीत कौर**

'गुरमति' से तात्पर्य है-- 'गुरु की मति।' 'गुरु' अंधकार से प्रकाश की ओर हो जाने वाला तथा 'मति' से तात्पर्य-- शिक्षा, सिद्धांत एवं राह है। इस प्रकार 'गुरमति' वो राह या शिक्षा है जो हमें श्री गुरु नानक देव जी से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक गुरु-ज्योति के दस रूपों ने बख़्शिश की है। आधुनिक समय में जब संसार को जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों में रोशनी देने के लिए धर्म, फ़लसफ़े तथा वैज्ञानिक खोजों आदि से दिशा ली जा रही है, हम संसार के सामने गुरमति की रोशनी में जीवन के अर्थों को समझना अपना दायित्व समझते हैं। स्त्री एवं परिवार के बारे में गुरमति के परिप्रेक्ष्य से अध्ययन करने के लिए हम गुरु साहिबान के जीवन, श्री गुरु ग्रंथ साहिब, भाई गुरदास जी की रचनाएं, सिक्ख इतिहास एवं सिक्ख रहित मर्यादा को आधार मानकर चलते हैं।

परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है। सामाजिक संस्था होने के साथ-साथ मानव जीवन के साथ जुड़े धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में परिवार की मुख्य भूमिका है। मनुष्य के जन्म से लेकर मरण तक समूचे जीवन-काल में पारिवारिक जीवन उसका सहायी है। जैसे समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार है उसी तरह स्त्री एवं पुरुष परिवार के निर्माण में ऐसे स्तंभ हैं जिन पर परिवार की बुनियाद रखी जाती है। परिवार बनाने में दोनों का समान योगदान है। आदि काल से स्त्री एवं पुरुष के संयोग ने मानव जाति में बढ़ोतरी की है। समय के चक्कर के साथ स्त्री की जगह एवं उसके सम्मान में उतराव-चढ़ाव आते रहते हैं, जिस कारण परिवार संस्था में भी परिवर्तन आते रहे हैं। जिस प्रकार सामाजिक परिवर्तन के कारण परिवार प्रभावित होता है उसी प्रकार पारिवारिक परिवर्तन के कारण समाज भी प्रभावित होता है। यदि समाज में स्त्री का सम्मानजनक स्थान नहीं है तो पारिवारिक जीवन भी सुखी नहीं हो सकता। दूसरी तरफ, खुशहाल परिवार स्वस्थ समाज की प्रारंभिक शर्त है।

सिक्ख धर्म से पूर्व भारतीय धर्मों में स्त्री तथा परिवार सम्बंधी विचार हीन भावना से ग्रसित थे। इनको आध्यात्मिक साधना तथा प्राप्ति में बाधा माना जाता था। स्त्री पर कई तरह की धार्मिक-सामाजिक पबंदियां लगाई जाती थीं।

मुक्ति-प्राप्ति के लिए परिवार के त्याग को आवश्यक शर्त माना जाता था। 'मनु', जिसे हिंदू धर्म का आदि मानव कहा जाता है, द्वारा रचित 'मनु स्मृति' में दर्ज नियमों के अनुसार स्त्री का स्थान घर की चारदीवारी तक ही सीमित किया गया है-- "स्त्री बचपन में माता-पिता, जवानी में पति तथा बुढ़ापे में पुत्रों के अधीन रहे। स्त्री का स्वतंत्र रहना किसी भी हाल में उचित नहीं।" किसी भी प्रकार की धार्मिक क्रिया से वंचित करते हुए उसके लिए यह आदेश था कि

**आर-४४, यूनीवर्सिटी कैंपस, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो. ९८८८२-३५१८५*

"पति ही कन्या का 'आचर्य', विवाह ही उसका 'जनेव संस्कार', पति की सेवा ही उसका 'आश्रम निवास' तथा गृहस्थी काम-धंधा ही उसका रोज़ाना का 'कर्म-धर्म' है।" 'रामचरित मानस' का कर्ता कवि तुलसीदास स्त्री, शूद्र एवं पशु को एक ही श्रेणी में रखते हुए इनको ताड़ना के अधिकारी मानता है :

ढोल गंवार पशु, शूद्र नारी।
तीनों ताड़न के अधिकारी।

सन्यासी नाथ-योगियों ने स्त्री को 'विष की गंदल' कहते हुए मुक्ति के राह की बाधा माना। गोरखनाथ स्त्री की निंदा करते हुए एक मां के चाव पर पानी फेर देते हैं, जिसने अपना पुत्र बड़े शगुन से ब्याहा है:

दाम काढि बाघण लै आइआ।
माऊ कहै मेरा पूत बिआहिआ।
गीली लकड़ी कउ घुण लाइआ।
तिन डाल मूल सण खाइआ।

जैन तथा बुद्ध धर्म में परिवार का स्थान दोयम है। इन धर्मों में 'कैवल्य' तथा 'निर्वाण' की प्राप्ति का मार्ग सन्यास है। जैन धर्म के अनुसार कोई भी स्त्री 'कैवल्य' की प्राप्ति नहीं कर सकती। इसके लिए उसे पुरुष-जीवन में जन्म लेना पड़ेगा। बुद्ध धर्म में चाहे स्त्रियों को अनंद की विनती पर संघ में शामिल कर लिया गया, मगर भिक्षुणियों के लिए संघ के नियम भिक्षुओं के मुकाबले बड़े सख़्त हैं। संघ के नियमानुसार उम्र भर सन्यासी बने रहना आवश्यक है।

कतेबी धर्मों के अनुसार स्त्री ही प्रारंभिक पाप का कारण है। बाबा आदम तथा हवा की 'तोरेत' के बीच 'उत्पत्ति' की साखी के अनुसार स्त्री ने पुरुष को वर्जित फल खाने के लिए उकसाया। इस साखी के अनुसार स्त्री का जन्म पुरुष के अकेलेपन को दूर करने के लिए उसकी पसली से हुआ बताया गया है। इसलाम ने 'हकमहिर' तथा 'तलाक' का अधिकार देकर स्त्री की हालत ऊंची की है, मगर कोई स्त्री पुरुष जमात के साथ मसजिद में नमाज़ नहीं पढ़ सकती।

धार्मिक पाबंदियों के अलावा बाल-विवाह तथा विधवा-विवाह की मनाही, लड़कियों को जन्म लेते ही मार देना, सती-प्रथा व पर्दा-प्रथा आदि कुरीतियां समाज की गिरावट की परिचायक हैं। किसी समाज के सभ्याचार तथा उसकी महानता को मापने का सबसे प्रारंभिक मापदंड उस समाज में स्त्री का स्थान होता है। गुरमति में जहां समकालीन समाज में फैली इन कुरीतियों का ज़ोरदार खंडन किया, साथ ही एक ऐसे समाज की स्थापना भी की जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों स्वाभिमान वाला जीवन व्यतीत करते हैं। गुरमति की विचारधारा के अनुसार स्त्री की सामाजिक तथा धार्मिक शमूलियत के बिना सामाजिक ढांचा न केवल कमज़ोर बल्कि अधूरा भी होगा। गुरु साहिब ने स्त्री को समाज की बीज इकाई मानकर उसके साथ जुड़ी हीन भावना को नकारा। श्री गुरु नानक देव जी स्त्री को मानव-जीवन में केंद्रीय महत्त्व की धारक बताते हुए उपदेश करते हैं :

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥

(पन्ना ४७३)

गुरमति के अनुसार जीव संसार में तभी आता है जब उसमें अकाल पुरख द्वारा अपना

अंश धरा जाता है। यह ज्योति स्त्री-पुरुष दोनों में एक ही तरह से प्रकाशमान है। यहां सभी मनुष्यों की जीवन-दिशा तथा प्राप्ति एक अपने मूल स्वरूप की पहचान करनी है। गुरमति मनुष्य को उसके कर्यों के अनुसार दो हिस्सों में बांटती है-- प्रथम, गुरमुख तथा दूसरा, मनमुख। कोई भी मनुष्य चाहे वो पुरुष हो या स्त्री, गुरु द्वारा दर्शाए मार्ग पर चलकर अपने मूल स्वरूप अर्थात् परमात्मा की पहचान कर सकता है। उसका मुख दोनों जहां में उज्जवल होता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विद्यमान सारी बाणी 'धुर की बाणी' है। इसमें दर्ज समूची बाणी में प्रभु-इच्छा 'स्त्री' प्रतीक द्वारा रूपमान हुई है। सारी बाणी में दो चिन्हों-नामों-- स्त्री व पुरुष का ज्यादा इस्तेमाल हुआ है। स्त्री जिज्ञासु, खोजी, भक्त तथा सिक्ख का प्रतीक है, जिसे बहन, सहेली, पत्नी, सुहागिन, गुणवंती, नार, धन आदि प्रसंगों द्वारा प्रकट किया गया है। दूसरी तरफ पिरु, सुहाग, कंत तथा पति आदि शब्दों का इस्तेमाल परमेश्वर एवं गुरु के लिए हुआ है। गुरमति के मार्ग में प्रत्येक जिज्ञासु-स्त्री को 'बतीह सुलखणी' कहकर सम्मानित किया गया है। इसके अलावा ये सम्बंध कई पारिवारिक रिश्तों के रूप में भी सामने आए हैं। गुरबाणी में एक तरफ बिना पारिवारिक रिश्तों द्वारा आदर्श परिवार के लिए दिशा दी गई है, दूसरी तरफ परमात्मा के साथ सच्ची प्रीति का संदेश दिया गया है।

गुरमति पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को उत्तम मानती हुई सांसारिक कर्त्तव्य तथा धर्म-युद्ध को छोड़कर अपनी 'निजी मुक्ति' के लिए जीने वाले सन्यासियों, योगियों और ब्रह्मचारियों का बार-बार निषेध करती है। वे सांसारिक बंधनों से छूटते नहीं बल्कि भागते हैं :

होइ उदासी ग्रिहु तजि चलिओ छुटकै नाही नाठा ॥ (पन्ना १००३)

श्री गुरु अमरदास जी ने सन्यासियों, उदासियों तथा अन्य भेसधारियों के मुकाबले गृहस्थ धर्म को उच्च माना है, क्योंकि शेष सभी आश्रम इसी द्वारा ही स्थापित किए जाते हैं। वास्तविक मार्ग की समझ उस मनुष्य को प्राप्त होती है जो अपने हाथों से श्रम करता हुआ सबके साथ मिलकर छकता है। असल उदासी वो है जो कमल के फूल के समान जल में निरलेप रहने की तरह परिवार में रहते हुए मोह-माया से निर्लिप्त रहे :

विचे ग्रिह सदा रहै उदासी जिउ कमलु रहै विचि पाणी हे ॥ (पन्ना १०७०)

भाई गुरदास जी को सिक्खी के प्रथम व्याख्याकार तथा उनके द्वारा रचित वारों को 'गुरबाणी की कुंजी' कहा गया है। उनके अनुसार माया में उदास रहना ही सारे सिक्खों का धर्म है :

कुला धरम गुरसिख सभ माइआ विचि उदासु रहाइआ। (वार २४:१२)

गुरु-ज्योति के दस जामे (दस गुरु साहिबान) घर-गृहस्थी वाले हुए तथा उन्होंने इसी युक्ति वाले सिक्खों को अपने चरणों के संग लगाकर गुरसिक्ख मर्यादा को आगे बढ़ाया। श्री गुरु नानक देव जी खुद घर-गृहस्थी वाले थे। उन्होंने ऐसी ही वृत्ति व युक्ति वाले सिक्ख भाई लहिणा जी को अपना उत्तराधिकारी बनाते हुए गुरु-ज्योति उनमें धरी। इसी भली रीति पर पहरा देते हुए शेष गुरु साहिबान ने भी रुहानियत की वंश में बाप, दादा, पड़दादा तथा आगे नाती वाले उच्च पैमाने स्थापित किए। भाई गुरदास जी फरमान करते हैं :

पिओ दादा पड़दादिअहु कुल दीपकु अजरावर

नता।
तखतु बखतु लै मलिआ सबद सुरति वापारि सपता। (वार २४:१९)

दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की साजना करके अपने जीवन के अंतिम समय में फरमान जारी किया कि अब से खालसा पंथ के गुरु श्री आदि ग्रंथ साहिब हैं। तब से यह बात प्रचलित हो गई कि खालसे का गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, माता साहिब कौर जी तथा खालसे की जन्म-भूमि श्री अनंदपुर साहिब है। गुरु जी ने खालसा सजाते समय पांच ककारों की रहित के धारणी होने तथा चार कुरहितों से बचने की ताकीद की। भाई नंदलाल जी के अनुसार जो रहितों पर पहरा देगा तथा कुरहितों से बचेगा वो अपनी इक्कीस कुलों को मुक्त कर लेगा :

पांच नेम कर सिख जु धारहि।
इकीस कुल कुटंब कउ तारहि।
तारे कुटंब मुकत सो होइ।
जनम मरन नहि पावहि सोइ।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाया गुरु तथा सिक्ख का नाता (एक परिवार की भांति) युगों-युगों तक चलता है। श्री गुरु रामदास जी का फरमान है :

हरि राम राम मेरे बाबोला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥
हरि जुगह जुगो जुग जुगह जुगो सद पीड़ी गुरू चलंदी ॥
जुगि जुगि पीड़ी चलै सतिगुर की जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ ॥
हरि पुरखु न कब ही बिनसै जावै नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ (पन्ना ७९)

यहां श्री गुरु रामदास जी 'धन' तथा 'पिर' का संकेत 'सिक्खों' एवं 'गुरु' की तरफ करते हैं। गुरु के साथ मिलकर सिक्ख लता की भांति बढ़ते हैं। पीढ़ी-दर-पीढ़ी सिक्खी लता की बढ़ोतरी होती है। गुरु तथा सिक्खों की पीढ़ी युगों-युगों से चली आ रही है। जिन्होंने गुरु के संग लगकर नाम-सिमरन किया है उनकी यह पीढ़ी युगों-युगों तक चलती है। भाई गुरदास जी ११वीं वार में श्री गुरु अरजन देव जी तक हुए गुरसिक्खों की नामावलि देते हैं, जो अपने परिवारों एवं व्यवसाय समेत गुरु-पंथ में सम्मिलित हुए। ऐसे गुरसिक्खों के लिए भाई गुरदास जी फरमान करते हैं :

सतिगुर वंसी परम हंसु गुरु सिख हंस वंसु निबहंदा।
पिउ दादे दे राहि चलंदा ॥ (वार २६:२९)

दूसरी तरफ गुरमति से इन्कारी एवं गहरे पारिवारिक रिश्तों की गुरु साहिब ने कोई परवाह नहीं की, बल्कि जिन्होंने बेमुख होकर अपनी अलग राह चलाने का दुस्साहस किया उन्हें गुरु-पंथ में से बहिष्कृत कर दिया। प्रिथीए, रामराईए तथा धीरमलीए पारिवारिक रिश्तों की प्रत्यक्ष उदाहरणें हैं जिनको गुरु-पंथ तथा गुरु-वंश आज भी प्रवान नहीं करती।

गुरमति में जहां पारिवारिक जीवन को सैद्धांतिक रूप में स्वीकार किया है वहीं गुरु-जीवन तथा सिक्ख इतिहास में इसे व्यवहारिक रूप में निभाया भी गया है। सारे संसार में 'सतिनामु' का चक्कर चलाने के बाद जब श्री गुरु नानक देव जी ने करतापुर में निवास किया तो अचल बटाला में शिवरात्रि के मेले में सिद्धों के साथ हुई गोष्ठि के दौरान भंगरनाथ ने श्री गुरु नानक देव जी को उदासी भेस उतारकर गृहस्थ भेस धारण करने का उलाहना दिया। इसके जवाब में गुरु नानक साहिब ने सिद्धों को फटकार लगाई :

नानक आखे भंगरिनाथ तेरी माउ कुचजी आही।
भांडा धोइ न जातिओनि भाइ कुचजे फुलु सड़ाई।
होइ अतीतु ग्रिहसति तजि फिरि उनहु के घरि मंगणि जाई।
बिनु दिते कछु हथि न आई ॥

(भाई गुरदास जी, वार १:४०)

इसी भाव से मेल खाती साखी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के जीवन में भी मिलती है। प्रसिद्ध गुजराती फकीर शाह दउला ने जब गुरु जी से पूछा कि आप गृहस्थी होकर अपने आप को फकीर कैसे कहते हो, तो गुरु जी ने स्पष्ट किया कि स्त्री, पुरुष का ईमान है, बंधन है, संयम का दूसरा नाम है तथा घर का गहना है। गुरु जी ने यह जीवन-दर्शन समझाया-- "औरत ईमान, पुत्र निशान तथा दौलत गुज़रान।" आप जी के घर जब बाबा गुरदित्ता जी का जन्म हुआ तो माता गंगा जी ने आशीष देते हुए कहा कि 'जोड़ी रले' अर्थात् एक कन्या का भी जन्म हो :

सील खान कंनिआ इक होवै।
नही तां मां ग्रिसथ विगोवै।

इन पंक्तियों से गुरु-घर में औरत के महान रुतबे के साथ-साथ पारिवारिक जीवन के भविष्य सम्बंधी चेतनता का पता चलता है। गुरु साहिब ने यदि स्त्री को इतना मान-सम्मान दिया है तो उसने भी अपनी जिम्मेदारी निभाने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। सिक्ख धर्म में औरत ने मां, पुत्री, बहन, भुआ, दादी, पत्नी आदि होने के साथ-साथ एक सिक्ख होने के नाते अपने पूरे जीवन को गुरमति के अनुकूल ढाला। सिक्ख इतिहास पर नज़र मारने से पता चलता है कि गुरु-घर में स्त्रियों ने अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी के साथ-साथ सामाजिक, धार्मिक तथा समय आने पर राजनीतिक कर्त्तव्यों को भी पूरी तरह से निभाया है।

वीरता के क्षेत्र में सिक्ख स्त्रियों ने जो पहलकदमी दिखाई वो सिक्ख इतिहास का सुनहरी भाग है। माई भागो जी ने युद्ध के क्षेत्र में पुरुषों की अगुआई करते हुए सिक्ख इतिहास में स्त्री जाति की महान देन को प्रकट किया। अठारहवीं सदी में सिक्ख स्त्रियों ने सवा-सवा मण अनाज जेलों में पीसा, आंखों के सामने बच्चों के टुकड़े करवाकर गले में हार डलवाये, जिंदा बच्चों को जालिमों के नेजों पर तड़पते हुए देखा, सिक्खी सिदक केशों-श्वासों संग निभाया। ये सिक्ख इतिहास में ही नहीं, संसार के इतिहास में भी विलक्षण जगह रखने वाले कांड हैं।

आवश्यक सूचना

पाठकगण अपना चंदा मनीआर्डर द्वारा भेजते समय मनीआर्डर फार्म पर दिये गए 'संदेश' स्थान पर यह अवश्य लिखा करें कि यह चंदा या राशि 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका की वार्षिक या आजीवन सदस्यता प्राप्त करने हेतु है।

-संपादक

अध्यात्म क्या है?

*-डॉ. नरेश**

राग आसक्ति है। आसक्ति बढ़ती है तो मोह का रूप धारण कर लेती है। मोह बंधन है। यह हमें व्यक्ति, स्थान आदि के साथ बांध देता है। इसी से अहित की आशंका जन्म लेती है। जिससे हमें मोह नहीं है, उसके बारे में कोई दुश्चिंता हमारे मन में पैदा नहीं होती। जिसके प्रति हमें मोह है, उसके अहित की चिंता बार-बार मन में जागृत होती रहती है। पड़ोसी हर रोज़ शाम को चार बजे घर लौटता है, आज छः बज रहे हैं, हमें कोई चिंता नहीं है। हमारा बेटा आज समय पर घर नहीं पहुंचा है, दो घंटे से ऊपर का समय हो गया है, उसके बारे में अनेक प्रकार के बुरे-बुरे विचार मन में उठेंगे-- एक्सीडेंट न हो गया हो, किसी से मारपीट न हो गई हो, किसी उलझन में न फंस गया हो इत्यादि। पड़ोसी के साथ मोह नहीं है, बेटे के साथ मोह है। दुश्चिंता होने या न होने का कारण बेटा या पड़ोसी नहीं है, हमारा मोह है।

मोह अविद्या से उत्पन्न होता है। अविद्या की तीन शक्तियां हैं-- मल, विक्षेप और आवरण। मल में मलिन संस्कारजन्य दोष आते हैं। विक्षेप चित्त में चंचलता को जन्म देता है। आवरण से आत्म-विस्मृति पैदा होती है। अविद्या की ये तीनों शक्तियां मिलकर व्यक्ति को आत्मा का ज्ञान नहीं होने देतीं। आत्म-विस्मृति में उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ, पाप-पुण्य आदि का निर्णय कौन करेगा? निर्णय करने वाला विवेक तो विस्मृति से आच्छादित पड़ा है। विस्मृति हटेगी तो पता चलेगा कि मैं कौन हूं, मेरे लिए क्या करणीय है, क्या अकरणीय है।

यही अध्यात्म है। अध्यात्मवाद को रहस्यवाद इसलिए नहीं कहते कि यह समझ में नहीं आता बल्कि इसलिए कहते हैं कि यह उस रहस्य पर से पर्दा हटाता है, जो अविद्या के कारण हमें दिखाई नहीं दे रहा था। हम प्रभु का अंश हैं, इससे हम विस्मृत हैं। विस्मृति समाप्त हो जाए तो पता चल जाता है कि हम प्रभु का अंश हैं। हम अंश हैं तो पूर्ण कौन है? कहां है? उससे जुड़ना किस प्रकार संभव है? इन प्रश्नों का उत्तर पा लेना ही आत्म-ज्ञान है।

रहस्यवाद के लिए अंग्रेज़ी में 'मिस्टिसिज़म' शब्द प्राप्त होता है। 'मिस्टिक' की व्युत्पति यूनानी भाषा के शब्द 'मुसो' से हुई है, जिसका अर्थ है-- घाव के दो सिरों को जोड़ना। जिस प्रकार घाव के दोनों सिरे जोड़कर टांके लगाने से जख़्म भर जाता है, उसी प्रकार प्रभु का अंश तथा प्रभु के सिरे मिला देने से पूर्ण (प्रभु) से अंश के बिछुड़ने का घाव भर जाता है और वियोग की पीड़ा का अंत हो जाता है।

पीड़ा घाव में नहीं, अनुभूति में होती है। आपको चोट लगी है, रक्त रिस रहा है, लेकिन पीड़ा की अनुभूति नहीं हो रही है, तो आपको उस चोट की परवाह नहीं होगी। दूसरी ओर आपको ज़रा-सी खरोंच आई है लेकिन पीड़ा की

**१६९, सेक्टर-१७, पंचकूला-१३४१०९*

अनुभूति बहुत प्रबल है तो आप उस पर तुरंत मरहम लगाएंगे, उसे बार-बार सहलाएंगे। इसी प्रकार यदि आपको अपनी आत्मा के उसके मूल से बिछुड़ने की अनुभूति नहीं है तो आपको आत्मा की परवाह नहीं है, लेकिन जिस किसी को उसकी पीड़ा का एहसास है, उसकी वेदना की अनुभूति है, वह उसे इस पीड़ा से, इस वेदना से मुक्ति दिलाने का प्रयास अवश्य करेगा।

इस पंचभूता शरीर का सम्बंध बाहर के पांचों तत्त्वों के साथ सदैव बना रहता है। यही कारण है कि यह शरीर गर्मी-सर्दी को महसूस करता है, सर्दी में ठिठुरता है, गर्मी में तपता है। मौसमों से भी प्रभावित होता है यह शरीर। बदलते हुए मौसम केवल शरीर को ही नहीं, मन को भी प्रभावित करते हैं। अवसान के बाद ये पांचों तत्व पांचों तत्त्वों में जा मिलते हैं। यदि हम किसी एक भीतरी तत्त्व का सम्बंध बाहर के तत्त्व से बनाकर नहीं रख रहे हैं तो वो है 'बेचारी आत्मा।' आत्मा की इस दयनीय दशा की अनुभूति 'अध्यात्म' है तथा आत्मा की मुक्ति के लिए प्रयास 'साधना' है।

चेतना

अबके स्वतंत्रता दिवस का इशारा है।
हमें दिलो-जान से अपना वतन प्यारा है।
"एकु पिता एकस के हम बारिक",
गुरु साहिबान का यही आदेश है, नारा है।
उन्होंने खून से सींच इसे उगाया है।
मौसमे-बहार में गुल मुस्काया है।
खुशी मनाने आये हैं आप हर साल की तरह,
मैंने इस साल भी इक गीत नया बनाया है।
मेरे इस गीत में चीखो-दर्द है।
क्योंकि बहुत से चेहरों का रंग जर्द है।
बेगुनाहों का कत्ल करने वाला,
होता नहीं कदापि मर्द है।
हर वर्ष नारा लगाते हैं देश बचाने का।
परंतु पता हमें लगता नहीं, दुश्मन के आने का।
बम विस्फोट होते हैं, गोलियां चलती हैं,
अख़बार छप जाता है, रोज़ नये ज़माने का।
हर दिन इक वाकिआ और हो जाता है।
कानून व्यवस्था पे ग़ौर हो जाता है।
गहरा दुख अभिव्यक्त करने के सिवा, कोई चारा नहीं।
क्यों अब भी लगता है, यह मुल्क हमारा नहीं?
अब मैं भी आप में शामिल होता हूं।
ऊपर से हंसता हूं, अंदर से रोता हूं।
हर वर्ष की तरह स्वतंत्रता दिवस मनाता हूं।
कोई अच्छी बात कह दे, ताली बजाता हूं।
आओ देखें, क्यों फर्क है, मन, वचन और कर्म में।
बेगुनाहों का कत्ल लिखा है, किस धर्म में?
पहले जियो और जीने दो का, अर्थ समझ जाएं!
फिर आप और हम मिलकर, स्वतंत्रता दिवस मनाएं!
वरना, कोई हक नहीं हमें, यह खुशी मनाने का।
गुरुओं के उपदेश को, दांव पे लगाने का।
दिलो-जान से संभाल पाएं, हुस्न देश का,
'दुखी' को मिलेगा सिला, नया गीत गाने का।

-श्री सुरजीत 'दुखी', ३३२/९, गली जट्टां, अंदरून लाहौरी गेट, श्री अमृतसर। मो: ९९१४५३१२२१

श्री गुरु ग्रंथ साहिब सम्बंधी स्रोत-सूचना

*-डॉ. गुरमेल सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब से सम्बंधित अब (२०१० ई) तक विभिन्न पक्षों पर अनेक प्रकार का कार्य हो चुका है जिसका समूह सर्वेक्षण तथा मूल्यांकन करना किसी बड़ी एवं जिम्मेदार संस्था का कार्य है। यह स्रोत-सूचना का संकल्प श्री गुरु ग्रंथ साहिब से सम्बंधित नए शोधकर्ताओं की सुविधा को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। आशा है कि यह स्रोत-सूचना शोध कर रहे विद्यार्थियों के लिए संकलन-कार्य में काफी हद तक सहायक होगी।

सीमाएं :

* सूचना गुरमुखी अक्षर क्रमानुसार है और यहां केवल पंजाबी (गुरमुखी) में हुए शोध-कार्यों को ही सम्मिलित किया गया है।
* गुरबाणी के समग्र रूप को सामने रखकर किए गए कार्यों को शामिल किया गया है।
* पंजाबी शब्द-रूप/शब्द-जोड़ मूल वाले ही रखे गए हैं।
* हवाला ग्रंथों/स्रोतों की सूचना बौधिक तथा समय-सीमा के सम्मुख है, इसलिए हो चुके अनेक कार्यों का रह जाना स्वाभाविक है। फिर भी इसकी सूचना आदि देने वाले का धन्यवाद होगा।
* फुटकल शीर्षकाधीन दी सूचना (बिना किसी क्रम के) पूरी तरह से डॉ हरनाम सिंघ शान की पुस्तक 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब की कोशकारी' (भाषा विभाग, पटियाला, १९९४) पर आधारित है।
* अन्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

स्रोत-सूचना :

* अकाली कौर सिंघ, श्री गुर रतन प्रकाश (तुक ततकरा), भाषा विभाग, पटियाला, १९६३ (पुनः प्रकाशित)
* अतर सिंघ (ज्ञानी), श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दे प्रयाय, संगरूर, १९०४
* अमर सिंघ, श्री गुरु ग्रंथ साहिब-- तुक ततकरा, भाषा विभाग, पटियाला, १९९९
* सतबीर सिंघ (प्रिं.), श्री गुरु ग्रंथ साहिब दा सार-विसथार (तीन भाग), न्यू बुक कंपनी, जलंधर, १९८५
* संता सिंघ तातले, गुरबाणी तत-सागर (छः भाग), गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर १९९५
* शबदारथ पोथीआं श्री गुरु ग्रंथ साहिब (चार भाग), शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
* साहिब सिंघ (प्रो.), श्री गुरु ग्रंथ साहिब दरपण (दस भाग), राज पब्लिशर्ज, जलंधर, १९७१ (दूसरी छाप)
* शाम सिंघ (भाई), प्रयाय श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दे, दी ऐंगलो-उर्दू और गुरमुखी प्रेस, श्री अमृतसर, १९०६
* सुते प्रकाश (संत), प्रयाय आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब (दो भाग), वज़ीर हिंद प्रेस, श्री अमृतसर, १८९८

**श्री गुरु ग्रंथ साहिब अध्ययन विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२*

* सुरिंदर सिंघ (कोहली, डॉ.), गुरबाणी अखाण अते अखौतां, भाषा विभाग, पटियाला, जुलाई-१९७२
* सेवा सिंघ सेवक, गुरबाणी संखिआ कोश, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर, मई-१९७१
* सोहण सिंघ सीतल (ज्ञानी), गुरबाणी विच पुराणिक भगत ते पातर, लाहौर बुक शॉप, लुधियाना, १९८५
* श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के मध प्रयाय फारसी पदां के, चश्मा-ए-नूर, श्री अमृतसर, १९५२
* हरप्रीत कौर-गुरमेल सिंघ, श्री गुरु ग्रंथ साहिब विचलीआं प्रीभाषावां दा कोश, प्रो. साहिब सिंघ गुरमति ट्रस्ट, पटियाला, २००३
* हरबंस सिंघ (ज्ञानी), श्री गुरु ग्रंथ साहिब दरशन निरणै सटीक (तिरह भाग), गुरबाणी सेवा मिशन, पटियाला, १९९२
* कान्ह सिंघ नाभा (भाई), महान कोश, भाषा विभाग, पटियाला, १९९९ (छठी बार)
* कान्ह सिंघ नाभा (भाई), गुरमत मारतंड, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, १९६२
* किरपाल सिंघ (ज्ञानी), सम-अरथ कोश, भाई जवाहर सिंघ किरपाल सिंघ, श्री अमृतसर, १९६९
* क्रिपाल सिंघ (संत), संप्रदाय सटीक श्री गुरु ग्रंथ साहिब (दस भाग), भाई जवाहर सिंघ किरपाल सिंघ, श्री अमृतसर, १९८१
* गंगा सिंघ ग्रंथी (भाई), इंडेक्स, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी (तुक ततकरा), गोबिंदगढ़, सं. ना. ४४६/१९१४ ई. (इंदिरा प्रेस शिमला)
* गुरचरन सिंघ (डॉ.), शबद अनुक्रमणिका श्री गुरु ग्रंथ साहिब (दो भाग), पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९९४ (दूसरी बार, संशोधित संस्करण)
* गुरचरन सिंघ (डॉ.), श्री गुरु ग्रंथ कोश (दो भाग), पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, २००३
* गुरचरन सिंघ (डॉ.), श्री गुरु ग्रंथ साहिब विचले फारसी-अरबी मूलक शबदां दा कोश, प्रो. साहिब सिंघ ट्रस्ट, पटियाला, २००५ (संशोधित रूप)
* गुरबखश सिंघ केसरी, संखिआ कोश, पंजाबी साहित अकादमी, लुधियाना, सितंबर, १९६१
* गुरबखश सिंघ (ज्ञानी), श्री गुरु ग्रंथ साहिब दा गणित कोश, खालसा प्रचार प्रेस, तरनतारन, १९४०
* गोबिंद दास उदासीन (संत), प्रयाय श्री गुरु ग्रंथ साहिब (पांच भाग), अमोलक प्रेस, श्री अमृतसर, १९२८
* चंदा सिंघ (पंडित), सगम प्रिया श्री गुरु ग्रंथ साहिब, गुरमति प्रचार जत्था, गुरमुखी प्रेस, श्री अमृतसर, १८८७
* चंदा सिंघ (ज्ञानी), गुरु ग्रंथ साहिब जी दे प्रयाय (पत्थर छाप), श्री अमृतसर, १९०७
* चरन सिंघ (डॉ.), बाणी बिओरा, खालसा ट्रेक्ट सोसायटी, श्री अमृतसर, १९०२ ('निरगुणीआरा' पत्रिका विशेषांक)
* जोगिंदर सिंघ तलवाड़ा (ज्ञानी), गुरु ग्रंथ साहिब बाणी बिओरा (प्रथम भाग), सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर, १९९२
* तारा सिंघ नरोतम (पंडित), गुरू-गिरारथ कोश (दो भाग), राजिंद्रा प्रेस, पटियाला, १८८५
* तेजा सिंघ (सोढ़ी), श्री गुरबाणी प्रकाश कोश (या) गुरबाणी सफेवार पदां दे अरथ (दो भाग), शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, १९३३
* नरैण सिंघ मुजंग वाले (ज्ञानी), श्री गुरु ग्रंथ साहिब सटीक (दस भाग), सदर बाज़ार, लाहौर छावनी, १९३९

. . . शेष आगामी अंक में

स्वाधीनता संग्राम में सिक्खों का योगदान

-स. दमनजीत सिंघ

भारत में सिक्खों की जनसंख्या देश की पूरी आबादी के लगभग दो प्रतिशत है, मगर स्वत्रंता संग्राम में इनका योगदान अस्सी प्रतिशत से भी अधिक है। स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास तब तक अपूर्ण माना जाता है जब तक सिक्खों के योगदान का पूरा उल्लेख न हो।

सही बात तो यह है कि अंग्रेज जब पूरे भारत को गुलामी की जंजीरों में जकड़ चुके थे तो किसी में हिम्मत नहीं थी कि वो इन जंजीरों को तोड़ सके। ऐसे में आज़ादी के प्यारे सिक्खों में कूका लहर पैदा हुई। इस लहर के प्रवर्तक बाबा राम सिंघ थे। बाबा राम सिंघ ने सबसे पहले विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने का आंदोलन चलाया था। उन्होंने विदेशी कपड़ों, न्यायालयों, रेल गाड़ियों, अंग्रेजी स्कूलों, कॉलेजों, डाकखानों का पूर्णत: बाइकाट किया। अंग्रेज उनसे काफी भय खाते थे। उनको देश की आज़ादी से प्रेम एवं गुलामी से नफ़रत थी। जनमानस पर उनके प्रभाव को देखते हुए सर्वप्रथम उन्हें १८७२ ई. में इलाहाबाद के किले में बंद कर दिया। फिर बाद में उन्हें देश-निकाले की सज़ा देकर रंगून भेज दिया गया। सिक्खों पर अंग्रेजों द्वारा काफी सख़्ती बरती गयी। इतिहास गवाह है कि ६८ जोशीले कूका लहर के सिक्खों को मौत की सज़ा दी गयी, ४९ को तोप से उड़ा दिया गया, १६ को फांसी पर लटका दिया गया तथा ५२ को लंबी कैद की सज़ा दी गयी। कूका आंदोलन का प्रभाव महात्मा गांधी पर भी पड़ा। उनका असहयोग आंदोलन शुरू करने का यही एक कारण था।

889, Phase-X, Mohali-160062

सच्चाई तो यह है कि भारत को आज़ाद कराने में कूका आंदोलन, अकाली लहर, बब्बर अकाली लहर, गदर पार्टी आदि में शामिल होकर हज़ारों सिक्ख हंसते-हंसते देश की स्वतंत्रता के लिए कुर्बान हो गये। इस लहर ने, विशेषत: पंजाब में अंग्रेजी सरकार की जड़ें हिला दी थीं। प्रथम रूप में यह एक 'गुरुद्वारा सुधार लहर' थी, जो अंग्रेजी शासन तले काम कर रहे महंतों से गुरुद्वारों को आज़ाद करने के लिए प्रकट हुई थी। आज़ादी के इन दीवानों की अंग्रेज पुलिस द्वारा सख़्त मारपीट की जाती थी। यह मार जुल्मी होती थी। पुलिस वाले अकालियों के शरीर पर चढ़कर नाचते थे। पुलिस सिक्खों को मारती-मारती थक जाती थी, परंतु सिक्ख मार खाते-खाते थकते नहीं थे; पुलिस जुल्म करती थक जाती थी, परंतु सिक्ख जुल्म सहते-सहते नहीं थकते थे। अंत में गुरुद्वारों को आज़ाद करने के मामले में अंग्रेजी सरकार को सिक्खों के सामने घुटने टेकने पड़े। अंग्रेजी सरकार हार गयी और सिक्ख जीत गए।

चक्रवर्ती राज गोपालाचार्य ने एक समागम में सिक्खों की कुर्बानी की प्रशंसा करते हुए

कहा था, "मैं बिना खुशामद और मुसबालजों से कह सकता हूं कि अकालियों ने प्रकट कर दिया है कि वे भारत में दूसरी कौमों से तकड़े हैं। मैं अकालियों को धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने मेरी अगुआई की है।"

बब्बर अकाली लहर का एकमात्र संदेश था देश में एकता की लहर पैदा करना। देश की आज़ादी के लिए उनके दिल में बड़ी तड़प थी। सच्चाई तो यह है कि आज़ादी की लड़ाई में फांसी और काले पानी की सज़ा उस समय पंजाब में सिक्खों के हिस्से ज्यादा संख्या में आई। श्री शचेन्द्र नाथ सन्याल ने आज़ादी के लिए मर-मिटने वाले सिक्खों के बारे में लिखा है, "अपने देश के उद्धार के लिए अपना तन, मन और धन, दर्जनों वर्षों की खून-पसीने की कमाई देश की आज़ादी के लिए एक क्षण में बलिदान कर देना, यह हौसला भारत के सिक्ख बहादुरों को ही अपने बुजुर्गों से विरासत में मिल सका है।"

'अमरगाथा बंदोजीवन, पृष्ठ ६२' के अनुसार, "१३ अप्रैल, १९१९ के दिन जलियांवाला बाग कांड को कौन नहीं जानता, जिसमें कुल १३०० शहीद होने वालों में ७६९ केवल सिक्ख थे।"

पंडित मोतीलाल नेहरू ने लिखा है, "मैं अकालियों को प्रणाम करता हूं जो देश की आज़ादी के लिए जंग लड़ते रहे हैं।" पंडित मदन मोहन मालवीय ने कहा कि "गुरु के बाग में ही देश की आज़ादी की पहली आवाज़ उठी है और इसने ही देश को आज़ाद कराना है।"

कविता

आज़ादी का संकल्प

आज़ादी का संकल्प, आज़ादी का सपना
बहुत-बहुत महान है।
इसकी रक्षा के लिए
चुकाना पड़ता है मोल
होना होता कुर्बान है।
संकल्प यह, साधना यह
युग-युगान है।
सिर रखना हथेली पर
पीछे मुड़ कर न देखना
इसके परवाने की पहचान है।
हाथ में लिए मशाल
कभी तलवार, कभी ढाल
अलग-अलग रहता इसका
कुर्बानी-रुझान है।
कभी दीवारों में चिने जाना
कभी रणक्षेत्र में जूझ जाना
कभी आयु नौ साल
कभी आयु सात साल
इतिहास रह जाता हैरान है।
तख़्तो-ताऊस के
सभी कुछ कुफरनामा
उसके खिलाफ ऊंचा दमकता ज़फरनामा
गर्म तवी पर कभी
'तेरा भाणा' मीठ लगान है।
इतिहास नमस्कार करता
सदियों-सदी निशान है।
जीता-जागता संकल्प महान है।
अंबर ऊंचा रुशनार है
स्वतंत्रता सपना सुजान है।

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर, मो ९४१७१-७५८४६

गुरबाणी चिंतनधारा : ६१

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ मनजीत कौर**

सातवीं असटपदी

सलोकु ॥
अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ ॥
जो जो कहै सु मुकता होइ ॥
सुनि मीता नानकु बिनवंता ॥
साध जना की अचरज कथा ॥१॥(पन्ना २७१)

उपरोक्त सलोक में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने उस परमेश्वर को अगम्य तथा अथाह मानते हुए उसके नाम-सिमरन में तल्लीन संत-जनों की महिमा को भी अद्‌भुत बताया है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि वह परमेश्वर जीव की इंद्रियों की पहुंच से परे है, इसलिए अथाह प्रभु की थाह कोई नहीं पा सकता। जो जीव उस प्रभु की आराधना करता है वह विकारों के मकड़जाल से मुक्त हो जाता है। गुरु पंचम पातशाह विनती करते हैं कि हे मित्र! सिमरन में लीन गुरमुख-जनों की महिमा अवर्णननीय है अर्थात् कथन से परे है। सिमरन की बरकतों से भक्त-जनों में पैदा हुए गुणों का ज़िक्र करते हुए आश्चर्य होता है, अत: सिमरन करने वाले साधुओं की अद्‌भुत महिमा वर्णन से परे है।

श्री गुरु नानक देव जी ने जपु जी साहिब में मनन करने वालों की अवस्था को अद्‌भुत और अवर्णननीय बताया है कि कोई कागज़ और लेखनी उनका पूर्णतया वर्णन करने में असमर्थ है और जो वर्णन करने का यत्न करता है उसे भी पछतावा ही होता है, यथा :

मंने की गति कही न जाइ ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
कागदि कलम न लिखणहारु ॥
मंने का बहि करनि वीचारु ॥ (पन्ना ३)

वस्तुत: साधु-जनों की कथा कुतूहल पैदा करने वाली है।

असटपदी ॥
साध कै संगि मुख ऊजल होत ॥
साधसंगि मलु सगली खोत ॥
साध कै संगि मिटै अभिमानु ॥
साध कै संगि प्रगटै सुगिआनु ॥
साध कै संगि बुझै प्रभ नेरा ॥
साधसंगि सभु होत निबेरा ॥
साध कै संगि पाए नाम रतनु ॥
साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ॥
साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी ॥
नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी ॥१॥

सातवीं असटपदी की प्रथम पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी ने साधसंगत की महिमा का बखान किया है। साधु की संगत करने वाले जीव का मुख उज्जवल (प्रकाशवान) हो जाता है। यही नहीं, उसकी समस्त विकारों की मैल उतर जाती है और सर्वत्र उसकी इज्जत (मान-सम्मान) होती है। साधुओं की संगत में रहने से मन का अहंकार दूर होता है तथा श्रेष्ठ (सर्वोत्तम) ज्ञान की प्राप्ति होती है अर्थात् विवेक

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

बुद्धि की प्राप्ति होती है। संत-जनों की संगत में रहते हुए परमेश्वर अंग-संग प्रतीत होता है अर्थात् हाज़िर-नाज़िर जर्रे-जर्रे में समाया हुआ आभासित होता है। साधु की संगत से समस्त निष्कृत कर्मों का विनाश हो जाता है जिसकी बदौलत जीव विषय-विकारों में पड़ने से बच जाता है। साधुओं की संगत के फलस्वरूप जीव नामरूपी अनमोल रत्न प्राप्त कर लेता है तथा नाम की बदौलत केवल एक अकाल पुरख की प्राप्ति का यत्न करता है। (इस संसार में) कौन ऐसा व्यक्ति है जो साधुओं की महिमा को बयान कर सके? कोई भी नहीं, क्योंकि साधु की महिमा प्रभु-महिमा की तरह ही अकथनीय है। पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि साधु की महिमा (शोभा) प्रभु-महिमा तुल्य हो जाती है।

वस्तुत: जहां नाम और नामी अभेद हो जाते हैं, वहां दोनों की अवस्था को बयान करना नामुमकिन हो जाता है। परमेश्वर की तरह साधु की महिमा भी अपरंपार है। चिंतकों के चिंतनानुसार हज़ारों सतसंगी एक स्थान पर एकत्र हों तो उनमें से कोई विरला ही जिज्ञासु होता है जो यह विचार करता है कि मैं कौन हूं? मेरा इस संसार में आने का मक़सद क्या है? मैं प्रभु से क्यों बिछुड़ा हूं? मेरा संसार और निरंकार से क्या सम्बंध है? ऐसे ही हज़ारों जिज्ञासुओं की एकत्रता में से कोई विरला ही साधु होता है जो परमेश्वर का ही रूप हो जाता है। गुरबाणी में सच्चे संत की महिमा बारंबार की गई है :

संत प्रसादि भए मन निरमल हरि कीरतन महि अनदिनु जागा ॥ (पन्ना ३४३)

यही नहीं, जिसे परमेश्वर ने नाम बख़्शा उसका मुख उज्जवल कर दिया, यथा गुरबाणी प्रमाण :

संत जना का मुखु उजलु कीना ॥
करि किरपा अपुना नामुञ दीना ॥
(पन्ना ८०४)

साधु-जनों की शरण में आकर जो गुरु-सेवा में लीन हो गए वही अहंकार-विहीन होकर परम पद को सहजता से प्राप्त करने में कामयाब हो गए, यथा :

हरि हरे हरि गुण निधे हरि संतन कै वसि आए राम ॥
संत चरण गुर सेवा लागे तिनी परम पद पाए राम ॥ (पन्ना ७८०)

ऐसे साधुओं की चरण-धूलि से बंधन मुक्त होना सहज हो जाता है, यथा :

धुरि आपे जिन्हा नो बखसिओनु भाई सबदे लइअनु मिलाइ ॥
धूड़ि तिन्हा की अघुलीऐ भाई सतसंगति मेलि मिलाइ ॥ (पन्ना ११७७)

वस्तुत: इसे ही जीवित मुक्तावस्था कहा गया है। वाहिगुरु की अपार रहमत से ही पूर्ण साधु की प्राप्ति होती है। वर्तमान में बेशक तथाकथित ढोंगी साधुओं की भरमार है। गुरबाणी आशयानुसार पूर्ण साधु और प्रभु अभेद है, यथा भक्त कबीर जी का फरमान है :

हरि जनु ऐसा चाहीऐ जैसा हरि ही होइ ॥
(पन्ना १३७२)

सच्चा साधु अपने स्वभाव को कदाचित् नहीं त्यागता चाहे उसे करोड़ों दुष्ट ही क्यों न मिल जाएं, यथा :

कबीर संतु न छाडै संतई जउ कोटिक मिलहि असंत ॥
मलिआगरु भुयंगम बेढिओ त सीतलता न तजंत ॥
(पन्ना १३७३)

परम दयालु परमेश्वर और पूर्ण संत में तिल मात्र भी अंतर नहीं।

साध कै संगि अगोचरु मिलै ॥
साध कै संगि सदा परफुलै ॥
साध कै संगि आवहि बसि पंचा ॥
साधसंगि अंम्रित रसु भुंचा ॥
साधसंगि होइ सभ की रेन ॥
साध कै संगि मनोहर बैन ॥
साध कै संगि न कतहूं धावै ॥
साधसंगि असथिति मनु पावै ॥
साध कै संगि माइआ ते भिंन ॥
साधसंगि नानक प्रभ सुप्रसंन ॥२॥

सातवीं असटपदी की दूसरी पउड़ी में भी गुरु पातशाह ने साधुओं की उपमा बयान की है। श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि साधु (गुरमुख) की संगत के फलस्वरूप वह परमेश्वर, जो मन-इंद्रियों की पहुंच से परे है, सहजता से मिल जाता है।

साधु की संगत में मनुष्य सदैव प्रसन्नचित्त रहता है अर्थात् समस्त चिंताओं से मुक्त होकर आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। साधु की संगत पांचों विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार) से निजात दिला देती है अर्थात् साधु की संगत करने वाले जीव के कामदिक पांचों विकार वश में आ जाते हैं। जीव साधु की संगत में अमृत-रस का पान कर लेता है अर्थात् अमरता पा लेता है। साधु की संगत के फलस्वरूप विनम्रता का धारणी बनकर सबकी चरण-धूलि बना रहता है और सबके साथ मधुर वचन बोलता है। साधु-जनों की संगत की बरकतों से जीव का मन अडोल अवस्था को प्राप्त हो जाता है अर्थात् उसकी हर तरह की भटकना समाप्त हो जाती है तथा वो प्रभु-चरणों में स्थायित्व प्राप्त कर लेता है अर्थात् सदैव कायम रहने वाले प्रभु के चरणों में आकर उस जीव का मन भी स्थिर हो जाता है। डांवांडोल स्थिति से वह पूर्णतया छुटकारा पाने में सफल हो जाता है। अंतिम पंक्ति में पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि साधु-जनों की संगत में मानव मन माया के प्रभाव से उपराम रहता है अर्थात् त्रिगुणी माया की कोई शक्ति उसे अपने जीवन-मार्ग से विचलित नहीं कर सकती। साधु की संगत से पारब्रह्म परमेश्वर उस जीव पर सदा मेहरबान रहता है।

अकाल पुरख अगम अगोचर है तथा ज्ञान-इंद्रियों की पहुंच उस तक हरगिज़ नहीं हो सकती। जिस जीव पर अकाल पुरख की रहमत होती है उसे पूर्ण गुरु की प्राप्ति हो जाती है और पूर्ण गुरु की प्राप्ति ईश्वर की सर्वव्यापकता का बोध सहजता से करा देती है। पूर्ण गुरु द्वारा सर्वोत्तम दान 'नाम दान' की प्राप्ति हो जाती है जिसके फलस्वरूप जीव निराभिमानी होकर सदैव आनंद भरपूर अमृत का पान करता है, यथा गुरबाणी फरमान है :

जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी पाइआ नामु निधानु ॥
अंतरि हरि रसु रवि रहिआ चूका मनि अभिमानु ॥
हिरदै कमलु प्रगासिआ लागा सहजि धिआनु ॥
मनु निरमलु हरि रवि रहिआ पाइआ दरगहि मानु ॥ (पन्ना २६)

प्रभु के साथ एक रूप होने पर जिनका मन निर्मल हो गया उन्हें प्रभु की दरगाह पर सम्मान प्राप्त होता है।

साधसंगि दुसमन सभि मीत ॥
साधू कै संगि महा पुनीत ॥
साधसंगि किस सिउ नही बैरु ॥
साध कै संगि न बीगा पैरु ॥
साध कै संगि नाही को मंदा ॥
साधसंगि जाने परमानंदा ॥
साध कै संगि नाही हउ तापु ॥
साध कै संगि तजै सभु आपु ॥

आपे जानै साध बडाई ॥
नानक साध प्रभू बनि आई ॥३॥

तीसरी पउड़ी में साधु की संगत की महिमा का बखान करते हुए पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि साधु-जनों की संगत में रहने से वैरी (शत्रु) भी मित्र लगने लगते हैं। गुरमुखों की संगत में इतनी सामर्थ्य है कि वह साधारण मनुष्य का भी हृदय परिवर्तित कर सकती है, जिसके फलस्वरूप दुश्मन भी सज्जन, हितैषी, मित्रवत प्रतीत होने लगते हैं। साधु-जनों की संगत से जीव का अपना हृदय अत्यंत निर्मल हो जाता है। साधु की संगत के फलस्वरूप किसी के साथ वैर-भाव नहीं रह जाता और साधु की संगत करने वाला कभी कुमार्ग पर नहीं जाता अर्थात् ऐसे जीव के पैर कभी गलत दिशा में गलत कार्य हेतु अग्रसर होते, क्योंकि उसे समझ आ जाती है कि सतसंगी व्यक्ति को गलत मार्ग पर चलना शोभा नहीं देता। साधु की संगत में कोई व्यक्ति बुरा (निम्न) दिखाई नहीं पड़ता। साधु की संगत के फलस्वरूप आनंदस्वरूप पारब्रह्म की पहचान हो जाती है अर्थात् उसकी सर्वव्यापकता एवं आनंद के सागर स्वरूप का विश्वास हृदय में दृढ़ हो जाता है। साधु की संगत करने से जीव की अहंकार रूपी तपिश पूर्णतया शांत हो जाती है। गुरु पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में पावन फरमान करते हैं कि साधु और परमेश्वर की आपस में प्रीति हो जाती है अर्थात् अत्यधिक प्रेम के कारण वे परस्पर एक रूप हो जाते हैं।

वस्तुत: जीव में द्वैत की भावना कूट-कूट कर भरी पड़ी है, जिसके फलस्वरूप वह ईर्ष्या तथा द्वैत की आग में जलता रहता है। मोह और अहंकार रूपी विकार भी इतने प्रबल हैं कि जीव अपने कर्त्तव्य को न पहचानता हुआ, मोह में अंधा हुआ अकरणीय कार्यों में लिप्त हो जाता है। मोहवश वह किसी को अपना मित्र, हितैषी तथा ईर्ष्यावश किसी को अपना दुश्मन समझ बैठता है। दोनों ही परिस्थितियों में वह अपना ही अहित कर रहा होता है। प्रभु-कृपा से इसे साधु (गुरमुखों) की संगत नसीब होती है तो यह अपने कर्त्तव्य समझता हुआ करने योग्य कार्य करता है और त्यागने योग्य कार्यों का त्याग करके सही मार्ग पर विवेक बुद्धि द्वारा परख करने योग्य हो जाता है। फलस्वरूप न यह मोह में फंसकर किसी गलत कार्य की ओर प्रवृत्त होता है और न ही ईर्ष्यावश किसी से द्वेष-भाव रखता हुआ किसी का बुरा सोचता है। मन, वचन, कर्म से इसका हृदय निर्मल हो जाता है। तब इसकी आत्मा पुकार उठती है, जैसा कि गुरबाणी का पावन फरमान है :

ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ *(पन्ना १२९९)*

द्वैत भाव के तिरोहित होते ही मन मयूर की भांति नाच उठता है, जैसा कि गुरबाणी में पावन उपदेश है :

बैरी मीत होए समान ॥ सरब महि पूरन भगवान ॥
प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइआ ॥
गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ ॥
(पन्ना ११४७)

निष्कर्षत: साधु की संगत में अनंत सुख समाहित हैं, क्योंकि साधु और परमेश्वर एक ही रूप हैं।

साध कै संगि न कबहू धावै ॥
साध कै संगि सदा सुखु पावै ॥
साधसंगि बसतु अगोचर लहै ॥
साधू कै संगि अजरु सहै ॥
साध कै संगि बसै थानि ऊचै ॥

साधू कै संगि महलि पहूचै ॥
साध कै संगि द्रिड़ै सभि धरम ॥
साध कै संगि केवल पारब्रहम ॥
साध कै संगि पाए नाम निधान ॥
नानक साधू कै कुरबान ॥४॥ (पन्ना २७१)

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी इस पउड़ी में साधु-जनों की संगत, जीव के लिए कितनी हितकारी है, इस तथ्य को समझाते हुए पावन फरमान करते हैं कि साधु-जनों की संगत के फलस्वरूप जीव के जीवन से भटकाव समाप्त हो जाता है अर्थात् साधु की संगत के फलस्वरूप मनुष्य का मन हर परिस्थिति में स्थिर रहता है, वह कदाचित डांवांडोल नहीं होता। साधु की संगत में जीव सदैव सुख का अनुभव करता है। साधु की संगत से अगोचर अर्थात् मन इंद्रियों की पहुंच से परे की वस्तु भी सहजता से नसीब हो जाती है। साधु की संगत की बदौलत जीव असहनीय दुख (पीड़ा) को भी सहन करने की सामर्थ्य वाला हो जाता है। साधु-जनों की संगत में रहकर मनुष्य उच्च स्थान आत्मिक अवस्था) में निवास करता है। साधु की संगत जीव को महल तक अर्थात् प्रभु प्रियतम के चरणों से जोड़ देती है, जिसके फलस्वरूप जीव अकाल पुरख के महल तक पहुंच जाता है। साधु की संगत में रहते हुए जीव अपने सारे दायित्वों को अच्छी तरह समझ लेता है, केवल समझ ही नहीं लेता अपितु अपने समस्त फर्जों को बाखूबी निभाता भी है। यही नहीं, ऐसा जीव अकाल पुरख को ही सर्वत्र देखता है अर्थात् उसे कण-कण में परमेश्वर का अस्तित्व दिखाई देने लगता है। साधु की संगत में जीव नाम-ख़ज़ाना ढूंढ लेता हैं। अत: पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि मैं साधु-जनों से कुर्बान (बलिहार) जाता हूं।

वस्तुत: साधु की संगत मन की भटकना को समूल नष्ट कर देती है, क्योंकि तब जीव अपना ध्यान अंदर केंद्रित कर लेता है। जब जीव तन के स्तर से ऊंचा उठकर आत्मा के स्तर पर जीता है तब उसके समस्त दुख-कलेश-संताप मिट जाते हैं और वह सच्चा तथा सदा कायम रहने वाला सुख प्राप्त कर लेता है। साधु की संगत से अगोचर प्रभु ज्ञान-नेत्रों से सर्वत्र में बसता प्रतीत होने लगता है, साथ ही उसकी रज़ा मीठी लगने लगती है, फलस्वरूप शारीरिक दुख-सुख में समरूप रहता हुआ न सुख में आपे से बाहर होता है और न ही दुखों में हाय-तौबा करता हुआ किसी से गिला-शिकवा करता है। तब वह ऊंची आत्मिक अवस्था को प्राप्त कर लेता है। मानो उसे भक्त कबीर जी की पावन बाणी के अनुसार सहजता से जीवन-यापन करने की जाच आ गई हो, यथा :

बंदे बंदगी इकतीआर ॥
साहिबु रोसु धरउ कि पिआरु ॥१॥रहाउ॥
नामु तेरा आधारु मेरा जिउ फूलु जई है नारि ॥
कहि कबीर गुलामु घर का जीआइ भावै मारि ॥
(पन्ना ३३८)

अत: साधु की संगत के फलस्वरूप ईश्वर का सिमरन करते हुए जीव उसी का गुलाम होकर अपने जीवन को धन्य मानता है। इसे आध्यात्मिक जगत में जीने की मुक्त अवस्था की संज्ञा दी गई है और यह उच्चावस्था साधु की संगत में सहजता से प्राप्त हो जाती है। ❁

गुर सिखी बारीक है . . . १६

*-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

परमात्मा से किया गया प्रेम ही सच्चा और सर्वश्रेष्ठ है जिसमें असीम आनंद प्राप्त होता है, किंतु यह सहज नहीं है। प्रेम की बात करना तो सरल है मगर बातें करने से ही परमात्मा से प्रेम का अमृत रस मिल जाये तो लाखों-करोड़ों लोगों का उद्धार हो गया होता और धरती स्वर्ग बन गयी होती। मात्र बातों से तो किसी जीव का भी प्रेम नहीं पाया जा सकता है। उसके लिए भी प्रयास करना पड़ता है, त्याग करना होता है, खुद को सिद्ध करना पड़ता है। जब बात परमात्मा से जुड़ने की हो तो ढोंग-पाखंड एकदम व्यर्थ हैं। सामान्य जीव को तो छला जा सकता है, सर्वज्ञ परमात्मा को नहीं, जो मनुष्य के अंतर में बैठकर सब कुछ देख-समझ रहा है :

जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईऐ ॥
जोगु न मुंदी मूंडि मुडाइऐ जोगु न सिंङी वाईऐ ॥
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥१॥
गली जोगु न होई ॥
एक द्रिसटि करि समसरि जाणै जोगी कहीऐ सोई ॥१॥रहाउ॥
जोगु न बाहरि मड़ी मसाणी जोगु न ताड़ी लाईऐ ॥
जोगु न देसि दिसंतरि भविऐ जोगु न तीरथि नाईऐ ॥
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥२॥ *(पन्ना ७३०)*

श्री गुरु नानक साहिब ने अपने उपरोक्त अनमोल वचन में जहां मनुष्य को निरर्थक चेष्टाओं के प्रति सचेत किया वहीं परमात्मा से जुड़ने को एक पवित्र और गंभीर आयाम दिया। तत्कालीन समाज में प्रचलित परमात्मा के प्रेम के प्रकटीकरण, जैसे तन पर भस्म चढ़ा लेना, सिर मुंडवा लेना, अंगूठी या मालाएं पहन लेना, कोई वाद्य-यंत्र बजाते घूमना आदि पर प्रहार करते हुए उन्होंने कहा कि इससे परमात्मा नहीं मिलने वाला। आज समाज और समय बदला है तो चेष्टाएं भी बदल गयी हैं, लेकिन सोच नहीं। यही पाखंड आज अलग रूप में अपने आस-पास दिखता है। वाह्य रूप से धर्म का वरण किया हुआ है, पर भीतर परमात्मा नहीं है, इसलिए विकार हैं, दुख हैं, संताप है। दिखावा धर्म नहीं है। इससे परमात्मा-प्रेम को नहीं पाया जा सकता है। इसके लिए एक ही ढंग है, वो है "अंजन माहि निरंजनि" अर्थात् संसार में रहते हुए भी संसार से निर्लिप्त रहना और समदृष्टि को धारण करना। कठोर साधन अपनाने, शमशान में भटकने, तीर्थ-स्नान आदि से नहीं, परमात्मा स्वयं का परिमार्जन करने से मिलता है। शरीर पर भस्म चढ़ा लेना, मालाएं पहन लेना, सिर मुंडवा लेना आसान है, किंतु माया के मध्य रहकर माया से विरक्त रहना, भेदभाव के मध्य समदृष्टि रख पाना अत्यंत कठिन है। परमात्मा का प्रेम उसे ही प्राप्त होता है जो इस कठिन मार्ग पर चलकर इसे जीत लेता है। इस श्रेष्ठतम प्रेम

**E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो : ९४१५९६०५३३*

को पाने का रास्ता गुरु साहिबान ने विस्तार से बताया है ताकि उस कठिनता पर विजय पायी जा सके। भाई गुरदास जी इसकी सुंदर व्याख्या निम्न वार में करते हैं :

खेती वाड़ि सु ढिंगरी किकर आस पास जिउ बागै।
सप पलेटे चंनणै बूहे जंदा कुता जागै।
कवलै कंडे जाणीअनि सिआणा इकु कोई विचि फागै।
जिउ पारसु विचि पथरां मणि मसतकि जिउ कालै नागै।
रतनु सोहै गलि पोत विचि मैगलु बधा कचै धागै।
भाव भगति भुख जाइ घरि बिदरु खवालै पिंनी सागै।
चरण कवल गुरु सिख भउर साधसंगति सहलंगु सभागै।
पिरम पिआले दुतरु झागै ॥ (वार २६:२५)

भाई गुरदास जी के अनुसार, जिस तरह खेत में उपजी फसल की रक्षा बाड़ से ही संभव है और चारों तरफ कांटों से घेरकर ही बाग की रक्षा की जा सकती है; चंदन के वृक्ष पर सांप लिपटे रहते हैं और दरवाजे पर ताला लगा रहता है, साथ में कुत्ता जाग रहा होता है; जिस तरह पारस अन्य पत्थरों से घिरा होता है और अमूल्य मणि काले नाग के मस्तक पर टिकी होती है; रत्न जिस तरह गले में लटकी माला में सुशोभित होता है और जैसे हाथी कच्चे धागों से बने रस्से से बंधा होता है; मन में धारण किये गये भाव के कारण जिस तरह श्री कृष्ण जी को सुदामा के घर आहार करने जाना पड़ता है, ठीक उसी तरह एक गुरमुख और सतिगुरु के बीच सम्बंध बनता है। परमात्मा के प्रेम का प्याला कठिनता से मिलता है।

एक गुरमुख यदि परमात्मा की कृपा से उसके प्रेम में लीन हो जाता है तो इस प्रेम को बनाये रखने के लिए उसे गहरी मशक्कत करनी पड़ती है। जिस तरह खेत को बाड़ लगाकर, बाग को कांटे बिछाकर सुरक्षित किया जाता है उसी तरह इस प्रेम को विकारों से सुरक्षित करने के लिए मति और पति की बाड़ लगानी होगी। जिस तरह सांप चंदन वृक्ष की ओर ताला व कुत्ता दरवाजे की रक्षा करते हैं उसी तरह अपने विवेक को जागृत रखकर प्रेम के रस को गहरा करते जाना होगा। कांटे जिस तरह किसी को कमल के फूल तक पहुंचने से रोकते हैं और जिस तरह होली के हुड़दंग से कोई बुद्धिमान पुरुष स्वयं को बचा लेता है, उसी तरह मोह-माया के प्रलोभनों से स्वयं को सदा बचाये रखना होगा। काले नाग द्वारा मस्तक पर धारण की गई मणि और गले में पहनी गई माला के बीचो-बीच सुशोभित रत्न की तरह परमात्मा के प्रेम को जीवन में प्रमुखता देनी होगी। जिस तरह भाव के अधीन श्रीकृष्ण जी सुदामा के घर आहार करने पहुंच गये वैसी ही तत्परता मन में परमात्मा के प्रेम की रखनी होगी। यह कठिन इसलिए है क्योंकि माया का जाल बड़ा घना और शक्तिशाली है। उससे बचना आसान नहीं है। मनुष्य किस पल डगमगा जायेगा, कहा नहीं जा सकता। मनुष्य जब अंतर की अवस्था से निकलकर वाह्य संसार में विचरता है तो माया तुरंत ही उसे अपना शिकार बना लेती है। ऐसा ही एक वर्णन भाई मरदाना जी की अवस्था का है जो श्री गुरु नानक साहिब के साथ धर्म-यात्रा करते हुए कामरूप पहुंचे, जहां वे भूख से व्याकुल हो उठे और गुरु साहिब से नगर में जाने की आज्ञा मांगी, ताकि कुछ खाकर अपनी क्षुधा शांत कर सके। गुरु साहिब ने भाई मरदाना जी के मन के भटकाव को दूर करने के उद्देश्य से उन्हें नगर में जाने की आज्ञा दे दी। इस सम्बंध में भाई संतोख सिंघ जी की कुछ पंक्तियां कमाल की हैं जो भाई मरदाना जी की

ही नहीं उन सारे लोगों की अवस्था का सटीक वर्णन करती हैं जो अपने मन पर नियंत्रण नहीं रख पाते।

जबै मरदाना पुरि मद्धमैं पयाना तब गयो एक थान हित लेनि के अहारिआ।
बैसी चारू नारि, चारु नैन सों निहारि इस, बचन परसपर बिबिध उचारिआ।
एक कहै 'मोरो इह' दूजी कहै 'मीत मोहि' तीजी कहै 'पूरब मैं तुम ते निहारिआ।'
चौथी उठि तातकाल तंतु गेरि ग्रीव मांहि, लीनो करि मेढा, दाम दीन गर डारिआ ॥२८॥

(श्री गुर नानक प्रकाश)

इसके शाब्दिक अर्थ तो ये हैं कि भाई मरदाना जी जब नगर में एक स्थान पर भोजन प्राप्त करने के उद्देश्य से पहुंचे तो वहां चार सुंदर स्त्रियां बैठी हुई थीं जिन्होंने उत्सुक नज़रों से उन्हें देखते ही आपस में विवाद आरंभ कर दिया। एक ने कहा, यह मेरा है, दूसरी स्त्री ने कहा, यह तो मेरा मित्र है, तीसरी स्त्री बोली, इसे तो मैंने सबसे पहले देखा है, जबकि चौथी स्त्री ने पलक झपकते ही भाई मरदाना जी के गले में रस्सी डालकर जादू द्वारा उन्हें पशु बनाकर अपने पास बांधकर रख लिया। ठीक ऐसा ही हाल मनमुख का होता है। वो जैसे ही मन के अधीन होता है क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार उसे भ्रमित करने लग जाते हैं। इनसे मनुष्य बच भी जाये तो काम उसे अपने अधीन कर पशुवत बना देता है। इसका विकल्प गुरु साहिबान ने यही बताया है कि मन को बाड़ लगाकर चारों ओर से सुरक्षित कर लें ताकि उसमें परमात्मा के प्रेम की भरपूर फसल लहलहा सके और ध्यान भीतर ही टिक जाये। परमात्मा के प्रति प्रेम के मापदंड समझाने के लिए सांसारिक प्रतीक का सहारा लिया गया है कि कैसी धारणा से प्रेम किया जाये :

भरता पेखि बिगसै जिउ नारी ॥
तिउ हरि जनु जीवै नामु चितारी ॥१॥
पूत पेखि जिउ जीवत माता ॥
ओति पोति जनु हरि सिउ राता ॥२॥
लोभी अनदु करै पेखि धना ॥
जन चरन कमल सिउ लागो मना ॥३॥
बिसरु नही इकु तिलु दातार ॥
नानक के प्रभ प्रान अधार ॥४॥

(पन्ना १९८)

गुरमुख वो है जो पल भर के लिये भी परमात्मा को विस्मृत नहीं करता और उसके प्रेम को इस तरह अपने जीवन का आधार बना लेता है जैसे वायु प्राणों का आधार है। नारी अपने पति से इतना प्रेम करती है कि उसे देखने मात्र से ही उसका चित्त सुखमय हो जाता है। अपने पति के लिए वह अनेकानेक कष्ट सहकर भी उसकी निकटता पाना चाहती है। मां अपने पुत्र से, वह जैसा भी हो, अंत तक प्रेम करती रहती है, उसे सुखी देखने में अपना सारा जीवन लगा देती है। धन का लोभी धन पाने के लिए कुछ भी कर सकता है। तमाम कष्ट उठाकर भी नारी अपने पति से, मां अपनी संतान से और लोभी धन से प्रेम करता है। इसी तरह परमात्मा से प्रेम तो इन सबसे श्रेष्ठ प्रेम है जिसे पाने के लिए गुरमुख हर कष्ट उठाने को तैयार रहता है, हर त्याग करने को तैयार रहता है। परमात्मा के प्रेम में एक गुरमुख अपना सर्वस्व अर्पण कर देता है :

प्रभ मिलबे कउ प्रीति मनि लागी ॥
पाइ लगउ मोहि करउ बेनती कोऊ संतु मिलै बडभागी ॥१॥रहाउ॥
मनु अरपउ धनु राखउ आगै मन की मति मोहि सगल तिआगी ॥
जो प्रभ की हरि कथा सुनावै अनदिनु फिरउ तिसु पिछै विरागी ॥ *(पन्ना २०४)*

गुरमुख के मन में लगन लग जाती है

परमात्मा से मिलने की। जो कोई परमात्मा की बात भी करता है गुरमुख उसके आगे भी नत्मस्तक होकर उसका संग-साथ पाना चहता है, क्योंकि सदैव परमात्मा की चर्चा उसे भली लगती है। तन-मन-धन सभी का गुमान त्याग कर स्वयं को विनम्र अवस्था में ले आने वाला ही गुरमुख है। कभी भी गुरमुख परमात्मा को विस्मृत नहीं करता और विकारों को कभी भी अपने निकट न आने देने के लिए पूरी तरह सचेत रहता है :

अहिनिसि जागै नीद न सोवै ॥
सो जाणै जिसु वेदन होवै ॥
प्रेम के कान लगे तन भीतरि वैदु कि जाणै कारी जीउ ॥ (पन्ना ९९३)

गुरमुख का प्रमुख लक्षण है कि वह कभी भी अज्ञानता को अपने ऊपर प्रभावी नहीं होने देता। प्रेम की वेदना ही ऐसी है कि वो गुरमुख को कभी भी मन के अधीन नहीं होने देती और वह सदैव प्रेम में विह्वल रहता है। प्रेम के इस प्रभाव को वही जान सकता है जिसे प्रेम के तीर चुभे हों। प्रेम में कुछ भी असंभव नहीं होता, प्रेम में कुछ भी सहन हो जाता है, ताकि प्रेम बना रहे :

रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल कमलेहि ॥

लहरी नालि पछाड़ीऐ भी विगसै असनेहि ॥
जल महि जीअ उपाइ कै बिनु जल मरणु तिनेहि ॥१॥
मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर ॥
गुरमुखि अंतरि रवि रहिआ बखसे भगति भंडार ॥ (पन्ना ५९)

गुरमुख का जीवन परमात्मा के प्रेम में ही विकसित होता है और इसी में परिपूर्ण होता है। वह कष्ट सहता है किंतु उस प्रेम से विरत नहीं होता। जैसे कमल का फूल जल में खिलता है और लहरों की तमाम पछाड़ खाने के बाद भी जल में ही बना रहता है, उससे दूर नहीं जाता, इसी तरह का प्रेम परमात्मा के प्रति होना चाहिए। गुरमुख तब परमात्मा का प्रेम पा लेने का दावा कर सकता है जब वह सारे विकारों से दूर हो गया हो :

सुनहु लोका मै प्रेम रसु पाइआ ॥
दुरजन मारे वैरी संघारे सतिगुरि मो कउ हरि नामु दिवाइआ ॥१॥रहाउ॥
प्रथमे तिआगी हउमै प्रीति ॥
दुतीआ तिआगी लोगा रीति ॥
त्रै गुण तिआगि दुरजन मीत समाने ॥
तुरीआ गुणु मिलि साध पछाने ॥२॥ (पन्ना ३७०)

गुरमुख वो है जो पहले बुरी संगत का त्याग करता है और अपने हित-अहित को पहचान लेता है। वह अहंकार का त्याग कर देता है। वह समाज में प्रचलित ढोंग, आडंबर, दिखावे से किनारा कर लेता है। वह वैर-विरोध का भाव छोड़कर समदृष्टि अपना लेता है और सारे संसार में परमात्मा के स्वरूप को ही देखने लगता है। गुरमुख सहज अवस्था को प्राप्त कर लेता है। सहज अवस्था में ही वह परमात्मा-प्रेम के रस का अधिकारी बनता है। दुर्जन को मारना और वैरी का संहार करना एक ऐसा कठिन कार्य है जिसके लिए सोने की तरह तपने, हीरे की तरह तराशे जाने की आवश्यकता होती है। अहंकार बड़े-बड़े त्यागी-साधक भी नहीं त्याग पाये। गुरमुख इस राह और दुविधा को पहचान लेता है। गुरमुख सत्य के मार्ग को जानता ही नहीं विचार करके भी देखता है :

गुरमुखि नामि रते से उधरे गुर का सबदु वीचारि ॥
जीवन मुकति हरि नामु धिआइआ हरि राखिआ उरि धारि ॥ (पन्ना १२५९)

ख़बरनामा

श्री अमृतसर के श्री गुरु रामदास रोटरी कैंसर अस्पताल में लीनियर एक्सीलेटर मशीन स्थापित की जाएगी

श्री अमृतसर : १२ जून : श्री गुरु रामदास इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसज़ एण्ड रीसर्च, वल्ला (श्री अमृतसर) में चल रहे श्री गुरु रामदास रोटरी कैंसर अस्पताल में लगभग १५ करोड़ रुपए की लागत वाली लीनियर एक्सीलेटर मशीन शीघ्र ही लगाई जाएगी, जिससे यह अस्पताल कैंसर का इलाज करने वाली उत्तरी भारत की चुनिंदा संस्थाओं की कतार में खड़ा हो जाएगा। ये शब्द श्री गुरु रामदास चेरीटेबल अस्पताल ट्रस्ट के चेयरमैन तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने इस खोज संस्था में कैंसर सम्बंधी जानकारी विषय पर आयोजित वर्कशाप की आरंभता करने के पश्चात् लीनियर एक्सीलेटर मशीन के लिए लगभग एक करोड़ रुपए की लागत से तैयार किए जा रहे ट्रिपल एनर्जी बंकर के शिलान्यास अवसर पर पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहे।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि ट्रिपल एनर्जी बंकर की प्रत्येक दीवार की चौड़ाई लगभग २.५ मीटर और इसकी ऊंचाई १० फुट होगी। इसकी छत की मोटाई भी २.५ मीटर होगी। यह बंकर एक वर्ष के अंदर बनकर तैयार हो जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके तैयार होने से लीनियर एक्सीलेटर मशीन की रेडीएशन किरणें बाहर नहीं जा सकेंगी। इस मशीन के चालू होने से कैंसर के मरीजों की रेडियो थेरेपी करते समय उन पर पड़ने वाले विपरीत प्रभाव को काफी कम किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि अब तक रेडियो थेरेपी के द्वारा मरीज की कैंसर (बीमारी) वाली जगह पर जो किरणें दी जाती हैं वे शरीर के अन्य हिस्सों पर भी बुरा प्रभाव डालती हैं, परंतु लीनियर एक्सीलेटर मशीन द्वारा रेडिएशन किरणों का मरीज की कैंसर वाली जगह पर ही असर होगा।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने बताया कि श्री गुरु रामदास रोटरी कैंसर अस्पताल कैंसर के मरीजों के लिए बहुत सस्ती तथा बढ़िया स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवा रहा है। पंजाब में बड़े स्तर पर पांव पासार चुकी घातक बीमारी कैंसर के साथ लड़ने के लिए श्री गुरु रामदास चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा लीनियर एक्सीलेटर मशीन आयात करने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने बताया कि पहले से ही लागत मूल्य पर स्वास्थ्य सुविधाएं दे रहे इस अस्पताल में आवश्यक फंड की कमी है। उन्होंने कहा कि ट्रस्ट के पास पहले से ही आय कर विधेयक-१९६१ की धारा ३५ ए सी. के तहत १०० प्रतिशत कर-छूट मौजूद है और फोरेन कंट्रीब्यूशन रेगुलेशन एक्ट १९७६ के तहत भी छूट लेने की कार्यवाही चल रही है। उन्होंने बताया कि इस क्षेत्र में पंजाब सरकार तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा भी वित्त के अनुसार योगदान दिया जा रहा है। उन्होंने देश-विदेश के दानी सज्जनों से अपील की कि वे इस नामुराद बीमारी के इलाज के लिए अपने वित्त के अनुसार अवश्य योगदान दें।

नामुराद बीमारी कैंसर के विषय पर आयोजित वर्कशाप में डॉ. श्री गंगाधरन, डॉ. एम. एन. बंदोपाध्याय, डॉ. ए नंदाकुमार, डॉ. एस. एस. शेरगिल, डॉ. मनजीत सिंघ, डॉ. गीता शर्मा, डॉ. मीना संदन के अलावा मेडिकल साइंस से सम्बंधित भारी संख्या में चिकित्सक तथा स. रजिंदर सिंघ महिता सदस्य-ट्रस्ट, स. जोगिंदर सिंघ सदस्य सचिव, डॉ. ए. पी.

सिंघ अतिरिक्त सचिव आदि उपस्थित थे।

श्री गुरु रामदास जी लंगर हाल में आर. ओ. सिस्टम का उद्‌घाटन

श्री अमृतसर : १२ जून : श्री अमृतसर के श्री हरिमंदर साहिब में स्थित श्री गुरु रामदास जी लंगर हाल में एम. आर. मोरार्का संस्था, मुंबई द्वारा सेवा में लगाए गए वाटर प्यूरीफाई (आर. ओ.) सिस्टम का जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने उद्‌घाटन किया। उद्‌घाटन रस्म से पूर्व अकाल पुरख के चरणों में इस सिस्टम की चढ़दी कला के लिए अरदास की गई। जत्थेदार अवतार सिंघ ने एम. आर. मोरार्का संस्था के सलाहकार श्री आनंद कुमार चड्‌डा, अतिरिक्त जनरल मैनेजर श्री अरुण कुमार अग्रवाल तथा श्री सुनील कुमार को सिरोपा देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर श्री आनंद कुमार चड्‌डा तथा श्री अरुण कुमार अग्रवाल ने बताया कि यह आर. ओ. सिस्टम एक दिन में लगभग दो लाख लीटर पानी शुद्ध करेगा और इस सिस्टम पर लगभग १५ लाख रुपए खर्चा आया है।

उत्तर प्रदेश की तंबाकू बनाने वाली कंपनी ने मांगी माफी
श्री अकाल तख़्त साहिब से सख़्त ताड़ना

श्री अमृतसर : १२ जुलाई : उत्तर प्रदेश के राजपुर चित्रकूट शहर में स्थित कुमार इंटरप्राइजेज नामक तंबाकू बनाने वाली कंपनी द्वारा तंबाकू के पाऊच का नाम 'ज्ञानी पान सामग्री' रखकर उस पर श्री गुरु नानक देव जी का चित्र छापने की हमाकत को लेकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार के पास जताए गए रोष के बाद उक्त तंबाकू कंपनी ने सिक्ख जगत से माफी मांग ली है।

कंपनी के अधिकारी सत्य नारायण केशरवानी ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष तथा श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार को लिखे पत्र में कहा है कि तंबाकू के पाऊच का उक्त नाम व चित्र छापना उन्होंने सदा के लिए बंद कर दिया है और भविष्य में भी इस नाम व चित्र का इस्तेमाल नहीं करेंगे। केशरवानी ने लिखा है कि मैं सिक्खों के गुरु साहिबान का सम्मान करता हूं और उनका आशीर्वाद चाहता हूं तथा अनजाने में हुई गलती के लिए मैं माफी मांगता हूं।

श्री अकाल तख़्त साहिब पर हुई पांच सिंघ साहिबान की एकत्रता में उक्त कंपनी के अधिकारी द्वारा भेजे गए माफीनामे पर कार्यवाही करते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने उक्त कंपनी को ऐसी गलती दोबारा न किए जाने की सख़्त ताड़ना की है।

वर्णनयोग्य है कि तंबाकू के पाऊच सम्बंधी जानकारी मिलने पर जत्थेदार अवतार सिंघ ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव को पत्र लिखकर इस सम्बंधी तुरंत सख़्त कार्यवाही करने के लिए कहा था तथा उक्त तंबाकू कंपनी को बंद करने की मांग की थी।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०८-२०१२